क्योंकि–सम्यक्त्व किसी–मत में–भेषमें–किरियामें या ढोंग में नहीं है परन्तू-एक यथार्थ श्रद्धानमें है. जो जीवादि पदार्थोंका निश्चयिक व्यवहारिक द्रव्यादि सामाग्रीके प्राप्ति के योग्य–यथार्थ (जेसाहि वैसाही) श्रद्धान (जान पने युक्त परितीत) करतेहै वोही सच्चे सम्यक्त्वी कहलातेहैं. कि जिनोंकी आत्मा रागद्वेष विषय कषाय मत मतान्तरके झगडेसे विरक्त हो कृष्ण नरेन्द्रवत एकांत गुण संग्रह मेंही तत्पर रहती हैं.

और "धनीपर धाडे पडतेहैं" इस कहवत मुजबही ऐसेजो सम्यक्त्व रत्न रूप महा निधानके धारक होतेहैं, उनके माल का हरण करने नाश करने विना कारणही मिथ्यात्वीयों प्रयत्न करतेहैं. उनका सर्व स्वय हरण कर मरणान्ततक पहोंचा देतेहैं, परन्तू जिनोंने एहिक सुख सामग्रीको क्षीण भंगुर विनश्वर जानलीहै, वो ऐसे परम सुखदायि सम्यक्त्वका नाश करनाता दूर रहा परन्तु किंचित मात्र वट्टाभी नहीं लगने देतेहैं. इन गुणोंका हूबहु स्वरूप इस "सम्यक्त्वोत्सव" रासमें जयसेण विजयसेणके कथनकर दर्शाया गयाहै. इसके दो विभागोंमें प्रथम भागमें तो पुण्य परतापके दर्शाने वाली धर्म मिश्रित कौतक रूप कथाकी कथनीहै. और दुसरे भाग में-सम्यक्त्वी के लक्षण आचरण और उनको सम्यक्त्व धर्मसे चलित करने मिथ्यात्वीयों कैसी योजना प्रयत्न करतेहैं, उससे सम्यक्त्वियों अपने प्राप्त र-

[illegible] भाऊजी श्री पूरनमलजी भगवानजी नीमगा (किशोर छावनी)

[illegible]—भाऊजी श्री बलभद्रमलजी भगीरथ करीमराने (हैद्राबाद)

[illegible] भाऊजी श्री जीवनजी पुरनमलजी, बन्दर-गोरापुर (हैद्राबाद)

[illegible] भाऊजी श्री [illegible]रामजी नांदेड कुचेरा-मारवाड वाले (हैद्राबाद)

[illegible] भाऊजी श्री पूनमचंदजी बीरमगा-किशोरकी छावणी.

[illegible]—भाऊजी श्री भगवानदासजी रामचंदजी,-पारोखी. (हैद्राबाद)

[illegible] भाऊजी श्री दौलतरामजी मोतीलालजी मीठे (हैद्राबाद)

[illegible]—भाऊजी श्री मोहनलालजी चन्दूलालजी,-पारोखी, (हैद्राबाद)

[illegible] भाऊजी श्री दौलतरामजी केशरीमलजी नवदद,-पादगांवी-(हैद्राबाद)

[illegible] भाऊजी श्री झाकृणजी शिवनारायणजी. भेरोदयाले (हैद्राबाद)

इन सद्गृहस्थोंकी तरफ से यह ग्रन्थ अमूल्य भेट कर करतज्ञता हुइ समझताहूं.

कुलक्य पारायणता का इच्छुक

राजाबहादुर लाला मलदेव महाराजी ज्वाला प्रसाद जौहरी.

(दक्षिण) हैद्राबाद चार्कमान. वीरान्द २४२१ दीपवाली.

		भम	०
		पेंहु प्यारे	पेहुं मैं थारे
		तणी	तणो
		पामुस्यु	पामस्यु
		लण	लग
		वंह	कहे
		ननुना	ननुजा
		मग	ममा
		पृष्ठ	पृष्ठे
		भगी	भणी
		नगद	नणद
		विदरा	विद्या
		अपणु	अपणो
		कर	कहे
		तज	तजे
		मगन	गगन
		पुगन्द्रिया	पुगाऩ्निपा
७७	२	मेमांश्रुत	नयनां श्रुत
७८	४	मर्पे स्यन्द	हर्षानन्द
७९	९	पाछे	थाचे पाछे
८०	१	आवा	आया
,,	८	आदि सो	आरीसो
,,	,,	नम	नाम
,,	८	दीपे	दीपे
,,	१२	युक्ति	गुक्ति
८३	२	वहां	यहां
८४	८	अजा जे	अज्ञाने
८८	११	मेहल	०
८९	२	भंकीर्णा	संकीर्ण
९०	९	थाये	थारे
९२	८	कयो	वर्यां
९३	,,	माहेरो	मांहेरो
,,	१०	॥४॥	०
९४	५	मान	माने

	कर गय	फरराय	११५	१२	स्यात	स्थान
	मच्यग्थी	मच्यवनारथी	१२१	६	आशा	आज्ञा
	आय	आया	१२८	६	द्रुडडाड्	द्रुडाड्
	येन्वपन	मेनरपत	१३१	२	यो जतो	आजतो
	तोपीया	तोपीया	,,	५	॥ठेर॥	॥आंकडी॥
	पणीट	मच्यस्त	,,	६	नेठा	नेडा
	नय	०	१३२	१	कहो	कहां
	नयवीर	नयवीर	,,	२	करसो	फरसो
	मंच हुवा	मंत हुवा	१३३	१	आयो	आपो
	नक्र	नाक	,,	६	यह	०
	परमानन्दो	परमानन्दी	१३४	१	॥१॥१॥	॥१॥
	शंठो	रोठो	,,	२	पाय	पाप
	नाक	ताको	,,	६	पाश्चर्य	आश्चर्य
	लाय	ल्याया	,,	७	द्रुड	०
	मानी	माचो	,,	८	के	०
	भगाड	भरमाड्	१३५	,,	मिती	मिली
	इहायो	इहापो	,,	,,	रेख्या	देख्या

१३६	१०	यंती	द्रोली	"	११	हंभी	हंभो
१३[illegible]	३	वक	वक्त	"	१२	मुझसे	मुझसे
"	६	घणा	घणी	१४५	८	यर	यह
	[illegible]	गणी	रागी	१४८	११	यतातुं	बनाऊं
१[illegible]	[illegible]	मठ गातु	मेंटगाऊं	१४९	१०	राहनी	एहुनी
	१	क्रा	का	१६२	१२	रोप	दोष
१[illegible]	[illegible]	वेदाश्चर्य	वेदाश्चर्य	१६३	१०	रक	करूं
	७	ग्रद	द्रढ	१६५	८	तू	०
	७	गह	रह	१६८	६	शाख	शक्ति
	[illegible]	मुग	मनुष्य	"	८	भीगवे	भोगवे
[illegible]	[illegible]	चतारती	चेतावना	१६९	८	परिती	परिणति
	१२	हाग	हम	१७०	६	पाय	पाया
१[illegible]	३	यिमोग	विगोय	१७१	८	हुक्कर	दुक्कर
१[illegible]	६	देग	देखे	"	१०	और	०
	०	स्थानक	स्थानके	१७२	६	अरोहित	रोहित
[illegible]	[illegible]	नाशा	नाश	१७६	९	होइ	होद्
१[illegible]	१०	गजका	रातका	१७७	२	गया	गया
"		गयन	रागको				

अमोल ऋषि.

[illegible] ॥ ढाल ९ वीं । जादुपति जीत्या जी । ये देशी ॥ समकित शु-
[illegible] दर निवार । सम० जो वांछित सुख दातार । सम ॥ टेर ॥
[illegible] म यह । जंबु नामें लघु द्वीप ॥ शोभे क्षेत्र गीरि नदी मे ।
[illegible] सम ॥ १ ॥ भरत क्षेत्र कर्म भूमी को है । पांच सो जोयण मांय ।
[illegible] पट ६ खंड मे दीपाय । सम ॥ २ ॥ माढ़े पश्चिम देश श्राव
[illegible] सुखकार । नन्दीपुर नगर शिरोमणी है । विश्वानन्द दातार ॥
[illegible] मन्दिर घरों मे । शोभे स्वर्ग समान । धन धान्य आदि पूर्ण
[illegible] स्थान । सम ॥ ४ ॥ स्वचक्री परचक्री को जी । डर नहीं
[illegible] अन्यायी जोनां । मिले न नगर मझार । सम ॥ ५ ॥ दुर्भिक्ष
[illegible] जी । दूर रहे सदा काल । धर्म पुण्य विद्या चली जी । चमे है
[illegible] सम ॥ ६ ॥ धर्म सिंह नाम नृपति जी । रूप तेज इन्द्र समान ।
[illegible] धर्मो गर्ली । और नीम को भान । सम ॥ ७ ॥ पुत्र पर पाले परजा



[illegible] । [illegible] मांडलिक माता पात । मम ॥ १६ ॥ चतुष्पद नृप सिंह [illegible] नन्दन होय । शुरवीर अरी गंजना । मज्जन धर्मी मन मोय ॥ [illegible] मम ॥ [illegible] ॥ [illegible] कहे महीपति । विज्ञानी वयण प्रमाण । पीडियों लग स्वा- [illegible] राजान । मम ॥ १८ ॥ खुशी हुई पण्डित गया । नृप [illegible] गर्भ पाले दोष टालती । रहा नित्यानन्द वृताय । मम ॥ [illegible] पमाय से । राज लक्ष्मी वृद्धि पाय । तीन मांस यों वीतिया । [illegible] प्रगटाय । मम ॥ २० ॥ पुरुष वेश शस्त्र सजी । करी सेना संग [illegible] रनने विषे । शरमी अराति धरे ते चार । मम ॥ २१ ॥ अंग र- [illegible] नृप जाणा डोहल का भेद । दी आज्ञा शीघ्र पूरिये । जो उपनी [illegible] मम ॥ [illegible] ॥ डोहलो पूर्यो हर्ष्यां सहू । जाण्या उदर में पुण्य हाल । [illegible] धर्मातनो लवे । ये पभणी पहिली ढाल । मम ॥ २३ ॥ दुहा ॥ सु- [illegible] नित्य [illegible] चउदह (१४) प्रकारे दान । धर्मातनो करनी सदा । धर्मात्मा को

मदा रहे सुख नालो । मोचो जगजन देस ॥ इपं ॥१॥ श्रीमति नामे हो राणी नीमरी । दुर्मति वंत मदाय ॥ इपं ॥ रूपे मोहामणी हो गुण अलखामणी । कपट दपट मे रमाय ॥ इपं ॥ २ ॥ निज २ संचित हो पुण्य प्रमाण से । सुख, यश, धन जन पाय ॥ इ० ॥ सर्व मिटावे हो देखी सुख पारके । पुण्य विना कैसे सो थाय ॥ इ० ॥ ३ ॥ एकदिन सूती हो सुखे निज सेज में । स्वप्न लियो सुखदाय । शुभा भराणी हो माणी राणी तिण विषे । विषम नीवेड्योजी न्याय ॥ इपं ॥ ४ ॥ यों देख हर्षि हो जागी तत्क्षण । प्रीतम पास जो आय । मधुर वचन से हो नृप को जगाविया । स्वप्न विरतन जणाय ॥ इपं ॥ ५ ॥ सुणी आनन्दि हो राजाजी यों कहे । पुत्र होवेगा गुणवन्त । न्याय विशारद हो मजलस रंजणों । प्रजा तात महन्त ॥ इपं ॥ ६ ॥ श्रीमति हर्षी हो आई निज स्थान के । करे गर्भ प्रतिपाल । सुखे २ वीत्या हो मास सवा नौ तदा । जन्म्यों पुण्यवन्त बाल ॥ इपं ॥ ७ ॥ जैसे पंक से हो कमलज नीपजे । मृत्तिका में जैसे हेम ॥ खार समुद्र में हो मुक्ताफल हुवे । ए पुण्यात्म

हुवा नेम ॥ हर्ष ॥ ८ ॥ परिजन जीमाड़ हो स्थापे नामने । गुण निष्पन्न 'न्याय-
सागर' ॥ चंपकलता हो सुकुमाल गर्भा परे । वृद्धि होवे हर्ष सेण ॥ हर्ष ॥ ९ ॥ विद्यालय में
हो पढ़ाई सर्वा कला । धर्म ज्ञान सत्संग ॥ प्रवीन भया सो हो स्वल्प ही कालमें ।
करे क्रिडा उछरंग ॥ हर्ष ॥ १० ॥ जय विजयने हो साथ रमे सदा । लघु जाणी ते
धरे प्रेम ॥ परन्तु पुण्याई हो जुदी २ नरतणी । पावे उतनो ही क्षेम ॥ हर्ष ॥ ११ ॥
जय विजय का हो पुण्य प्रबल्ल अति । ते लगे दाम समान ॥ देखी श्रिमति हो
चित्त में प्रज्वले । आर्त रौद्र ध्यावे ध्यान ॥ हर्ष ॥ १२ ॥ राजाधिपती हो होसी
दोनों बन्धुवा । मुझ पुत्र जन्म दुःख पाय ॥ कोइ उपाये हो हणाउं दोनों भणी ।
तो मुझ पुत्र सुखी थाय ॥ हर्ष ॥ १३ ॥ छल छिद्र बहु विध हो देखे दोहका । करे
कोइ मारण उपाय ॥ पुण्य बली जह केहो जय विजय घणा । लागे नहीं एकी
दाव ॥ हर्ष ॥ १४ ॥ चिन्तातुरी हो हुई श्रीमति घणी । अन्नादिक नहीं भाय ॥
निद्रा शशार्णा हो विशार्णा सदा रहे । नयने नीर वहाय ॥ हर्ष ॥ १५ ॥ एकदा

आइ हो एक जोगणी तिहां । जाणेते विद्या अनेक ॥ श्रीमति पेखी हो लखी चित लक्षिणं । बोले मा धरती विवेक ॥ इर्ष ॥ १६ ॥ विद्या बल से हो जाणी में आपके । चित में चिन्ता है पूर ॥ मो प्रकाशो हो म्हारे सन्मुखे । करुं क्षिण-में दुःख दूर ॥ इर्ष ॥ १७ ॥ इन्द्रवश आणू हो दीपक रवी करुं । हरु क्षिणे शत्रु का प्राण ॥ सत्य सर्वी मानो हो कहनी माहरी । करुं तुम कह्या प्रमाण ॥ इर्ष ॥ ॥ १८ ॥ निशंक होइ हो कहो मुझ मन तणी । तुम हम बीच भगवान ॥ तुम दुःख देखी हो मुझ मन दुःख धरे । दी है तिणथी जबान ॥ इर्ष ॥ १९ ॥ गुणी-जन तुमसा हो मिलीया हम भणी । तवही कही मन वात ॥ सभा न रखा हो हम जगमें कोइ की । इस राणी ने प्रचात ॥ इर्ष ॥ २० ॥ इच्छित मिलीयो हो राणी ने आयने । ढाल दूसरी मांय ॥ ऋषि अमोल कहो पुण्य प्रतापसे । वि-घन सर्वी विरलाय ॥ इर्ष ॥ २१ ॥ दोहा ॥ श्रीमति हर्षी अति । सुणी जोगण ना वेण । क्षुधित भोजन लइ हुवे । त्यों फूल्या राणी नेण ॥ १ ॥ करामातण

जोगण भणी । जाणी अति हांस्यार ॥ भाग्ये आइ माहरे । हिवे चिंतित करु पार ॥ २ ॥ सन्मानी घणी जोगणी । आसन ऊंच बेठाय । अन्न वसन इच्छित देह । माता तस उपजाय ॥ ३ ॥ नरमी कहे थें ज्ञानी हो । जागयो महारो दुःख ॥ जिम बोल्या तिमही करी । आं मुझने सुख ॥ ४ ॥ दुःख सब दाख्यो मन तणो । सुणी जोगणी ह्याय ॥ किंचित फिकर न कीजिये । यह तो सहज उपाय ॥ ५ ॥

ढाल ३ री ॥ वीर वखाने अन्यदा समय ॥ ये देशी ॥ श्रीमति हर्षित हुई । जन्म को जाणी जोगण कृपापात्र ॥ हो माइ ॥ जोगण पण हर्षित हुइ । जन्म को आश्रय चहात ॥ हो माइ श्री ॥ १ ॥ कहे गणीजी देखियं । थोड़ा ही दिन के मांय ॥ हो बाइ ॥ मारु दोनों वन्धवा । करुं मैं गुप्त उपाय ॥ हो माइ श्री ॥ २ ॥ एकान्त जाय ऐसा भणी । दोनों तन सुखकार ॥ हो माइ ॥ और सामग्री सब दोयी । विद्या साधन तोय हो भाइ । श्री ॥ ३ ॥ जोगणी आराधन जोगण क्यों देवी प्रत्यक्ष होय हो भाई । क्यों चिंतारी मुझ भणी । कहे

कायें तर्ज सोग हो बाई । श्री ॥ ४ ॥ नमन करी कर जोड़ के । जोगण कर अ-
रदास हो माई । मुभ मित्राणी श्रीमति तणी । पूगो शीघ्र तुम आस हो माई ।
श्री ॥ ५ ॥ मन फेरी करी । जय विजय की घात कराय हो माई । राज
मिल [illegible] । एमो करो उपाय हो माई । श्री ॥ ६ ॥ ज्वाला भणे इण
कामें [illegible] दुःख पाय हो बाई । कुमर दोनों महा पुण्यवन्त है । मायां कि-
[illegible] हो बाई । श्री ॥ ७ ॥ दुःख सुख रूप तन होवसी । तोपण रास्त्रण
मन हो बाई । उपाय रचूं एमो हिवे । होय श्रीमति चिन्तन हो बाई । श्री ॥
– ॥ इम [illegible] गई । जोगण राणी पास आय हो भाई । कहे चिन्तित
[illegible] । सिद्ध हुवो कियो उपाय हो बाई । श्री ॥ ६ ॥ दोनों हर्षी सुख
[illegible] मांय हो भाई । कहे नृप को मायथ हुवो । भ्याने धरो मुझ
[illegible] हो भाई । श्री ॥ १० ॥ में कुलदेवी तुम तणी । चाहूं कुल को क्षेम हो
भाई । [illegible] जाणूं कोइ । तो चेताऊं धर प्रेम हो भाई । श्री ॥ ११ ॥

जय विजय तुम तनुज हो। होसी तुमको दुःख कार हो भाई। तिण कारण दोनों
मर्णी। शीघ्र न्हखावो मार हो भाई। श्री ॥ १२ वैरी श्रोर व्याधी श्रंकूर ने।
करनो तत्क्षण नाश हो भाई। तो श्रागल वधे नहीं। यह नीति वचन [illegible]
हो भाई। श्री ॥ १३ ॥ सत्य बात ये मान जे। करजे जो हित चराग [illegible]
नहीं वश फिर है मोहरो। यों कही देवी जाय हो भाई। श्री ॥ १४ ॥ [illegible] ॥
नव हो भर्तार। चिन्ता व्यापी श्रपार हो भाई। श्रसंभव बात कैसे बणे। देव मि-
थ्या न कर उचार हो भाई। श्री ॥ १५ ॥ कहे श्रीमति ने जगाय ने। स्वप्न तणो
चिन्तंत हो भाई। श्रीमति कहे सुभ ने यदा। ये ही स्वप्न श्रावंत हो राजा। श्री
॥ १६ ॥ नृप कहे श्रसंभव बात ये। दोनों कुंवर विनयवंत हो राणी। कुल भूषण
दूषण बिना। किम सुभ दुःख करंत हो राणी। श्री ॥ १७ ॥ राणी कहे श्रहो
नाथ जी। लोभ पाप को बाप हो राजा। होती श्राई श्रनादि से। जाणो क्यों
शास्त्र ने श्राप हो राजा। श्री ॥ १८ ॥ स्नेह सगपण लोभी न गिणे। राज

लक्ष्मी के काज हो राजा । केई मर्या मरसी केई । जो गफलत में रह्या हो राजा । श्री ॥ १९ ॥ सन्देह नहीं अम्बा वयण में । चेता गई हित काम हो राजा । कालिज मुझ धूजी रह्यो । कुशल रखो अहो राम हो राजा । श्री ॥ २० ॥ सावध रहजो नाथजी । करो योग्य शीघ्र उपाय हो राज । तृतिय ढाल अमोलक भणी । राणी का चिन्तित थाय हो भाई । श्री ॥ २१ ॥ दोहा ॥ राणी मुख का वयण सुण । नृपति अति विस्माय । कूल भूषण मुझ नानड्या । किण विध मार्या जाय । ॥ १ ॥ विष वृक्ष हाथे लगाविया । ते पिण नहीं कटाय। कल्प वृक्ष मम नन्दन दो । विन गुन्हे किम मराय ॥ २ ॥ जन्म से आज दिवस लग कयों न कोई अन्याय । आण न उल्लंघी माहेरी । ते किम होवे दुःख दाय। ३ ॥ कदा राणी मांक म्हार मे । बोले मिथ्या वेण । पण देवी क्यों मिथ्या लवे । आश्चर्य अधिक एकेण ॥ ४ ॥ यों चिन्ता सागर विषे । राय गोता रह्या खाय । खाड कूप के मध्य रह्या । सुझे ना कोई उपाय ॥ ५ ॥ ढाल ४ थी ॥ चेदरवी से

नीच न लाज न आय हो
मन वस्यो ॥ यह देख्यो ॥ उत्तम अपमान सहे नहीं । नीच न लाज न आय हो
लाल । केशरी जावे एक वचन मे । श्वान धुकर्या वहु आय हो लाल ॥ उत्तम ॥ १ ॥
निश्चय मन महापनि कीयो । मारण में नहीं मार हो लाल । वस्यवृत्ति म्हारे
करूं । ज्यों न होवे कोइ विगाड हो लाल ॥ उ० ॥ २ ॥ निजर केदी कर के रखूं ।
वाहिर न जाने पाय हो लाल । विना चेतायां विन हुकम मे । म्हारे पास न आय
हो लाल ॥ उ० ॥ ३ ॥ फिर किम दुःख देशी मुझ भणी । जचीयो एही उपाय
हो लाल ॥ वोलायो दरवान ने । शक हुकम यों फरमाय हो लाल ॥ उ० ॥
कुमरां ने मेरे हुकम विना । जाने न देना वाहर हो लाल ॥ तेसे न आवे मेरे कने ।
वान मन करना जाहिर हो लाल ॥ उ ॥ ५ ॥ यों पुक्तो वन्दोवस्त करी । निश्चिन्त
रहे राजान हो लाल । प्राते तात चरण वन्दवा । कुंवर आया दोडी स्थान हो
लाल ॥ उ ॥ ६ ॥ दरवान रोक्या तत्क्षण । कहे पूछ आवूं हणवार हो लाल ।
फिर आप अन्दर पधारजो । हुकम कियो दरवार हो लाल ॥ उ ७ ॥ खेदाश्चर्य

अति गइया । दोनों कुमर तत्काल हो लाल । किम आजहीं रोस्या जावता । हुवा
कांड हवाल हो लाल ॥ उ० ॥ ८ ॥ आपण जाण अजाण में । कीनो नहीं को
कमर हो लाल । बिना गुन्हें आज अपणने । नृपति राख्या दूर हो लाल ॥ उ० ॥
९ ॥ अपमान स्थान क्षीण एकही । रहणा जुगतो नाय हो लाल ॥ पुण्यें आया
राजकुल विषे । आगे भी पुण्य संग थाय हो लाल ॥ उ० ॥ १० ॥ अटन किया
अन्य देश में । भाग्य परिक्षा होय हो लाल । चातुरी वल बुद्धि वढे । यों चिन्तव
ते दोय हो लाल ॥ उ० ॥ ११ ॥ परवश पणे इहां रेहवो । यह तो मोटो दुःख हो
लाल । परदेशे फिर आपण हिवा । भोगां स्वेच्छा सो सुख हो लाल ॥ उ० ॥ १२ ॥
निश्चय अपमान सही करी । पड्या रहे तेही ठाम हो लाल । निति वचन ए है
खरो । सुज्ञ तजी लहे आराम हो लाल ॥ उ ॥ १३ ॥ ❀ श्लोक ॥ त्रय स्थान
न मुञ्चन्ते । काका का पुरुषा मृगा । अपमाने त्रयो यांति । सिंह सत्पुरुषा गजाः
॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ इम सोची साहस धरी । आया मेहल के द्वार हो लाल ।

माचव करण पिना भर्णा । श्लोक रचा तेही वार हो लाल ॥ उ० ॥ १४ ॥ ❀

॥ श्लोक ॥ नृन वलय महगं वृथंवं । ममं प्रमाणं निखिलान येहम । गुरूव घस्ताद [illegible] कृशान । [illegible] न कुत्रहपतनथाश्च ॥ १ ॥ रत्नानि रत्ना करमां वमंस्या । [illegible] नहुनी । हानिस्तवं वेह गुणेस्त्विमानी ।"भाविन भूवल्लभ मौलि [illegible] ॥ २ ॥ [illegible] किन्तु कस्या । प्यन्यस्य यः चोभ करस्तवापि । गु- [illegible] थोम्न । नेषां गुणैः स्वैर्महिम प्रवृत्ति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ अस्यार्थ [illegible] ॥ [illegible] मानतुं । मं करूं सब का तोल हो लाल । ऊंच नीच [illegible] तुम्ह हामी मोल हो लाल ॥ उ० ॥ १५ ॥ रत्नाकर रत्न [illegible] । मन कर मन अभिमान हो लाल । वे रत्न रूठा जो तुम्ह थकी । तो [illegible] अपमान हो लाल ॥ उ० ॥ १६ ॥ पण दोप नहीं यह तुम्ह तणो । [illegible] चोभ हो लाल ॥ गुणी गुण सर्व स्थान पामसी । वधे रत्न की शोभ हो लाल ॥ उ० ॥ १७ ॥ यों कथो तीनों श्लोक को । पत्र चेंटायो द्वार हो

लाल ॥ सुरत्व धरसिंह सारखा । चले दोनों कुमार हो लाल ॥ उ० ॥ १८ ॥ शकुन श्रेयकार तव भया । ऋद्धि सिद्धी दातार हो लाल ॥ समझा हर्षाया घणा । सीख्या कला के मझार हो लाल ॥ उ० ॥ १९ ॥ निश्चयवादी क्षत्रि कुलीं । उर सोच नहीं को लगार हो लाल ॥ विश्वास्या सुशकुन से । चलिया उत्सहा अपार हो लाल ॥ उ ॥ २० ॥ पुण्यात्म पगले पगले । पावे सुख विशाल हो लाल । ऋषि अमोल ने यह कही । रसीली चौथी ढाल हो लाल ॥ उ० ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ जामान्तर नरपति तदा । संभार्या कुमार । वोलाया मिलिया नहीं । तव भय पायो अपार ॥ १ ॥ रखे किहां ही गुप्त रही । करे अ-क्षिन्तो घात । ढूंढावे अति खंत से । द्वारपाल तव आत ॥ २ ॥ द्वार पत्र जे लगावियो । कहा सहु समाचार । नृप सामंत साथे लही । तत्क्षिण आया द्वार ॥ ३ ॥ पढ़िया श्लोक तिहूं प्रकट तहां । अर्थ समझा सव भूप । परसंस्ये खुल्ले मुखे । हाहा बुद्धि अनूप ॥ ४ ॥ चिन्ते नृपति श्रेय भयो । सहजे टलियो पाप ।

में भी यहां निश्चिन्त रहू । तेभी न पाया त्रास ॥ ५ ॥ दोनों कुमर की मात सुण । दुःख ते पाइ अपार । श्रीमति हर्षि घणी । करण पुत्र सिरदार ॥ ६ ॥ चिन्तित न हुवे काइ को । होवे जो होण हार । श्रोताजन आगल सुणो । जय विजय अधिकार ॥ ७ ॥ ® ॥ ढाल ५ मी ॥ वालुडा तूं संग न जाजेरे । पाछो घर वेगो आजेरे ॥ यह चाल ॥ पुण्य फल भव्य जन जोजो जी । पुण्य करवा उत्सुक होजो जी ॥ टेर ॥ जिम २ कुमर आगल वधे । तिम २ शकुन श्रेय थाय । चिन्ते इण वन ने विषे । महा लाभ मिले किस्यो आय ॥ पु० ॥ १ ॥ आगल विषम रम्य वन में । शीघ्र जावे देखत विनोद । मध्याने क्षुधित भया । लियो विश्राम धरी प्रमोद ॥ पुण्य ॥ २ ॥ मिष्ट निरोग फल भोगव्या । पीयो शीतल झरणा को नीर । वात बनावे प्रेम की । बैठा तरु तल दोनों वीर ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ तृणद्रो बीछाइयो । भुज उसीस्यो तल देय । थाक प्रमाद निवारने । तहां भूमी पे सूता तेय ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ जैसे वक्त आइ पडे । सुज्ञा होवे उसी प्रमाण । खेद न

[illegible] । पत्र गेही पाया विज्ञान ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ लघु बन्धव निद्रित भया
[illegible] निश्चिन्त । जय जी पड़े विचार में । पूर्व पश्चात् केइ चिन्तित ॥
[illegible] ॥ नर्शज पट ना वृक्ष पे जी । पक्ष युगल सुमे रेय । देखी दोनों
[illegible] । प्रचाणी कर जोड़ी रेय ॥ पु० ॥ ७ ॥ प्राणेश आज अपने घरे ।
[illegible] राज कुमार । ज्ञानी गुणी धर्मात्मा । योग्य करो यांरो सत्कार ॥
पु० ॥ [illegible] ॥ पक्ष कहे सुगुणी प्रिया । चक्के भली चेताइ मोय । घर आया मा
[illegible] । हूं तोपु छिपाया दोय ॥ पु० ॥ ६ ॥ त्रिजगे मिलणी दोहली ।
[illegible] है मुझ पास । ते इनके अर्पण करी । हूं तो पूरु म्हारी आस ॥ पु०
॥ १० ॥ दपां दम्पति मानव रूपे । प्रकटे जयजी ने पास । नमन कियो प्रेमातुरा ।
[illegible] अवकाश ॥ पु० ॥ ११ ॥ भले पधार्या माहुणा । आज पवित्र आंगण
[illegible] । जंगली भक्तिनी करां । तुम भुक्ता हो राज रिघ ॥ पु० ॥ १२ ॥ अमू-
[illegible] मुझ कने । कृपा करी करो अंगीकार । आप जैसा पुण्यात्म के

ढाल पंचम अमोलक भणी । आगे रसीली कथा सुख ॥ पु० ॥ २१ ॥ ❀ ॥
दुहा ॥ जय जी मन आणंदिया । पा लाभ अपरंपार । सूता लघु बंधव कने ।
रही न चिन्ता लगार ॥ १ ॥ महा औषधी प्रभाव से । उपसर्ग न जरा होय ।
निशी सर्व तहां ही रहा । सुखथी कुमार दोय ॥ २ ॥ प्रात जय जी जागीया ।
विजय भणी जगाय । नित्य नियम स्थिरचित कियो । तेतले रवी प्रगटाय ॥ ३ ॥
प्रेमातुर जयजी हुई । लघु बन्धव को जणाय । पूर्व सुकृत्य यहां फले । अमूल्य
त्रिवस्तु पाय ॥ ४ ॥ यत्त युगल की भक्ति को । कह्यो सर्व विरतान्त । देखाई
तीनों वस्तु ते । विजय भी अति हर्षंत ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ६ ठी ॥ पियाजी
थांरा चित्त मांहे कांइ वसी ॥ यह चाल ॥ देखोजी भाइ भाइतणी प्रीति । कहां
देखिये जग में रीति ॥ देखो० ॥ टेर ॥ राजमन्त्र विधि सहित बताया । आण
के प्रेम अति । अति अग्रह कर तास सिखाया । देने राज चीति ॥ देखो० ॥ १ ॥
कपट रहित सो मन्त्र यादकर । करता विचार चिति । राजधणी जेष्ट बन्धव

होवे यह शास्त्र की नीति ॥ देखो० ॥ २ ॥ अति नम्र हो मिष्ट वयण से । यों करता विनंति । पिता मम जेष्ट राज योग्य तुम । अनादि यह वृति ॥ देखो० ॥ ३ ॥ मैं तुम सन्मुख सेवक सो रहूं । ज्यों लक्ष्मण सीतापति । इसीलिये विद्या यह आप सिद्धकर । होवो भू इन्द्ररति ॥ देखो० ॥ ४ ॥ जय कुमर लघु बन्धव तांह । बोले करण भूपति । बोले तूं किम नहीं राज जोगो । न बोली जे अघटति ॥ देखो० ॥ ५ ॥ अपन दोनों राज योग्य हो । लक्षण गुण आकृति । दोनों मिल सिद्धकरो यह सिद्धी । रहकर पुक्त यति ॥ देखो० ॥ ६ ॥ विजय वचन प्रमाण करी ने । बैठा जपनठिति । लघु बन्धव के विश्वास काजे । जय करे ढोंग रीति ॥ देखो० ॥ ७ ॥ मन्त्र जाप तो न करे किंचित । मुख हिलावे निति । देखो प्रेम जेष्ट बन्धव का । निर्लोभी ज्यों जति ॥ देखो० ॥ ८ ॥ तात ज्यों भ्रात की आज्ञा पालन । विजय सदा स्थिरचिति । यथा विधि साधे सा विद्या । देखो लघुत्व वी नीति ॥ देखो० ॥ ९ ॥ पग फिरण क्यों परिश्रम कीजिये । जो हे वस्तु अति ।

मार्गा प्रार्थी उडिये गगन में । चलिया शीघ्र गति ॥ देखो० ॥ १० ॥ विद्याधर मम [illegible] प्रकारं । क्रीडा करत चीति । संत सतीयों के दर्शन करते । सुने व्याख्यान गाति ॥ देखो० ॥ ११ ॥ क्षुधित हुवे तेहि मणी पसाये । नीपाय भोजन इच्छान । शाल दाल पकान व्यंजन तोय । सरस सुखद बहुभांति ॥ देखो० ॥ १२ ॥ उत्तम भूषण वस्त्र सजे सदा । दान पुण्य करते चिति । देवसमा यों सुख भोगवंत । जाय आनन्दे मिति ॥ ॥ देखो० ॥ १३ ॥ यों फिरता ते दिवस सातवें । रामपुर ने श्रंकाति । उतरे आइ बाग मांही । हर्षे जो नगरा क्रुति ॥ देखो० ॥ १४ ॥ साक्षात् जाने स्वर्गपुरी ये । दिव्य ज्योति झलकाति । चिन्ते चित मे जब जाते वारे । आज भाइ ले राजमति ॥ देखो० ॥ १५ ॥ पण यह तो गृहण न करसी । महारी लज्जावति । इण कारण भेजूं इणने ही पुर में । में यहां ही लेवुं विश्रंति ॥ देखो० ॥ १६ ॥ कहे भाइ में विश्राम यहां लेवुं । तुम जाओ नगर प्रति । अनोखी वस्तु मिले सो लाज्यो । ना कह जो थे मति ॥ देखो० ॥ १७ ॥

थोड़ी वार मे में भी आवुंगा । विजय सरल प्रकृति । मानी वयण चाले कामपुर में । विसर्गा वात चिति ॥ देखो० ॥ १८ ॥ आये पुर में ताप घवराये । वैठे एकांत चीनि । मार्ग प्रेक्षा करे वड़े चाह की । प्रेक्षे नगर प्रति ॥ देखो० ॥ १९ ॥ पुगय फले ये हर्मा नगर के । होवे अवी ही पति । कहे अमोल सुणो अहो श्रोता । पर्णा ढाल हर्ष ॥ देखो० ॥ २० ॥ दुहा ॥ ते अवसरे ते पुरपति । अपुत्र्यो मरण पाय । अन्यने गादी दिया विना । दहन क्रिया न थाय ॥ १ ॥ सामान्त मिल सन्मान करी । पंच द्रव्य संग लेय । फिरे तदा राजपुर विषे । पुगयात्म कोइ केय ॥ २ ॥ राज लालसा वहुत धर । द्रव्य सन्मुख वैठे आय । संचित विन किम पासीये । द्रव्य अपूठा जाय ॥ ३ ॥ फिरता २ आविया । जहां वैठा विजय कुमार । देव जोग तस ऊपरे । वूठा द्रव्य अपकार ॥ ४ ॥ गज गरज्यो हयवर हिंस्यो । कलश ढुला सिर आय । छत्र छयो चामर ढुले । सब सानन्द देख पाय ॥ ५ ॥ ढाल ७ वीं ॥ आज आनन्द घन जोगीश्वर आया ॥ यह चाल ॥ पुगयात्म को

मुख मचाया । गज विजय पुण्य पर आयारे लो ॥ सूंडे से गीरी कुंभ स्थले बेठाया । उंच उंचो पद पायारे लो ॥ पुण्या० ॥ १ ॥ कुसुम वृष्टि सुर करी कुमर पर । गज भूषणं मजायारे लो । प्रत्यक्ष देव प्रभाव यह देख के । सज्जन सहु हर्षायारेलो ॥ पु० ॥ २ ॥ पुण्य पोरषा जाणी विजयते । जय २ शब्दे वधायारे लो । पंच शब्द वाजित्र वाजे । बिरुदा वली बोलायारे लो ॥ पु० ॥ ३ ॥ रूप तेज बल आकृति निहाली । नम्या सामांत भूपालीरेलो । हर्षी प्रजा मुख चडीलाली । भांगी चिन्ता कंकालीरे लो ॥ पु० ॥ ४ ॥ आकाश में बोले देव वाणी । यह छे उत्तम प्राणीरेलो । सहूजन पाल जो राहनी आणा । जो चावो मुख माणीरे लो ॥ पु० ॥ ५ ॥ यों सुण अरिजन त्रास जो पाया । नमीया तत्क्षीण पायारे लो । पुरेन्द्र सम प्रताप जम्यो तस । महले चालण सज थायारे लो ॥ पु० ॥ ६ ॥ तब कहे विजये मन धैर्य धरीये । एक महारी कही करियेरे लो । मुझ जेष्ठ बन्धव गण गण हरिये । ताम हुकमें अनुसरी येरेलो ॥ ७० ॥

[illegible] लो ॥ पु० ॥ १४ ॥ जब भाइने जरा विसरे नाहीं । दीण २ तिने आइरे लो [illegible] लाइ । पण रह्या प्राने कमाइरे लो ॥ पु० ॥ १५ ॥ पुत्र [illegible] नीति प्रमाणे चालेरे लो । मज्जन जन न घणाही सुहावे । [illegible] लो ॥ पु० ॥ १६ ॥ निज राज में हिंसा बन्ध कराइ । कु- [illegible] लो । न्याय चाले ने सहुने चलाइ । यों सुखी करी प्रजा [illegible] लो ॥ पु० ॥ [illegible] ॥ दान शाला विद्या शाला स्थापाइ । अनाथालय की [illegible] लो । [illegible] धन शाला थी । कीर्ति विश्व फैलाइरे लो ॥ पु० ॥ १८ ॥ [illegible] पाइ । पुनः ते पुण्य में लगाइरे लो । पुण्य से पुण्य की [illegible] पाइ । पुण्य सदा [illegible] सुख दाइरेलो ॥ पु० ॥ १९ ॥ यों रहे इहां सदा सुख [illegible] । [illegible] पद पाइरेलो । सम्यक्त्व उल्ले ढाल यह सप्तमी । ऋषी [illegible] लो ॥ पु० ॥ २१ ॥ दोहा ॥ जयजी रही अत लिख दिवे । देखा [illegible] ॥ [illegible] हुवो लक्ष्मी । हुवा खुशी ने अत्यन्त ॥ १ ॥ पण इच्छे

नहीं मिलण को । रखे न्हाखे फंद मांय । विदेश कौतक देखन की ।
इच्छा निष्फल थाय ॥ २ ॥ इम चिन्ती मिल्या विना । चाल्या गगन मझार ।
कौतक गमिया जीवड़ा । आलस न करे लगार ॥ ३ ॥ उत्तमपुरे उतंग गीरे । गढ
न वन सर पाज । उदधि आदि स्थान के । विचरे इच्छे त्यांज ॥ ४ ॥ मणी प्र-
भाव पूरवे । मनोरथ मन का सर्व । पुण्यात्मने पगपगे । वरते सदा ही पर्व ॥५॥
॥ ढाल २ जी ॥ श्रेणिकराय हूं रे अनाथी निग्रंथ ॥ यह ॥ श्रोताजन सुणियों
पुण्य विरतन्त । जयसेण कुमर पुण्यवन्त ॥ श्रोता ॥ टेर ॥ तिण अवसर मही
महाराजा । जयपुर नगर प्रधान । गढ मढ मन्दिर मालीयाजी । अलकापुरी
न समान ॥ श्रोता ॥ १ ॥ जेत्रमल नाम शोभतो जी । न्यायी तहां को नरेश ।
दाता भला गुणनिलाजी । सुखद सहु ने हमेश ॥ श्रो० ॥ २ ॥ जेत्री आदि
नीलमा जी । अंगना रूप शीलवान । पुत्र पांचमो ऊपरेजी । एक पुत्री गुण
ध्यान ॥ श्रो० ॥ ३ ॥ जेत्रश्री जीती लक्ष्मी जी । रूप कला बुद्धि तेज । शशी-

वदनी ज्यों सुरांगना जी । पेखत उपजावे हेज ॥ श्रो० ॥ ४ ॥ तिणही पुर माहें रहे जी । कामलता वेश्या अनूप । रुपे लजाइ अपत्सरा जी । तेजे दीपे जैसे धूप ॥ श्रो० ॥ ५ ॥ चन्द्राननी कुरंग लोचनी जी । शुक घ्राण अरुणोष्ट । कम्बू ग्रीवा उर उन्नती जी । सुवर्ण वरण अंगोष्ट ॥ श्रो० ॥ ६ ॥ गजगमनी दंत्तदामनी जी। कामनी मोहन वेल । पांचसो दिनार देवे सोही जी । भोगवे ताको छेल ॥ श्रो० ॥ ७ ॥ जयकुमर आया पुर विषे जी । ऊभा तस घर द्वार । नयन वयन लटका करीजी । मोहित कीया कुमार ॥ श्रो० ॥ ८ ॥ वांची पट मांही गया जी । द्रव्य अपार तस देय । विलसे सुख पांच इन्द्रिका जी । सदा तहां सुखे रेय ॥ श्रोता ॥ ९ ॥ स्वर्णी तणे प्रशाद से जी । नित्य प्रत बहू मोलमाल । वस्त्र भूषण भोजन दिये जी । द्रव्य इच्छित तत्काल ॥ श्रो० ॥ १० ॥ माता कामलता तणी जी । कपट कला की भन्डार । अका वृद्ध वये हुइ जी । जाग्यो लोभ अपार ॥ श्रो० ॥ ११ ॥ एकदा सा चित चिन्तवे जी । मूर्ख पुत्री मुझ । लुब्धि एक ही नर संगे

जी । जाणे न कुल की गुभ ॥ श्री० ॥ १३ ॥ बोलाइ कहे पुत्री ने जी । अनिष्ट
वयण करूर । न एक नर धारण कियोरी । फूली योवन के गरूर ॥ श्री० ॥ १३ ॥
कुलाचार किम थे तज्योरी । भंग कियो लियो नेम । पांचसो मोर नित्य तुम
दियरी । तासुं ही कीजीये प्रेम ॥ श्री० ॥ १४ ॥ कामलता देखाडीया जी ।
मणी भूप वह मोल । अक्का खुशी हुइ घणी जी । लोभित हो करे तोल ॥ श्री०
॥ १४ ॥ खाती हाथे आवीयो जी । कि हाथी लावे यह माल । विश्वासी पूछे
पुत्री को जी । कह तूं देख्या जे हाल ॥ श्री० ॥ १५ ॥ सा कहे छोटा बटवा थकी ।
कोटडी मांही जाय । वस्त्र भूषण भोजन दिये जी । वीणा मांही ते लाय ॥ श्री०
॥ १६ ॥ पुनः कहे अक्का पूछजे तूं । तास मोह उपजाय । यह करामात हाथे लगे
तो । दारिद्र आपणो विरलाय ॥ श्री० ॥ १७ ॥ तनुजा कहे कांई अच्छो जी ।
पर निज ए बात । अनिष्ट लगे जावे तजी तो । मुझ से विरह न खमात ॥
श्री० ॥ १८ ॥ नियम से अधिको देवे जी । द्रव्य आपण नित्य तेय ।

[illegible] महाराँ है जी । न लीजे कोइ को छेय ॥ श्रो० ॥ १६ ॥
[illegible] भगगइजी । श्राइ कुमरजी पास । अन्तर नहीं जणावतीजी नित्य
[illegible] ॥ श्रो० ॥ २० ॥ सुसंयोग्य पुण्ये लहेजी । लोभे मूलही
[illegible] टाल अमोलखजी । जो यो अक्ल का उपाय ॥ श्रो० ॥ २१ ॥
[illegible] अथाने लागो भूतडो । लोभ तणो विकराल । वारम्वार कहे पुत्री
[illegible] मे दे माल ॥ १ ॥ अग्रह अति जाणी मात को । एकदा अवसर
[illegible] पूछे जय भणी । फरमावो गुरु मोय ॥ २ ॥ इच्छित वस्तु
[illegible] जो अरो हम तांय । कहां से लावो स्वामीजी । सच्ची दो फरमाय ॥
[illegible] चित चिन्तवे । जो राखूं में छिपाय । तो तो भंग पडे प्रेम में ।
[illegible] ॥ ४ ॥ गुरु कह्यो नहीं कोइने । नारी ने तो विशेष । उत्पात
[illegible] यह नीति निरेश ॥ ४ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ न कस्यापि प्रकाशितः ।
गुह्य [illegible] नस्ये तथापि मर्मोच । स्त्रीवश्यं किन कुर्वंत ॥ १ ॥ ❀ ॥

दोहा ॥ पण यह वचन ने वीसरी । मोहमद श्री कुमार । वीतक वात दाखी
सह । अखन्ड निजावा प्यार ॥ ५ ॥ ॥ ढाल ६ मी ॥ मोक्ष पद पावे हो
जिनन्द गुण गावनां ॥ यह० ॥ कपट कला देखोरे चतुर वेस्यातणी ॥ टेर ॥
कामलता निज मानने मेरे । कही सगली वात मांउ । श्रवण सुणी हर्षी घणी
मेरे । ज्यों तृषित नीर खांड ॥ क० ॥ १ ॥ तेह मणीने हरण करण को । उत्सुक
थयो तस मन । कपट कला केलववा कारण । करवा लागी यतन ॥ क० ॥ २ ॥
कन छिद्र नित्य देखे विजय का । मूशक मंजारी जेम । परन्तु मणी हाथ नहीं
आवे । थयो चित्त अखेम ॥ क० ॥ ३ ॥ तब समझी हां शार घणोये । मणी रक्खे
निज पास । किणरीते मुझ हाथ ए लागे । करूं कैसो प्रयास ॥ कप० ॥ ४ ॥
अवसर नित्य कुमर पास आइ । भक्ति करे बहु कोउ । कला केलवी वस्य किया
तस । कुण करे कपटी होउ ॥ क० ॥ ५ ॥ चन्द्रहास मदिरा तस पाइ । डाली
मरम के मांय । जिण में प्रवस्य हुवा कुमरजी । तब हर्षी ढिग आय ॥ क० ॥

६ [illegible] मणी गुप्त स्थान मे । तब पाई चित्त खेम । छिपा रखी तस गुप्त [illegible] न लागे जेम ॥ क० ॥ ७ ॥ कालन्तर ते नशो उतरीयो । कुमर [illegible] । मनलना ढिग मणी न पाइ । खेद पाया असमान ॥ क० ॥ ८ ॥ [illegible] छलीयो । डाली ने मोह फास । मणी हरी कंकर घर्यो से [illegible] निराम ॥ क० ॥ ६ ॥ ऐसी मदिरा वस्य में डाली । कापीले [illegible] ना मणी लेइ मुझ छोड्यो । करी आरम बकसीस ॥ क० ॥ [illegible] आन उपजी चित माही । चिन्ता से मज्वले अंग । स्नेह बंध पड्यो [illegible] न जावे संग ॥ क० ॥ ११ ॥ निर्द्रव्य नर कुमर ने जाणी । [illegible] बालाय । कहे दारिद्री कहाड घर बाहिर । रहे कुल कृतव्य मांय ॥ ॥ क० ॥ १२ ॥ निर्धनीया से नेह करण को । नहीं अपणो आचार । मान मि- टाम से वाणी महारी । दे निकाल घर बहार ॥ क० ॥ १३ ॥ कामलता मा वचन सुणीने । मुरझाणी मन मांय । उत्तम कुमर के गुण में लोभाणी । बोले यों नर

रहइ निराश अति दुःख धरती । अन्य नर नहीं चित्त चाया ॥ क० ॥ २२ ॥ वीच धरे उत्तम आचरणां । यो पुण्यातम पावे । ढाल यह नवमी गाइ अमोलक । शीघ्र शील सुख आवे ॥ क० ॥ २ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ गुप्त स्थान जयजी चिते । ध्याव आर्त ध्यान । नीच नारी संगत करी । पायो में अपमान ॥ १ ॥ अमूल्य महा मणी गइ । छुट्यो प्रेमला संग ॥ नीच परमा हेरो । कियो मन इन भंग ॥ २ ॥ किहां जावूं किणने कहूं । करूं अब कांइ उपाय ॥ आफस्यो कर्म जाल में । हे प्रभु अब करूं कांय ॥ ३ ॥ विश्वासी मणी संगथी । छोड्या वंधव संग । ते गइ सब सुख लइ मुझ । अब होसी किस्यो ढंग ॥ ४ ॥ कर कपोल दृष्टि मही । नयणे नीर वहाय ॥ देखो पुण्यातम प्राणीया । शीघ्र ही सब सुख पाय ॥ ५ ॥ ढाल १० वी ॥ ब्राह्मी ने सुंदरी दोनों बाइ । यह० ॥ हिवे तिण अवसर ने मांइ । जत्रमल राजारी जेत श्री बाइ । खेले सखीयों ने मझारो ॥ पुण्य वन्त ने सुख मिले अयकारो ॥ १ ॥ खेलती नदी ने तट आइ । सखीयों साथ ते पण

देवो नगर में ढांडा पीटाइ । इनाम श्रेष्ट कीजे जहारो ॥ पु ॥ १३ ॥ जो खुटी
नहीं होमी आयुगर्मी । तो पुण्यात्म कोइक आसी । और तो वस्य नहीं लगारो
॥ पु ॥ १४ ॥ नरेश रे वात पंसद आइ । तत्क्षीण हुकम सो फरमाइ । शीघ्र
करो प्रसिद्ध नगर मझारो ॥ पु ॥ १५ ॥ जो वाइ का दुःख गमावे । तेहने वाइ
यह परणावे । दायजे दे क्रोड दीनारो ॥ पु ॥ १६ ॥ योंही तब पउह वजावाइ ।
सुणी लल्चाइ घणा आयाइ । पण पुण्य विन किम मिले ऐसी नारो ॥ पु ॥१७॥
जयजी उद्घोषणा श्रवण सुणी । तत्क्षीण हर्ष्यो चिन्ता धुणी । मुझ पास औषधी
श्रेयकारो ॥ पु ॥ १८ ॥ पउह छवी राज में आया । केइ तरह ढोंग जमाया ।
आडम्बर होवे मनवारो ॥ पु ॥ १९ ॥ औषधी पखाली पाणी मांही । दीनी कमरी
ने पीलाइ । भाग्यो व्यन्त्र पाडी किलकारो ॥ पु ॥ २० ॥ तत्क्षीण कुमरी सावध
होइ । देखी परिवार सब हर्षाइ । प्रत्यक्ष देख्यो चमत्कारो ॥ पु ॥ २१ महा पुण्य
वन्त जय जीने जाण्या । लक्षण संस्थान रूपे यह आण्या । जोगी जोडी ये करो

[illegible] ॥ चाल ॥ नदा लिहीं पूंठी न पाइ । धनकाइ पसरावीया । कहां गइ [illegible] । शोक इम यह आर्वेला । न देख्यो भट जोनायो तब । ताम [illegible] । सुणो श्रोता कहे वक्ता । धूर्त तेहने ठगावीयो ॥ १ ॥ कुमर [illegible] चितवे । धिक्क २ हाजोजी करटी मितने ॥ चाल ॥ कपटीमित [illegible] गमाइ चित आपणो । मेवा नाथे यथग आराधे करे कार्य बहुल [illegible] । [illegible] पातक करके चिन्ता ज्वाला मिलगावइ । कहे वक्ता सुणो [illegible] न आवइ ॥ २ ॥ शोक कियां मे हो पाछो न पामीये । मम- [illegible] नारीए ॥ चाल ॥ नामी फल मिले ममता से । औषधी [illegible] । यह गुणवन्ति राज कन्या । पाणी ग्रहण इण से भयो । गयो [illegible] । यह लाभ मे हर्ष आवइ । कहे वक्ता सुणो श्रोता । ममता से [illegible] ॥ ३ ॥ देव जो दीधी हो दिव्य मणी औषध । सो कैसे जावे हो । [illegible] न पावे ॥ चाल ॥ दोशक खोइन जावे स्वच्छ । दोडी मिलेगा पुण्य थी ।

पाउसे। सुणी अक्का डरी दिल में। धमकी राय जमाउनी। कहे वक्ता सुणो श्रोता। जयजी के पुण्य सहाही ने ॥ ७ ॥ देविक वस्तु हो धर्मी प्राणी ने। इन्क्षित आयं। न आपे अन्नाणी ने ॥ चाल ॥ अन्नाणी वेश्या ने तिस्कारी। कहे सभ एकटा मिली। जावो देवो कुमरनेमणी। जो तूम चावो मनरली। नहीं तो पूरा विचार करजो। ये हुवा राज अधिपति। कहे वक्ता सुणो श्रोता। जए दुस्मायां कुगति ॥ ८ ॥ अक्का घावरी आइ कुमर कने। रुदन करती हो कर जोडी भणे ॥ चाल ॥ जोडी कर कहे कुमर से खमो अपराध देव माहेरो। परवस्य हुइ में मदिरा जोगे कियो गुन्हो वहु थांयरो। अहो नाथ हम ने आप छन्डी। मन्डी प्रीति राज वाइसे। कहे वक्ता सुणो श्रोता। कौन हमारो सहाइ छे ॥ ९ ॥ राज प्रताप से आप मोहित भया। गरीब की सेवा और सुख भूली गया ॥ चाल ॥ भूलिया ज्यों स्वर्ग जाइ निज कुटम्ब भूले सही। त्यों हमारी मारन लाधी घणी किसी जावे कही ॥ पण हमारे आप एक हो। आधार दूजा

दूर दीजीये ॥ १३ ॥ उत्तम नर ते, प्रार्थना भंगे नहीं । आप हम इच्छा, यह पूर्ण करो गहीं ॥ चाल ॥ पूर्ण करो सब इच्छा महारी, मणी आप यह लीजीये । मणी मेली कुमर पासे हम घर पावन कीजीये । लेइ मणी कुमर हर्ष्यो परख्यो कपट अक्का तणो । कहे वक्ता सुणो श्रोता । कुमर विचक्षण है घणो ॥ १४ ॥ प्रीति संभारी हो कामलता तणी । कोप न कीधो हो हुलस्यो मिलवा भणी ॥ चाल ॥ मणी मिली प्यारी हिली । सुख सहू चिन्त्यो पाछलो । कहे अवसर देख आस्युं । तुम पधारो निज स्थलो । अक्का घर गई खुशी थइ ॥ ढाल एकादश विषे । कहे वक्ता सुणो श्रोता । जोडी यह अमोलक रिषे ॥ १५ ॥ दोहा ॥ अक्का गया तदनंतरे । कुमर पड्या मोह फंद । कामलता मन में वसी । धिक्क काम मतिमंद ॥ १ ॥ स्वसुर पक्ष निज कुल की । लज्जा मर्यादा तोड । कामलता सदने चल्या । राज कन्या को छोड ॥ २ ॥ जयजी आया देख के । हर्ष्यो गणिका परिवार । अति सन्मान दीधो सभी । आज तूठा किरतार ॥ ३ ॥

नित्य नवला सुख भोगवे । खान पान ने स्नान । गान तान गुलतान में । मगन-
ना माने गजान ॥४॥ जय जी की आज्ञा मुजब । सहू रहे एक चित्त । गुलतास ने
कर्मा किर्मा । आनन्द मंगल नित्य ॥ ५ ॥ ढाल १२वी ॥ रे लाला निर्जीगो म-
हारो वाजणों ॥ यह० ॥ रे भाइ कुमरी सुणी यों वारता । तुम पति गया वेश्या
घोरे भाइ । मुरझाइ धरणी पडती । याती आरत करे बहू पेर रे भाई । विरुक
० व्यर्था जीवन ॥ टेर ॥ १ ॥ रे भाइ शीतल पवन जले करी । ते नीण अन्तर
ने मायरे भाइ । सावध हो रोती कहे । छिवे महारी गति मी थायरे भाइ ॥ धि-
क्क ॥ २ ॥ रे भाइ वेश्या व्यर्था मुभागति । पड्यो कामलता ने फन्द रे भाइ ।
लाज रखी नहीं कुल तणी । थया मोहोदय से अन्ध रे भाइ ॥ धि ॥ ३ ॥ रे
भाइ उर कुटे सिर आथडे वहे नेत्रे नीर परनाल रे भाइ । दासी दौडी गइ भूप
पे । कह्या बाइ का सहू हाल रे भाइ ॥ धि० ॥ ४ ॥ रे भाइ नृप शोकातुर थयो
अति । बलो लज्जाणो घणो मन रे भार । मुझ जमात नायिका घरे । कुलानिन्द से अव

जग जनरे भाइ ॥ धि ० ५ ॥ रे भाइ शीघ्र आया कुमरी कने । लीनी खोला मे बैठायरे भाइ ॥ कर से आंशू पूंछने । बुचकारी कहे इमवायरे वाइ ॥ धि ॥ ६ ॥ रे वाइ फीकर किंचित करे मति । तुंछे मुझ जीवन प्राणरे वाइ ॥ पर्यत्न करी तुझ पनि भणी । देस्यूं थोडा दिने ठाम आनरे वाइ ॥ धि ॥ ७ ॥ प्रय रे भाइ सचीवने कहे भूपति । शीघ्र जावो वैश्या आवसरे भाइ ॥ तेडो धिक्कारी जमातने । लागे हम कुल ने कालासरे भाइ ॥ धि ॥ ८ ॥ रे भाइ पायक लेइ प्रधाजनी । गया कामलताने घर रे भाइ ॥ वाहिर रही मोटा साद से । कहे जयजीने यों टेर रे भाइ ॥ धि ॥ ९ ॥ अहो भाइ झट निकलो घर वारणे । छोडी नीच नारी नो संग रे भाइ ॥ लज्जा धरो जरा कुल तणी । यों कैसे भइ मति भंगरे भाइ ॥ धि ॥ १० ॥ रे भाइ सुण के कुमर अति लाजीया । पड्या फिकर समुद्र के मांयरे भाइ ॥ धिक धिक मुझ व्यथी भणी । राय चाकर साथ बोलायरे भाइ ॥ धि ॥ ११ ॥ रे भाइ इण जणि से मरणो भलो । कैसे जाके देखावुं मख रे

नर्मवि० ४४

भाइ ॥ सब नर्जनी मे बनावगी । हुयो कुमर मने अति दुःख रे भाइ ॥ धि ॥ १२ ॥ रे भाइ मही भाग दे अवी मुझ भणी । तो पेहूं में प्यारे उद्दरे भाइ ॥ राजाजी किम्यो जाणगी । निकल्यो महारो जमाइ चुद्र रे भाइ ॥ धि ॥ १३ ॥ रे भाइ राज घरे जाणो नहीं । बली इहां पण रहणो नथायरे भाइ ॥ लज्जा जीवित दोइ रहे । एसो करूं में हिवे उपाय रे भाइ ॥ धि ॥ १४ ॥ मणी तणे प्रभाव से । गया गगने उडी देसंत्र रे भाइ ॥ स्वदेश की चोरी थकी । भीना भली कहे अन्यत्र रे भाइ ॥ धि ॥ १५ ॥ रे भाइ आश्चर्य गणिका चुप रही । चुप चाप गया प्रधान रे भाइ । बात वीती कही जयतणी । ते सुण विसम्या राजान रे भाइ ॥ धि ॥ १६ ॥ रे भाइ कुलचन्द्र कुमर लाजी गयो । हे गुणवन्त विद्या भरपूर रे भाइ ॥ निन्नानन कर मुझ लाडली । तुझ ने कन्त मिलसी जरूरे भाइ ॥ धि ॥ १७ ॥ रे भाइ गुणवन्त सज्जन वीसरे नहीं । दुर्गुणी से नहीं पले प्रेमरे भाइ । इत्यादि वचन वचन थी । कुमरी पाइ चित क्षेमरे भाइ ॥ धि ॥ १८ ॥ रे भाइ राजा

[illegible] दई। मोल माय रे भाइ। वियोग भाले पति तर्णी। पण [illegible] भाइ ॥ [illegible]० ॥ १६ ॥ वह सन्तराय कभी टूटसी तुम्भ। मि-
[illegible] । शील पसाये सुख पामस्युं। रही दृढ पतिव्रत धाररे
भाइ ॥ [illegible] भूमी सयन आहार एक टंक। तज सिणगार धर्म ध्यान
[illegible] भाइ। [illegible] ढाल बारमी। कांइ विश्व तज्यां सुख पायरे भाइ
॥ [illegible] ॥ मणी प्रभावे कुमरजी। रूप परावती कीध। वृद्धवयी
[illegible] भामश्री मच मिध ॥ १ ॥ जटा कुट दीर्घ कावरी। थंवर भगवां
अग। भस्मी [illegible] भाले तिलक। वैराग्य नेत्र रक्त रंग ॥ २ ॥ गले दाम कर स्मर-
णा। [illegible] कांख। चिमटा दंड करमे धरा। हंस नाम मुख भाख ॥
३ ॥ लगोट, [illegible] अनंग जय। पगमें ऊंच खडाव। पुष्ट ऊंच तन
भाल दिव्य। करे सो रण में पडाव ॥ ४ ॥ स्वेच्छा भूखग फिरे। पेखे पुर वर
ठाम ॥ आनन्दे काल निर्गमे। अब कहू पुण्य परिणाम ॥ ५ ॥ ⊛ ॥ ढाल १३

वी ॥ निन्दक नं मति मरजेरं ॥ यह० ॥ भविका पुण्य वल देखोजी । गत वस्तु प्रापति होय ॥ टेर ॥ एकदा एक वनके विषयजी । शकुन हुवा अय कार । अर्थ समर्भो आश्चर्य लहो । इण महा अटवी ने मझार ॥ भ ॥ १ ॥ गत वस्तु कैसे मिले । ये शकुन न निष्फल जाय ॥ स्थान मनोरम देखके बेठा तहां ध्यान लगाय ॥ भ ॥ २ ॥ अचिन्त्य तिहां आयो तदा जी कपटी अवधूत वेष । जय जी जोगी जो हर्षायो । नमन कियो विशेष ॥ भ ॥ ३ ॥ सेवा साचवे आति हितजी । कुमर ओलखीयो नाम ॥ बात प्रगट करी नहीं । नहीं पूगे जिहां लग आम ॥ भ ॥ ४ ॥ रिग रह्यो शिष्य होय के जी । भक्ति करे अपार । जयजी भतिस पोषताजी । भोजनादि सत्कार ॥ भ ॥ ५ ॥ अण निपजाया नित्य दिये जी । इच्छित भोजन पान । करामाति जोगी जाणनेजी । धूर्त हर्ष्यो असमान ॥ भ ॥ ६ ॥ एकदा कार्य साधवाजी । करे गुरू ने प्रसन्न । कुमर मन तस ओलखी । निज श्लाघा करे कथन ॥ भ ॥ ७ ॥ मंत्र जंत्र मणी औषधी जय । मुझ से छिपी न लगार ।

जो चहीये सो ही कहे । धूर्त हर्षी करे उचार ॥ भ ॥ ८ ॥ श्वामीजी मुझ पास छे जी । औषध एक अमूल । गुण विधि तस प्रकासीये । ते किम होवे मुझ अनुकूल ॥ भ ॥ ९ ॥ कहाडी दी जोगी करेजी । कुमर देख हर्षाय । प्रत्यत्त शकुन फलित थया । गइ औषधी मिली पुनः आय ॥ भ ॥ १० ॥ जय पूछे सत्य की जाय । यह कहां से आइ तुझ पास धूर्त अति नरमी करी । कर जोडी करे अरदास ॥ भ ॥ ११ ॥ श्वामी इहां से, सत योजने जी । रहे एक जोगी राज । मैं सेवा तस साचवी । ते प्रसन्न हुवा घणाज ॥ भ ॥ १२ ॥ तिण ए औषध मुझ दीवी जी । गुण पूछ्या कह्यो एम । जा तुं शीघ्र उत्तर दिशा । महा जोगी मिलेगा प्रभु प्रेम ॥ भ ॥ १३ ॥ ते कहेगा तुझने सहू । इस बूंटी में गुण अपार । मैं आयो आप चरण में । फरमावो गुण जे सार ॥ भ ॥ १४ ॥ एक प्रभाव तो इण तणोजी अनुभव हुवो है मोय । जब से आइ मुझ कने । तब से मुझ मन खिन्न होय ॥ भ ॥ १५ ॥ अरूण नयणे जय जी वदे रे दष्ट नं दिखता चोर । तब ही तुम्य यह तुझ

दिये । ये एक गुण इसमें कठोर ॥ भ० ॥ १६ ॥ दगाबाज तस्कर भणी यह ।
संतापे दिन रात । तूं निश्चय महाधूर्त्त है । कर आयो किसकी घात ॥ भ० ॥१७॥
यहां फल इस पाप का मैं, तुझे बताउं आज । फिर आगे तूं नहीं करे । ऐसो
महा कोड अकाज ॥ भ० ॥ १८ ॥ इम साची सुण विमस्यो अति । भये थरथरी
छूटी अंग । औषधी छोड भागा गया । कुमर न कियो तस संग ॥ भ० ॥ १९ ॥
पापी पापोदय करीजी पीडा सहजे पाय । धर्मी के धर्म प्रसाद से जी । सहजे जाय
बलाय ॥ भ० ॥२०॥ सर्गी औषधी गइ पुनः मिलीजी । जयजी अति हर्षाय । पुण्य
फल दर्शावणी । ढाल नेर अमोलक गाय ॥ भ० ॥ २१ ॥ ॐ ॥ दोहा ॥ प्रदेश
के प्रयाग को । दुःख नहीं वेद लगार । सार हुवो फिरवा तणो । वस्तु पाया श्रेय-
कार ॥ १ ॥ जो कार्य पापिष्ट को । दुःख का कर्त्ता होय । सोही कार्य पुण्यवन्त
के । सुख कारक लो जोय ॥ २ ॥ निकले थे अपमान से । लज्जित हो दुःखपाय ।
कारण से कार्य पक्यो । महा औषधी मिली आय ॥ ३ ॥ हर्षित हो आगे चले ।

[illegible] प्रकार । देखन होंस पूरी करी । मिटा मन उत्साव ॥ ४ ॥ स्थिर रहने [illegible] हुइ । मोटी बने उपाय । इच्छित फले पुण्यात्म के । सुणजो चित्त लगाय ॥ ५ ॥ [illegible] वी ॥ इण भरतक्षेत्रमांही पाल ऊभी दो नागरी ॥ यह० ॥ निण [illegible] । भूमंड विभूसिती । हो सुजाण । भूमंड विभूसिती । स्वर्गपुरी [illegible] । नगरी छे भोगवति ॥ हो सुजाण ॥ नगरी छे भोगवति ॥ ऋद्धि से करी [illegible] ॥ हो सु० ॥ चूर्ण ॥ भवन बाग निवाण सोभे लोभ इन्द्रतां ॥ [illegible] ॥ १ ॥ सुभोग नामे राजिन्द्र । मकेन्द्र ने मारीस्रो ॥ हो सु० ॥ [illegible] नीति मे निपुण । जाणे नर पारखो ॥ होसु० ॥ जाणे ॥ भोगवति [illegible] सुरी सभी ॥ होसु० ॥ आका ॥ शील रूप गुणखान । सज्जन नृप मन रमो ॥ होसु० ॥ मज्ज ॥ २ ॥ [illegible] उदर उत्पन्न । रत्न मम बालका ॥ होसु० ॥ रत्न ॥ भोगिनी तस नाम स्वरूप सुख मालिका ॥ होसु० ॥ सुरू ॥ गुण [illegible] विद्या भंडार । विनय शील जिममणी ॥ होसु० ॥ उपचये हुइ दिव्य रूप ।

हुलसित अंग कामणी ॥ होसु० ॥ हुल ॥ ३ ॥ सज सोलह सिणगार । सार वस्त्र भूषणां ॥ होसु० ॥ सार ॥ मात पठाइ तात पास । वर दो सुलक्षणां ॥ होसु० ॥ वर ॥ कन्या रूप वय जोय । राय चिन्तातुर भया ॥ होसु० ॥ राय ॥ किसको परणाव् धीय । सर्व गुण गणमया ॥ हो० ॥ सर्व ॥ ४ ॥ जो गुणवन्त मिले जोग । भोग सुख पावइ ॥ होसु० ॥ भोग ॥ अप लक्षणी संयोग । जन्म दुःखे जावइ ॥ होसु० ॥ जन्म ॥ पुत्री को देइ सीख । सखीव बोलाइया ॥ होसु० ॥ सखी ॥ भूपा वर विचार । एकन्त बैठाविया ॥ होसु० ॥ एक ॥ ५ ॥ तेतले अचिन्त्य ब्याल । वि-कराल तहां आवीया ॥ होसु० ॥ विक ॥ कुमरी जाती थी महल मांय । रस्ते में सोचाविया ॥ होसु० ॥ रस्ते ॥ मुरझाइ पडी भूपृठ । टूटे ज्यों तरुलता ॥ होसु० ॥ टूटे ॥ दोड दासी भूप पास । दाखी कुमरी कथा ॥ होसु० ॥ दाखी ॥ ६ ॥ सुण भूप आश्चर्य पाय । खेद अति लावीयो ॥ होसु० ॥ खेद ॥ तत्क्षिण आया तहां जाय । दीयो थररावीयो ॥ होसु० ॥ दीयो ॥ सब आया तहीं दोड । छोड काम

.ाज ने ॥ होसु० ॥ छोड ॥ बोलाया भोपा वैद्य । लेइ सब साज ने ॥ होसु० ॥ लेइ ॥ ७ ॥ मंत्र जंत्र जडी जाण । वैद्यादि घणा आवीया ॥ होसु० ॥ वैद्य ॥ अपणी सब करामात । उमंगे अजमावीया ॥ होसु० ॥ उमं ॥ किया बहुत उपचार। लगार लगे नहीं ॥ होसु० ॥ लगा ॥ आये उनकी उमंग । मेहनत निष्फल गइ ॥ होसु० ॥ मेह ॥ ८ ॥ आर्त अति करे राय । निरासा धारी मने ॥ होसु० ॥ निरा ॥ चिन्त मे क्या होय । सचीव नरमी भने ॥ होसु० ॥ सची ॥ कोइ यत्न करो शीघ्र राय । ज्यों रत्न यह रहावाइ ॥ होसु० ॥ ज्यो ॥ बहु रत्न वसुंधरामांय । उपकारी को पावई ॥ होसु ॥ उप ॥ ९ ॥ उद्घोषणापुर माय । राय करावई ॥ होसु ॥ राय ॥ करे मुझ तनुना खुशाला तास परणावइ ॥ होसु ॥ तास ॥ पडह बाजायो पुर मांय । आय उमंगी घणा ॥ होसु ॥ ते तले जयजी तहां आय । शब्द सुण पडा तणा ॥ होसु ॥ शब्द ॥ १० ॥ देखाने चमत्कार । रूप बावनो कियो ॥ होसु ॥ रूप ॥ लघु देही दीपे पुष्ट । चरणे सांबलियो ॥ होसु ॥ चरणे ॥

शुभ वस्त्र सजा तन । जेष्टिका कर विषे ॥ होसु ॥ जेष्टि ॥ चंदन तिलक लिलाट । माल गल में दिशे ॥ होसु ॥ माल ॥ ११ ॥ एक हाथे करताल । वजावे चूंपसे ॥ होसु ॥ वजा ॥ दूजे हाथे फिरे माल । चले भक्त रूप से ॥ होसु चले ॥ आये मध्य वजार । देखण लोक वहू जम्या ॥ होसु ॥ देख ॥ हंसे हंसावे सब तांय । वावन जी मन रम्या ॥ होसु ॥ वाव ॥ १२ ॥ पडह वाजंतो सुण । कारण सब पूछिया ॥ होसु ॥ कार ॥ विस्तारी हुइ वात । भक्त ने जन किया होसु ॥ भक्त ॥ वावनो कहे करू आगम । त्रिलोक के मायने ॥ होसु ॥ त्रीण ॥ देखो करामात मुझ । सर्व तहां आयन ॥ होसु ॥ सर्व ॥ १३ ॥ सखी कहे भक्तजी मन । भक्तणी चाविया ॥ होसु ॥ भक्त ॥ गाय कन्य जोग जोडां । येही जग पाविया ॥ होसु ॥ येही ॥ वरीया विन कंत रेय । सुरूपा इन सारखा ॥ होसु ॥ सुरू ॥ यों हंसे सब लोक । क्या जाने पारखा ॥ होसु ॥ क्या ॥ १४ ॥ कितनेक दाने शाणे आय । शिक्षा देन हर्मी ॥ होसु ॥ शिक्षा ॥ गये करामाति वहुत हार । तो थारी चली किसी

॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ मत कर फोकट फंद । अपमान तूं पावसी ॥ होसु ॥ अप ॥
[illegible] पुत्री । पछे पस्तावसी ॥ होसु ॥ पछे ॥ १५ ॥ तव कहे हंसनि
[illegible] न कीजिये ॥ होसु ॥ अन्त ॥ जरूर परणसी एह । इच्छा पूर्ण
[illegible] ॥ इच्छा ॥ यों हंसता आया राय पास । अरदास शवनो करे ॥
[illegible] ॥ अब ॥ [illegible] अबी विप दूर । वचने दृढ रीजिये ॥ होसु ॥ वच ॥ १६ ॥
[illegible] आया कुमरी कने ॥ होसु ॥ आया ॥ चूंटी ली कर मांय ।
[illegible] ॥ होसु ॥ ढोंग ॥ मोठे स्थान आदर ढोंग से पावइ ॥ होसु ॥
[illegible] ॥ [illegible] अचन । आदि मंगावइ ॥ होसु ॥ आदि ॥ १७ ॥ उदक मिश्रि
[illegible] । पूछे भूपने तिहां ॥ होसु ॥ पूछे ॥ उद्घोषण पुर मांय । किसा
[illegible] ॥ होसु ॥ किसा ॥ भूप कहे करो आराम । जरूर परणावस्युं ॥होसु॥
जरूर ॥ [illegible] दृढ रखो वचन । वदे जिन भावस्युं ॥ होसु ॥ वदे ॥ १८ ॥
[illegible] मंत्र । पाणी मो पास्यो ॥ होसु ॥ पाणी ॥ ताही चीण के मांय ।

विप मह विरलावियो ॥ होसु ॥ विप ॥ निद्रागत की पेर कुमरी सावध हुइ ॥होसु॥ कुम ॥ हर्ष्यां सव परिवार । चिन्ता आरत गइ ॥ होसु ॥ चिन्ता ॥ १६ ॥ नरवर पुरजन सर्वा । आश्चर्य अति पाविया ॥ होसु ॥ आ ॥ बावनजी की करामात । सर्वा सरसावीया ॥ होसु ॥ सर्वा ॥ करामाती बावना भक्त । विरला जग तुम सम ॥ होसु ॥ वि० ॥ चमत्कार प्रत्यक्ष । देख सव मन रमा ॥ होसु ॥ देख ॥ २०॥ महीमा फैली पुर माय । हंसक शरमावीया ॥ होसु ॥ हंस ॥ पुण्य पसाये जगजी का हुवा चावीया ॥ होसु ॥ हुवा ॥ यह हुइ भैरवी ढाल । रसाल कौतक तणां ॥ होसु ॥ रसा ॥ कहे अमोल अणगार । आगे मीठी घणी ॥ होसु ॥ आगे ॥ २१ ॥ * ॥ दोहा ॥ नव जीवन कन्या लियो । हर्ष्यो सव परिवार ॥ बावन भक्त तणां सर्वा । मान्यां अति उपकार ॥ १ ॥ आर्ति टली आँखो खुली । हुवां राय ने विचार ॥ अहो प्रभु इण स्थान के । वचन पडे कैसे पार ॥ २ ॥ चन्द्र कला सम बाइ मुझ । यह राहू प्रत्यक्ष ॥ गुण अन्तर मही यन्त लिख ।

केसे जोडे ए दत्त ॥ ३ ॥ अजब गति करतार की । विरूप अर्पो गुण ॥ गुणी
यह रत्न अमोल है । चिन्ता में पडयो निपुण ॥ ४ ॥ बोल्या भी पलटे नहीं ।
जे क्षत्री मुख वेण ॥ खाड आड विच में पड्यो । कीजो किस्यो अब सेण ॥ ५ ॥
ॐ ॥ ढाल १४ वी ॥ तावडो धीमो सो पडजे ॥ यह० ॥ बडे नर वचन को निभावे
हो ॥ बडे नर० ॥ पुण्यवन्त तो नाना कहता । अलभ्य लाभ पावे ॥ टेर ॥ वचन
भंग से यश भंग होवे । परतीत नहीं राही ॥ बिन प्रतीत अपमानी बने । ते मुरदा
तुल्य थाइ ॥ बडा ॥ १ ॥ कन्या का संचित प्रमाणे । पति मिल्यो यह आइ ॥
यत्न महारा चले किसा यहां । होत बसो थाइ ॥ बडा ॥ २ ॥ आतुर होइ बोले
बावनो । वचन पार पाडो ॥ नहीं तो मैं जावुं निज स्थाने । मन की बाहिर
काडो ॥ बडा ॥ ३ ॥ राजाजी दिग मुढ हो रहीया । हां ना नहीं बोले ॥ चिन्ता
सागरे गोता खावे । केइ विचार तोले ॥ बडा ॥ ४ ॥ तब बावन कहे चिन्ता
मत करो । मैं भी योंही जाणू ॥ मुझने राज कन्या नहीं शोभे । कुरूप तन न्हा-

नु ॥ वडा ॥ ५ ॥ में दुर्भागी हीण अंगी ने । रंभा किम दीजे ॥ हंसली ग्रीवा वायस बन्धन । अन्याय किम कीजे ॥ वडा० ॥ ६ ॥ जो कदापि आप जबरी से । पुत्री मुझ देशो ॥ अङ्गीकार मो नहीं कियो तो । क्या शोभा लेशो ॥ वडा ॥७॥ सामन्त परजा आवरण बोलेगा । ते सहा न जाशे ॥ इस कारण मुझ ना कहो तो । सब जन सुख पामे ॥ वडा ॥ ८ ॥ सुन्दर मुझ से ग्रही न जावे । कारण सब जाणे ॥ चतुर मोड ओडण को जितनी । तित ना पग ताणे ॥ वडा ॥ ९ ॥ भाग्य पार जो वस्तु इच्छे । सो मूर्ख जग मांह ॥ इसलिये में परणुं नाहीं । फिकर नजो गह ॥ वडा ॥ १० ॥ वचन सुगड यों सुन वावन का । सब आश्चर्य पाया ॥ प्रत्यक्ष चमत्कार यह देखो । निर्विषयी निर्मायः ॥ वडा ॥ ११ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ कचित गुणः रागी नरा । तत् गुणवन्त कचित् ॥ तत्वा गुणवन्त गुणे रक्ता । स्व गुण प्रन्ता कचित ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ गुणानुरागी होकर धरा धव । नरमी यों बोले ॥ तुम सम गुणवन्ता निर्लोभी । न मिले जग खोले ॥ वडा ॥१२॥ निश्चय

वि०
५८

पुत्री नृपकों ही देवूंगा । वचन म्हारा पालूं ॥ प्राण जावो पण वचन न जावो । उत्तम रीति चालूं ॥ वडा ॥ १३ ॥ राम लक्ष्मण वचन पालन । वन में वास कीना ॥ हरिश्चन्द्र दारा तनुज वेंच कर । मेहतर घर लीना ॥ वडा ॥ १४ ॥ यों अनेक दृष्टान्त दे भगत । व्यावन हट करीयो ॥ तब सामान्त कुटम्ब वदल कर । ना कारो भरीयो ॥ वडा ॥ १५ ॥ सबही वयण सुणी असुन कर । लग्नोत्सव मंडायो ॥ बावनजी को मोक्ष काजे । द्रव्य अति दीलायो ॥ वडा ॥ १६ ॥ नवरंग मेहल दीया रेन को । हय गय आदि सारा । उत्तम लग्न महूर्त देखायो । आवो मर्जी प्यारा ॥ वडा ॥ १७ ॥ द्रव्य तहां सर्व जोग आ मिले । बने सज्जन केइ । मिली महेली मङ्गल गावे । गगन गरजेइ ॥ वडा ॥ १८ ॥ वाजित्र वाजे विविध प्रकारे । वन्दोला फिरता । देख विद्रूप हंस्ये वहू कौतकी । केइ आश्चर्य धरता ॥ वडा ॥ १९ ॥ यों आनन्दे लग्न दिन आया । सजी अति सजाइ । गजारूढ हो चलीये वावनजी । म्हारी वर्णाइ ॥ वडा ॥ २० ॥ लग्न मंडपे आया भराया ।

सज्जन पुरजन सारा । ढाल चतुर्दश कही अमोलक । अब देखो चमत्कारा ॥
यहा ॥ १४ ॥ • ॥ दोहा ॥ राजकन्या भी सज हुई । आई मंडप मांय । बावन
कर स्पर्श नहीं । सब रह आश्चर्य पाय ॥ १ ॥ पाणी ग्रहण करो नृप कहे । नन
बावन कहे राय । मैं नहीं जोगो सुन्दरी । क्यों जबरीये परणाय ॥ २ ॥ महीपत
कहे जागो नर्म्या । मैं दी नृप नाय । अटल वचण मुझ ना फिरे । जो कभी मेरु
कम्पाय ॥ ३ ॥ नृप नृप निज अंगना । कहो देनी के नाय । सा कहे याप हुकम
[illegible] । [illegible] ॥ ४ ॥ कुमरी को पूछे कहे । यह मुझ मोड समान ।
[illegible] नगनरा । आप मया लिया जान ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल १५ मी ॥
प्रान सहारा [illegible] जिनका ॥ यह० ॥ अहो सुज्जन आज आनन्द घन । नगर
म [illegible] । सन्त मे सर्व सुख जन पावे । दिन २ वधे पुण्याइ राज ॥
यहा ॥ १ ॥ या दर्मा आनि जय हर्षाया । परीक्षा पूरी थाइ । महा गलावन्तो
त्रिलोपति जागयो । नर्मदा राणी थाइ राज ॥ अहो ॥ २ ॥ निज स्वरूप ना प्रगट

[illegible] । [illegible] थाल्याइ । अहो भूपादि गुणियो मनंरंजन । कहूं मुझ मन जे
[illegible] ॥ अहो ॥ ३ ॥ कुरूप कन्या रत्न प्रहवो । नीति मे पुक्यो नाहीं । इम-
[illegible] वनु नलकुंवर माइराज ॥ अहो ॥ ४ ॥ सत्य प्रभाव तुमारो
[illegible] दरशाइ । मव मिले कुछ कर मक्यो नहीं । पण मेरे मे कैसे
[illegible] ॥ अहो ॥ ५ ॥ नर देही वांछित फलदाता । जो कर जाने कमाइ ।
[illegible] मेरा । मह भ्रमना विरलाइ होराज ॥ अहो ॥ ६ ॥ नगर
[illegible] लम्बी चौडी । दो एक खाड खिणाइ । बावनो चन्दन चन्ही प्रजालो।
[illegible] पर [illegible] होराज ॥ अहो ॥ ७ ॥ ज्वाला स्नान किया मुझ तनका ।
[illegible] । फिर तुम थाइ खुशी ते परखूं । इसमें शंका नाही होराज ॥
अहो ॥ ८ ॥ नवो कहे पह मरणो चहावे। अग्नि मे कौन उचयांइ । मव समझायो
पण न मानी । खाड मे अनल दीपाइ होराज ॥ अहो ॥ ९ ॥ न्हाइ धोइ गन्ध
लगाइ । वस्त्र भूषण मजाइ । कन्नरा रूड हो वाजित्र नादे । मव जन मे परखयां

इ होगाज ॥ अहो ॥ १० ॥ अपूर्व आश्चर्य जन देखन को । आगे २ थाइ । कोडों
गम नग्यो नहीं कूप । कोनक कोन न चलाइ होगाज ॥ अहो ॥ ११ ॥ आगा
गमन [illegible] । [illegible] ऊभो न रहाइ । कहइ अचंभे केइ संदाश्चर्य । देखे हर्षी
[illegible] होगाज ॥ अहो ॥ १२ ॥ सपर्णी गंत्र सर्व देखंता । जाइ पडयो कुंड मांइ ।
[illegible] पांन नथ नहीं । किस जीवन यह आइ होगाज ॥ अहो ॥ १३ ॥
[illegible] चन । वाहिर आऊ भाइ । गानन्दाश्चर्य गह पाइ । इस
[illegible] होगाज ॥ अहो ॥ १४ ॥ औपधी महिमाए । विश्वानल की । ना-
[illegible] । सजा भूपण मूल रूप नव । अधिक रसा सो भाइ होगाज
॥ अहो ॥ १५ ॥ नृपति नम अति सत्कारी । पूछकर हर्षी लाइ । चावनजी च-
[illegible] । मार्चा देवो फरमाइ होगाज ॥ अहो ॥ १६ ॥ मूल संडाण से
[illegible] यथा तथ्य दीनी सुनाइ । मंत्र औपधी मणी प्रभावे । भिन्नि
[illegible] होगाज ॥ अहो ॥ १७ ॥ सुणी वाणी अति विस्मय मानी । जग २

[illegible] आइ। धन्य २ नर महापुण्यात्मा। धन्य बाइ की पुण्याइ होराज ॥ अहो
॥ [illegible] ॥ अति उत्सवे पुनः शेहर में लाया। दिया तेही मेहले उतराइ। सर्व जन
[illegible] स्थाने। वाणुजों कीर्ती फैलाइ होराज ॥ अहो ॥ १९ ॥ तीनों रत्न
[illegible] जय। रचे फिर जाय सोवाइ। रहे आनन्दे सज्जन सम्बन्धे।
[illegible] सिरजाइ होराज ॥ अहो ॥ २० ॥ ढाल दश पर पांच शिरोमणी।
[illegible] गाइ। श्रोता भरीये सुकृत्य खजाने। पुण्याइ काम आइ होराज
॥ [illegible] ॥ ॐ ॥ दोहा ॥ पुनः अति आडंबर कियो। जयती और पुरराय।
[illegible] अब भर्या। शुभ लग्ने परणाय ॥ १ ॥ शतगज तुरंग सहश्रदश।
[illegible] दिया राय। गाम जागीर दीया घणा। हाथ खरच के तांय ॥ २ ॥
[illegible] दम्पति। जोडी जोगी मिली आय। स्वामी नहीं कोई सुखकी।
[illegible] पाय ॥ ३ ॥ नित्य नवला सुख भोगवे। दोगुंदक सुरसार। मणी
[illegible] सामुग्री। होवे सब तैयार ॥ ४ ॥ भोगवे तोपे अन्यने। देइ इच्छित दान।

होनहार आगे सुनो । श्रोता लगाइ ध्यान ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १६ मी ॥ मल्हार आज आनन्दनो दिन छेजी ॥ यह० ॥ पुण्यवन्त कुं बोल महे नहीं रे । चातुर ने चिन्ता होवे मल्हार ॥ पुण्य ॥ १ ॥ एकदिन मजाइ उत्तम मजीरे । निकल्या फिरवा नगरजी पुरमा मझार ॥ पुण्य ॥ २ ॥ हय गय पायक बाजा बहूरे । शोभे राज मारगमां नर महूर ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ मध्य बजारे जब सो आवी यारे । पुरजन देखण आवि लोमाती यार ॥ पु ॥ ४ ॥ ठठ जम्यो बजार के मांयनेरे । जोवे गोखडीयां गोखे आगा नेर ॥ पु ॥ ५ ॥ तामें नारी एक बोली जी रामभीरे । ऊंचे स्वर करी ज्यों सुने मझार ॥ पु ॥ ६ ॥ कथा देखो मवी ऊपर चडीरे । अपणा राय जमाइ ये खबर पडीरे ॥ पु ॥ ७ ॥ घर जमाइ सदाइ रहे इहांरे । किस्यो देखणो यह जावे किहांरे ॥ पु ॥ ८ ॥ शब्द सुणियोए जय कानमांरे । लज्जा पाया चिन्ते नीति मानमांरे ॥ पु ॥ ९ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ उत्तमा स्वगुणै ख्याता मध्यमा स्तुपितुर्गुणैः । अधमा मातुल ख्याता स्वसुरेर धमाधमा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ यों विचार सुख

नीचो कियोरे । क्रिडा उत्सहा सब भागी गयोरे ॥ पु ॥ १० ॥ धिक २मुझ बुद्धि ने अरु रिद्धि नेरे । मैं तो गमाइ लाज काज सिद्धिनेरे ॥ पु ॥ ११ ॥ जैसा हर्ष मे गया था खेलमांरे । तैसा शोग से आया पाछा महेलमांरे ॥ पु ॥ १२ ॥ एकान्त बेठा चिन्ता सागर पड्यारे । अपमान दुःख अति तस मन नड्यारे ॥ पु ॥ १३ ॥ इहां रहणा मुझने जुगतो नहींरे । जावूं कामपुर विजय पासे सहीरे ॥ पु ॥ १४ ॥ पुन. चिन्ते तहां कैसे जाइयेरे । ते है राजा किम दास होय राहीयेरे ॥ पु ॥ १५ ॥ मन्त्री साथी मैं भी वणुं राजीयोरे । स्वेच्छाए रहूं विन लाजीयोरे ॥ पु ॥ १६ ॥ यों विचारी मंत्र संभारीयोरे । पण हृदय तास विसारीयोरे ॥ पु ॥ १७ ॥ भूल्या प्रमादे याद आवे नहींरे । पश्चाताप अति पावे तवहीरे ॥ पु ॥ १८ ॥ हाहा अनर्थ यह मैं मोटो कियोरे । महाराज दाता मंत्र भूली गयोरे ॥ पु ॥ १९ ॥ विजय विना यह तंत्र मिले नहींरे । जाणो भाइ पास अवतो सहीरे ॥ पु ॥ २० ॥ मुझ प्रमाद मुझने नीचो कर्योरे । पड्यो व्यश्न वश तेहथी स्ववश हर्योरे

॥ ५ ॥ २२ ॥ [illegible] परनाह लाभ कथा लीजीयें । महाराजा चन्द नों उत्तान कों-
[illegible] ॥ ५ । २२ ॥ या निश्चिन्त हुआ मनरंगी ढालमांरे । श्रमोल आशा फले
[illegible] कातठार ॥ ५ ॥ २३ ॥ ⊛ ॥ दोहा ॥ रूप परावर्त्तो प्रथम में । देनं
[illegible] साधन करी । पावूं इच्छित खेम ॥ १ ॥ मर्गी प्रभाते नव्हीने
[illegible] बनाय । शुभ्र वस्त्र सजीया तने । भाले तिलक लगाय ॥ २ ॥ नको
[illegible] मद तकी माल । कर बहुरंगी दीपणो । जानोड़ गलडाल ॥
[illegible] चालीया । उत्तर्या कामपुर आय । मिलिया हर्षी निजरको ।
[illegible] ॥ ४ ॥ प्रेम परिक्षा कारणे । करे वचन उचार । ते सुणीने
[illegible] विनय आचार ॥ १ ॥ ⊛ ॥ ढाल १८ मी ॥ नागदलरा नगद-
[illegible] विद्याचले । तुमको बंधन दीधो, राजिन्द । तात अपमाने
[illegible] । मागफल आनि हायदो राजिन्दा । मुर्णगा हमारी वारता ॥ वे ॥ १ ॥
[illegible] तने । रख्या मुझ निशी आयदो राजिन्द । तीन नम्रुहों तुम

[illegible] । [illegible] दर संतुष्ट थाय होराजिन्द ॥ सुणो ॥ २ ॥ जेष्ट भाइ कपटे गया ।
[illegible] धरां राज हो राजिन्द ॥ कहो में कहूं सो सत्य है । राख्या वीत-
[illegible] होराजिन्द ॥ सुणो ॥ ३ ॥ सुणी विजय वीतक कथा । आश्चर्य अधिको
[illegible] होराजिन्द ॥ अहो ज्ञानी ये पूरा गुनी । भाइ गुन चित आय होराजिन्द ॥
[illegible] ॥ हृदय भरणा मोह वसे । नेत्रे नीर वर्षाय होराजिन्द । पूछे अति नर-
[illegible] । मम बंधव के किणठाय होज्ञानी ॥ सु ॥ ५ ॥ कब दिन ऐसो ऊगसी ।
[illegible] मुझ भ्रात होज्ञानी ॥ शीघ्र बतावो मुझ भणी । अति उपकार मोपे
[illegible] होज्ञानी ॥ सु ॥ ६ ॥ कहे नीमति फीकर तजो । जयसेण सदा जय माय
होराजिन्द ॥ चिदग मणी के प्रशाद से । ताम कमी कछु नाय होराजिन्द ॥ सु ॥ ७ ॥
[illegible] लख्या रयो । दुष्कर मिलण तुम तांय होराजिन्द ॥ क्या करांगा तिणसे मिली
। [illegible] काय होराजिन्द ॥ सु ॥ ८ ॥ यों सुण दिलगीर हुवा अति । कहे तस चिन
[illegible] होज्ञानी ॥ सफल दिन ते जाणस्यूं । देखस्यूं बंधव मुख होज्ञानी ॥ सु ॥ ९ ॥

निर्मल मण लिया चले । देवता को ले सहाय हो राजिन्द ॥ कहो तो बुलावुं [illegible] । तम वन्धव जीण माय हो राजिन्द ॥ सु० ॥ १० ॥ परन्तु उनके [illegible] । नमन होवगा दुःख हो राजिन्द ॥ कारण जेह ते तुमचकी । इन्हां [illegible] मृत्यु हो राजिन्द ॥ सु० ॥ ११ ॥ तुम हित भणी पहिला कहुं । [illegible] सम्म चहाय हो राजिन्द ॥ तो दोनों रहो जुजुवा । जिनमें विघन नहीं [illegible] हो राजिन्द ॥ सु० ॥ १२ ॥ यह प्रश्न ने छोडके । अन्य पूछो सुख उपाय हो राजिन्द ॥ यो सुणकर विजय जी देव किम यों बोलो विबुधराय हो ज्ञानी ॥ सु० ॥ १३ ॥ सतलवी प्रीति विषे । इन वचने पड है विरोध हो ज्ञानी ॥ मत्य प्रीति जनक मने । नाम न कीजिये बोध हो ज्ञानी ॥ सु० ॥ १४ ॥ यह संपति सब [illegible] को । अर्पण करण ने तैयार हो ज्ञानी ॥ पण वांछे नहीं मुझ बन्धवो । [illegible] गुण आगार हो ज्ञानी ॥ सु० ॥ १५ ॥ जेसे तात लघु बाल को सुखडी [illegible] जाय हो ज्ञानी ॥ त्यों इन राज में मोलवी । गया मुझ छिटकाय हो

ज्ञानी सु० ॥ १६ ॥ यह राज नहीं म्हेरो । में नहीं मालक याम हो ज्ञानी ॥ मिलिया नहीं भाई मुझ भणी । जो वाया धणा ताम हो ज्ञानी ॥ सु० ॥ १७ ॥ निगमा इह मुझ अति । तव परवश करने काम हो ज्ञानी ॥ वैठो में राजगादीये । अभिग्रहधार्या तामहो ज्ञानी ॥ सु० ॥ १८ ॥ जहांलग भाइजी नहीं मिले । छत्र धरु नहीं सीस हो ज्ञानी । चामर वींजावो नहीं । राज चिन्ह तजते दीस हो ज्ञानी ॥ सु० ॥ १९ ॥ उमंग घणी मन मिलण की । पण नहीं सुण्या समाचार हो ज्ञानी । जो तुम जाणो तो शीघ्र कहो । मानुगा अति उपकार हो ज्ञानी ॥ सु० ॥ २० ॥ यों सुण जयजी खुशी हुवा । अष्टादशमी यह ढाल हो ज्ञानी ॥ अमोल ऋषि कहे आगे सुणो । दोनों प्रगट मिले उजमाल हो ज्ञानी ॥ सु० ॥ २१ ॥ दोहा ॥ निमन्तिक कहे विजय को । आकर्षण विद्या वल ॥ जयजी वन्धव तुमारडा । आवे छीण में चल ॥ सु० ॥ १ ॥ भूप कहे शीघ्र ते करो । देवुंगा वांछित इनाम ॥ इमसुण तांई निमन्तियों । अदृश्य होगयो ताम ॥ २ ॥ नेमन्ति रुप छोडी करी ।

मृदंग करे थाय ॥ वस्त्र भूषण दीपता । साक्षात इन्द्रसाय ॥ ३ ॥ सगन में उतर के
आवीया । विजय सभा के मझार । अचंभे सज्जन आति । देख के यह चमत्कार
॥ ४ ॥ विजय पेछानी भ्रात को । आनन्द अंग न माय ॥ उमंगी आ पड्या चरण में ।
आंसुये ने धोवाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ १६ वी ॥ पाप दशार्या दिन आनन्दकारी
॥ यह ॥ सज्जन सुपात्र मिल सुख होवे भारी ॥ ते जाने ज्ञानी के तस आत्मारी ॥टेर॥
उठ कीर्ती गम गया विकसारी । नेत्रसे वर्षे हर्ष का वारी । धन्य दिन घडी आज
हमारी । कुशले भव्य जय भ्राता री ॥ सज्जन ॥ १ ॥ दोनों उच्चासन पे बैठा बराबर ।
अनिमेष रहे आपस में निहारी । जय कुमर निज वीती हकीकत । यथा उचित
भाइ आगे उचारी ॥ स० ॥ २ ॥ विजय नरमी कहे राज संभालो । में तो सेवा
में रहूंगा तुमारी ॥ जो जोग सो तस स्थान हो सोहे । दील विचार न कीजे ल-
गारी ॥ स० ॥ ३ ॥ जय कहे तुझ उपार्जित सुझ । योग्य नहीं लेवो नीति वि-
चारी । भूल्यो मन्त्र पुनः याद करावो । यह भक्ति सादो हिवे थारी ॥ स० ॥ ४ ॥

अति आग्रह कीयो राज लियो नहीं । तब राज मन्त्र दीयो तस सुनारी ॥ धारी मन्त्र भाइ कुशल पूछता । तत्क्षीण उडगया गगन मझारी ॥ स० ॥ ५ ॥ भोगवती नगरी में आया । जहां महेल है निज इक्तयारी ॥ एकान्त रही ते मन्त्र ने साधो । जभी विधी यक्ष पास से धारी ॥ स० ॥ ६ ॥ भोगवति पुरपति की सभा मे । आया निमित ज्ञा । का धारी ॥ कहे नृपति से सुणो होवो सावध । बात बताऊं एक चमत्कारी ॥ स० ७ ॥ इसी वक्त तुझ पाटवी कुंजर । उन्मत होवे जो मद छक भारी ॥ तो तुम बात मानो मुझ साची । आज सेही दिन सात मझारी ॥ स० ॥ ८ ॥ थारो आयुवंत पूर्ण होवेगा । इसमें संशय नहीं लगारी ॥ होणहार टले नही टाल्यो । पुक्त देखो में ज्ञान लगारी ॥ स० ॥ ९ ॥ हितेच्छु हो शीघ्र आवो यहां । ले निजातम काज सुधारी ॥ दान धर्म सुकृत्य सु करणी । करना सो करले वक्त है यारी ॥ स० ॥ १० ॥ इतने में तो सुणयो. सहाय करो शीघ्र । गज मद छक करे जुलम अपारी ॥ सुणपर तीत्या वयण ज्ञानी का ।

जागया नाम परम उपकारी ॥ स० ॥ ११ ॥ निश्चय में अब दिन सात में । पर
वश्य छोड जास्यूं ऋद्धि सारी ॥ जो कुछ करनो होवे सो करलूं । जो पर भव
मग आवे म्हारी ॥ स० ॥ १२ ॥ निमन्त ज्ञानी को संतुष्ट कीना । ततो गया स्व-
स्थान टकारी ॥ रायजी ज्ञान दया धर्म उन्नति । कीनी लीनी खरची टकारी ॥
स० ॥ १३ ॥ जयजी को बोलाके पर्षप । दिवे सुभ ऋद्धि सह कुमारी ॥ द्रव्य सं-
भाला प्रजा पालो । आज्ञा सुभ देवो हन वारी ॥ स० ॥ १४ ॥ अचंभो नरमी
जयजी उचारे । अबचिन्त यह क्या आप विचारी ॥ रायजी बात प्रकाशी निस-
न्तनो । तब निज राज ऋद्धि स्वीकारी ॥ स० ॥ १५ ॥ पुरपति तब ऋद्धि त्या-
गी । जिनेन्द्र परूपित दीक्षा धारी ॥ एकान्त स्थान आसण दृढ स्थापी । हुवा
ध्यानमग्न मेरुगिरी सारी ॥ स० ॥ १६ ॥ पदस्थ से पिण्डस्थ में पेठा । रूपस्थ ध्या-
ना रूपाती तारी ॥ यों धर्म ध्याने रमे चर्या शुक्ल । क्षपक श्रेणी चडे शीघ्रतारी
॥ स० ॥ १७ ॥ वेद कषाय कीया क्षीणमें क्षय । सयोगी केवल ज्ञानी भयारी ॥

[illegible] । अजरामर हुवा अवीकारी ॥ म० ॥ १८ ॥ मीजो
[illegible] । जगत व्यवहार योग्य मानव्यारी ॥ धर्मोदय किंयो
[illegible] जगमे विस्तारी ॥ म ॥ १६ ॥ अनित्य आयु जाणीयों
[illegible] सुधारी ॥ सफल अवतार नाम जगमांइ । जैमे भोग्य-
[illegible] ॥ टाल उन्नीगवों धर्म पुण्य फल । दाम्बण ऋपि अमोल ऊ-
[illegible] भूधव । जयजी पुण्य को रक्षा दीपारी ॥ म० ॥ २१ ॥
[illegible] प्रसाद मे । जयजी पाये राज ॥ होणहार होवे जिसा ।
[illegible] ॥ एकदा संभारी युगद्रिया । जयपुर नृपती धीय ॥
[illegible] । नाम्यो अन्तम जीय ॥ २ ॥ राज संभलाई सचीव को ।
[illegible] । जयपुर आये मुन्ने चली । उतरे गाम के बार ॥ ३ ॥
[illegible] । सुमग को समाचार ॥ सुणी नृपादि हर्षिया । जयजी
[illegible] ॥ ४ ॥ सतपुत्रादि परिवारसें । मिलाग्या जाइ जमात ॥ सुसज्जन

संयोग मे । कोन नहीं हर्षांत ॥ ५ ॥ उत्सवे लाया पुर विषे । मिल दम्पति सुखी होय ॥ रह सुख में जयजी इहां । हिवे धर्म कथा सुणो लोय ॥ ६ ॥ ॐ ॥ ढाल २० वी ॥ दल्लाली लालन की ॥ यह ॥ पुणयाइ जयजीकी । सुणो २ हो भवीका चित लाय ॥ पुण्य ॥ टेर ॥ तिण अवसर पधारीयाजी । जयपुर बाग मझार ॥ चरण करण गुण सागरुजी । मुनिवर बहु परिवार ॥ पु० ॥ १ ॥ वनपालक सज होय के जी । राज सभा में आय ॥ दी वधाइ मुनि आवीयाजी । सुणी सब अति हर्षाय ॥ पु० ॥ २ ॥ सजी साजाइ राजवीजी । ले संग सेना सज्जन ॥ वंद्या आ मुनिवर भणीजी । तेम ही बहु पुरजन ॥ पु० ॥ ३ ॥ परिषद् बेठी भरायके जी । जग तारण मुनि राय । वागर्यो धर्म उपदेशने जी । अहो सुणो भव्य चित्त लाय ॥ पु० ॥ ४ ॥ अनित्य असार संसार में । मिल्यो मतलबी सब परिवार ॥ चीण भंगुर शरीर यह जी । मुरजाहो किसे ही विचार ॥ पु० ॥ ५ ॥ पुण्य संचातो मिली सायबीये । पुण्य खुटे विरलाय ॥ पुण्य छत्ते सुकरणी करे तो । अजरामर

धन जाग ॥ पु० ॥ ६ ॥ बनी बक में सवी बने जी । बिगड्या बने न कांय ॥ ग्णी । ॥ सुधारयो तो । फिर पस्तावो न थाय ॥ पु० ॥ ७ ॥ इत्यादि गुरु देश-ना ।। । अमृत वृष्टि सम ॥ सुरजा मिथ्यात्वी जवासीया जी । भव्य चंपक गइ रम ॥ पु ॥ ८ ॥ सम्यक्त्व व्रत केइ वर्याजी । वैरागया नृपाल ॥ वंदी मुनि नव निज गृह ॥ । आया फिरी तत्काल ॥ पु ॥ ९ ॥ चिन्ते पुत्र मो होय के जी । एकही नही ग । जोग ॥ जयजी सहु गुण संपनाजी । देवुं राजगुण छोग ॥ पु ॥ १० ॥ शांध बुलाइ जय भणीजी । दर्शायो ते विचार ॥ मो कहे सहु सला लेइजी । करो काम मुख्यकार ॥ पु ॥ ११ ॥ राणी पुत्रों मंत्रीने जी । कही उपजी सो बात । जनो सर्वा के मन विरेजी । जयजी ने गादी बैठात ॥ पु ॥ १२ ॥ जेत्रमल राजेश्वर । कर महोत्सव दिक्षा लेय ॥ अंग एकादश सीखीया । फिर तप दुक्कर मा-ड्यां नेय ॥ पु ॥ १३ ॥ संचित कर्म खपाय के जी । पाया केवल ज्ञान ॥ घणा भव्यां का तारक जी । पायापद निर्वाण ॥ पु ॥ १४ ॥ जन्म प्रमाण ते नरतणोजी ।

अवसर करे उद्धार ॥ जेत्रमल ऋषिराज त्यां ते । पावे सुख श्रेयंकार ॥ पु ॥ १५
॥ जयपुर पति जयजी भयाजी । संभाली राज लगाम ॥ संतोष्या सब साजना
जी । ऋषि युक्त जे ठाम ॥ पु ॥ १६ ॥ धर्म कामार्थ साधताजी । सुख से रहे
जयराय ॥ ढाल वीस अमोलक कहेजी । पुण्ये सुख सवाय ॥ पु ॥ १७ ॥ ❀ ॥
दोहा ॥ जिस दिन से जय कुमरजी । तज्यो कामलता गेह । तिसदिन से पति-
व्रता सम । अभिग्रह धररही तेह ॥ १ ॥ स्नान भूषण मही वस्त्र तज्या । न कियो
सरस आहार ॥ एकान्त वास सयन धरा । अल्पभाषी आचार ॥ २ ॥ अक्का सम-
जावे घणी । ते माने नलगार । मांस द्वादश वीतीया । तब सुणीया समाचार ॥
३ ॥ जयजी जयपुर पति भया । उमंगी मिलण तेवार ॥ आक्का लाइ बेठाय के ।
शिविका में दरबार ॥ ४ ॥ वीती बात कही भूपने । सत्यवन्ती तस जाण ।
राखी अन्तेउरी विषे । प्रेमे पोषी माण ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल २१ वी ॥
वीरवर्धमान नाम जिनंदजी को ॥ यह ॥ जय विजय नृपति का पुण्य भारी ॥जय॥

टर ॥ दो देश आधिपति भया जयसेनजी । गुणवन्ती मिली तीन नारी ॥ जय ॥
॥ १ ॥ तीन सिद्धी तीन लोक में अपर बल । विलसे सुखसो सुरसारी ॥ जय ॥
॥ २ ॥ एक दिवस बन्धु याद आयो । ऋद्धि युत मिलणो हिवे जारी ॥ जय ॥
॥ ३ ॥ बहुत विछोहा रह्या इत्ता दिन । अवतो रेवां एक ठारी ॥ जय ॥ ४ ॥
आमंत्रन नव गज भोलायो । नीति रीति सब चेतारी ॥ जय ॥ ५ ॥ जोर
शोरथ बन्दोबस्त सब करीयो । कराइ सेना सज सारी ॥ जय ॥ ६ ॥ तीनों राणी
न साथही लीनी । और ऋद्धि बहू श्रेय कारी ॥ जय ॥ ७ ॥ शुभ महूर्त प्रयाण
कर्यो नव । हयगय रथ दल परिवारी ॥ जय ॥ ८ ॥ प्राहूणाचारी करता मार्ग में ।
पुर २ पर्ता घर मनवारी ॥ जय ॥ ९ ॥ सुखे २ यों मुकाम करंता । आया काम
पुर सीम मांगी ॥ जय ॥ १० ॥ समाचार ये पाया विजयजी । अनन्द पाया अ-
पारी ॥ जय ॥ ११ ॥ शीघ्र हुकम कीयो करो सजाइ । नगरी स्वर्ग सी सिणगारी
जय ॥ १२ ॥ आप सवी परिवार संघाते । सन्मुख आया पाय चारी ॥ जय ॥

॥ १३ ॥ देख जष्ट भाइ उमंग भराइ । जा पड्या चरणां मझारी ॥ जय ॥ १४ ॥
उठाइ जय हृदय में भीड्या । गर्क प्रेमरस गुलतारी ॥ जय ॥ १५ ॥ मेमांश्रुत कहे
अचिन्त्य गया नजी । मैं दुःख पाया अपारी ॥ जय ॥ १६ ॥ आज कृतार्थ
मुझ ने कीना । आइ सन्मुख दयालारी ॥ जय ॥ १७ ॥ दोनों आरूढ हुवा एकही
गज पर । रवी शशी सम शोभतारी ॥ जय ॥ १८ ॥ सब परीवारे चल मध्य
बजार ॥ छत्र शीश चमर दुलारी ॥ जय ॥ १९ ॥ सहूकारां मोती मेह वर्षाया ।
सासाणां लिया वधारी ॥ जय ॥ २० ॥ आया मेहल में राज सभा में । सिंहा-
सण दोय दोनों बेठारी ॥ जय ॥ २१ ॥ सुखे २ दोनों रहे एक स्थाने । लघु जष्ट
अनुज्ञा मझारी ॥ जय ॥ २२ ॥ देव भक्ति तुष्ट्या जयजी विजय पर । मणी ओषध
नम स्मर प्यारी ॥ जय ॥ २३ ॥ निश्चिन्त रहे सुख भोगे इच्छित । राज तिहूं को
संभारी ॥ जय ॥ २४ ॥ ढाल इक्कीसी गाइ अमोलक । पुण्य फल सदा सुखकारी
॥ जय ॥ २५ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ एकदा विजय रायजी । सुख सेजा के माय । सूता

[illegible] पश्चिम निश । स्वप्न अचिन्त्यो आय ॥ १ ॥ जयंति नयरी स्वर्ग सी । [illegible] राजा गुण धार ॥ विजिया तनुजा तेहनी अतुल्य गुणागार ॥ २ ॥ [illegible] तेहनो । रच्यो अजब रंग ढंग । राज राजेश्वर बहू मिल्या । धरता [illegible] ॥ ३ ॥ सर्व राजा को परहरि । विजया वरी विजय तांय ॥ हर्षे स्यन्द [illegible] भया । तत्क्षीण जाग्रत थाय ॥ ४ ॥ तत्क्षीण उठ बैठा हुवा । आश्चर्य [illegible] मन [illegible] । किहां विजीया किहां जयंतीपुर । किम स्वप्न यह मुझ आय ॥५॥ ॥ [illegible] मी ॥ न्यालदे की देशी में ॥ सुणजो कथा पुण्यशालीनी जी भाइ । [illegible] सदा सुखदाय ॥ पुण्यवन्त ने पुण्यवन्त मिले जी । जो दूर देशे ही रहाय ॥ [illegible] ॥ १ ॥ चिन्ते अचिन्त स्वप्न आवीयो जी कांइ । यह तो खोटो नहीं थाय ॥ [illegible] माइनी रजा लइ जी । लेवूं स्वप्न अजमाय ॥ सुण ॥ २ ॥ प्राते जणायो जय [illegible] भाइ । दी आज्ञा तत्काल ॥ मणी प्रभावे खगगति जी । गया जयन्ति चाल ॥ सुण ॥ ३ ॥ चिन्ते इण रूप में मुझवरे जी कांइ । तामें आश्चर्य

काय ॥ कुरूपो वर्णु जो मुजवरे जी । तो मत्य स्वप्न जगाय ॥ मुण ॥ ४ ॥ मणी प्रभाव तव कर्यां जी भाइ । विरूप कुब्ज स्वरूप ॥ कूब मोटी उर पूठ्णे जी । ठें-गणा तन मर्म्या ऊप ॥ मुण ॥ ५ ॥ एकण पग लंगडा वणया जी भाइ । पेट गयो पाताल ॥ कर पग दुर्बल वाँकडा जी । चाले डगमग चाल ॥ मुण ॥ ६ ॥ चीवडी आंख्यां वैठी नाशीका जी कांइ । श्लेषम ताथे मडडाय ॥ दंत तीन मुख बाहार जी । लांबा होट हलाय ॥ मुण ॥ ७ ॥ मस्तक मूंछ ने दाढीना जी कांइ । कबरा विखर्यां बाल ॥ फटे मलीन वस्त्र तन सजी जी । पडे मुख मांहे से लाल ॥ मु० ॥ ८ ॥ जर्ष्टीका महाही कर विषे जी कांइ । डगमग चल्या जाय ॥ शीशु पाछे देखवा जी । हंसे आप तास हंसाय ॥ मु० ॥ ९ ॥ सखरा मंडप में पेसीया जी । हंसाया सब जन जोय ॥ सब से ऊंच आसन कियो जी । कम्बले ढांक्यो मांय ॥ मु० ॥ १० ॥ ता ऊपर विराजीया जी कांइ । मूंछे देता ताव ॥ अवलो कता सब भूप को जी । जणाता परणण भाव ॥ मु० ॥ ११ ॥ हंसता लोक कहे

तरनेजी कांइ । अहो २ रूप प्रधान । परणन् आवा पद्मणीजी । वणकर वीदराजन ॥ सु० ॥ १२ ॥ ते हट कर कहे परणस्यूं जी कांइ । निश्चय हूं विजीया तांय ॥ इम मा मा रांसो घणाजी । देखो अथी चीण मांय ॥ सु ॥ १३ ॥ राते कुलदेवी स्वप्न में जी कांइ । चेतायो विजीया तांय ॥ वरजे कूरूप कूवडा भणी जी । जो पूर्ण सुख चहाय ॥ सु ॥ १४ ॥ कुमरी रह्यो ध्यान में जी । न्हाइसजी सिणगार ॥ दासीयां वृन्दे परिवरीजी । नेपुरने भणकार ॥ सु ॥ १५ ॥ हरती मन नयन महूतणाजी कांइ । पेठी मंडप मांय ॥ वेत्रधारणी दरसावतीजी । रूप नृप आदां मोमाय ॥ सु ॥ १६ ॥ नम ऋद्धि कीर्ती नृपां कीजी कांइ । सुणाती आगे जाय ॥ कुमरी वरे नहीं कोयनेजी । कूवडो रही चित्त ध्याय ॥ सु ॥ १७ ॥ आवे जिम नृप सन्मुखे जी कांइ । हर्ष दीये तस नूर ॥ तजीने आंगल संचरे जी । तब शोकी होवे ऊतरे ज्यों पूर ॥ सु० ॥ १८ ॥ तेतले वीजय कुब्ज आवीया जी कांइ । वेत्र धारणी चिन्ते मन ॥ जो जाणे नहीं वरणस जी । तो यक्ति भेग लगे दोपन ॥ सु० ॥ १९ ॥

रा० १

थाकी खीजी इम ऊचरे जी बाइ। सबसे अधिक गुणधाम॥ वरनो तो वर ये कूबडो जी।
नहि मिले एसो अन्य ठाम॥ सु॥२०॥ दासी वेण देवी केणथी जी। कुब्ज गले
डाली वरमाल॥ ऋषि अमोले आश्चर्यनीजी। कांइ। भाखी यह बारवी ढाल॥ सु॥२१॥
॥ दोहा॥ सर्व राय अनुरक्त भये। कहे मूर्ख कन्या येह॥ सरोल सम महीपति
तजी। बायस भिक्षु के धयो नेह॥१॥ पण जुगतो नहीं राय ने। देनी नीच जाति
ने बाल॥ खोशी लो कुब्ज कने थकी शीघ्र ये वरमाल॥२॥ कोपातुर वदे नरवरा।
छोड कुब्ज वरमाल॥ तुझ जोगी कन्या नहीं। भाग्य प्रमाणे चाल॥३॥ कुब्ज उत्तर आपे
नहीं। तब आन लाइ रीस। कहे-रे अर्प वरमाल शीघ्र। नहीं तो छेदां सीस॥४॥
समता सागर झीले कुब्जजी। वदे नहीं एकवाच॥ धैर्य से थोका टले। जरान
लागे आंच॥५॥ ढाल २२ वी॥ राघव आवीया हो॥ यह०॥ राजिन्द आवीया
हो। होकर सबही शूर॥टेर॥ लेइकर करवाल नागी। बोले वचन विकराल॥
अरे धीठा हीये चीठा। छोड शीघ्र वरमाल॥ रा०॥१॥ गम्भीर वयण तब कुब्ज

राज । अहो हन भागी राय ॥ निज देव पर रोश करो तुम । मुझ पर किया क्या आय ॥ रा० ॥ २ ॥ खोटा कर्म तुमारडा । न लगी पन्नणी हाथ ॥ फोकट राग क्या काम आवे । भरो वायु की बाथ ॥ रा० ॥ ३ ॥ यों दुर्गम वयण सुण भव । आन प्रज्वल्या अंग ॥ कुमरी को कर धर खेंची । चड्यो कुब्ज को रंगा ॥ रा ॥ ४ ॥ आपधी निज अनन में धर ॥ जेष्टिका हढ कर सहाय कूटवा लगा मना राय को । ज्यों नेरीयों को जमराय ॥ रा० ॥ ५ ॥ ते उलट खड्ग हणे कुब्ज का । जरा न लागे घाव ॥ कुब्जे मार्या पड्या धरणी । आश्चर्य धरे सब राव ॥ रा० ॥ ६ ॥ मृगपति देख मृग भागे । त्यों भग्या नृपाल ॥ केइक लंगडा लूला भइया । केइ डिग पहोंता काल ॥ रा० ॥ ७ ॥ खेदाश्चर्य धर कहे सुज्ञ नय । यह नर नहीं कोइ देव ॥ महा जोधा वीरे हराया । एकडले इण हेव ॥ रा० ॥ ८ ॥ मज्ञन अतिचित्त चिन्ता धरता । धर २ अंग थरराय ॥ मान मरया माहूणा का । शरमाया शूर राय ॥ रा० ॥ ९ ॥ कन्या तात भया चिन्तातुर ।

पुत्री देवें किस न्याय कुब्ज ने देतां राय कोप । निंद्रा जग फैलाय ॥ रा ॥ २० ॥
राय को देतां कुब्ज कोप । करे सब संहार ॥ दिग मुड मम होकर बैठो । सुचने
कोइ विचार ॥ रा० ॥ २१ ॥ चित्त में सन्तोष करने । नभथी उतर्यो विमाण ॥
तहथी उतर एक खेचर नरमी । करजोड़ी वंदवाण ॥ रा ॥ २२ ॥ अहो विजय नरेन्द्र
जयचन्द । बनो सदाई आप ॥ राय भूषण मोली मणी मम । बडो तेज प्रताप
॥ रा० ॥ २३ ॥ कुब्ज चिन्ते दान इच्छक । बोले विरुदावली कोय ॥ दान आपण
कर लेवाशो । फिर नरमी कहे सोय ॥ रा० ॥ २४ ॥ गिरि वैताढ्य दक्षिण श्रेणि में । रतन कू-
न्या महारूप ॥ प्रज्ञाप्ति विद्या आराधी । पूछे वर घर नृप ॥ रा० ॥ २५ ॥ मुणी लक्षण
र महिमा आपकी । वरणी गुण दर्याराय ॥ तेडवा मुझ वहां पठायो । पधारो
शीघ्र महाराय ॥ रा० ॥ २६ ॥ यों विनंती बहु विध करतो । तबही तात सखाय ।
दूसरा खेचर आकर उतर्यो । बोल्या विजय को बधाय ॥ रा० ॥ २७ ॥ उत्तर
श्रेणी विद्याधरनाथ की । कन्या गुण रूप अपार ॥ रोहणी सुणी ने पूछा वर निज ।

आंप मसरण्या अपार ॥ रा० ॥ १८ ॥ बोलावा में सचीव आयो । शीघ्र चलो रायनाथ ॥ कुब्जजी रहे मौनधारी । सव देख अति अचंभात ॥ रा० ॥ १६ ॥ यह नहीं कुब्ज छे नरेन्द्र को ॥ विजय निधान प्रसिद्ध ॥ खेचर पत युग सेव चहावे । तो नर हे को विध ॥ रा० ॥ २० ॥ कौन कहां का कुब्ज क्यों वने । संशयी आनन्द विशाल ॥ ऋषि अमोल पुण्य प्रताप की ॥ कही त्रीवीस ढाल ॥ रा० ॥ ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ अवसर ओलखी विजयजी । कुब्ज रूप कियो दूर ॥ पूरेन्द्र सम मूल रूपे रह्या । दीपे झलहल नूर ॥ १ ॥ सर्व नरेन्द्र आइ नम्या । अहो पुण्य कृपा निधान ॥ अजा जे गुनो हुवो माफ कर । वने रहो मेहरवान ॥ २ ॥ युग खेचर करे विनंती । शीघ्र चलो महाराय ॥ विजिया तात प्रणमी कहे । परण्या विना न जवाय ॥ ३ ॥ मानी विजयजी अर्ज ते । नभचर रखे सादर ॥ परण्या विजीया ठाठ से । दम्पति आदि प्रेम भर ॥ ४ ॥ परसंस्पे सव वाइ युद्ध । किया राजेन्द्र भरतार ॥ सुखे रहे विजयजी तहां । खेचर वात विसार

॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल २४ वी ॥ जिल्ला की देशी में ॥ तब तहां खेचर विजय ने
विमयो जाणी हो ॥ पुण्य फल सुखदाय ॥ तब तहां खेचर विजय ने विमयो
जाणी हो ॥ राजेन्द्र ॥ आया चेनवा नमी विजय मधु वाणी हो ॥ पुण्य फल० ॥
आया चेतवा नमी वंदिवे मधु वाणी हो ॥ राजिन्द ॥ १ ॥ यहां आय तुम्हें
लब्धि रमन भल्या दीशो स्वामी हो ॥ पुण्य० ॥ यहा० ॥ रा० ॥ इम सुणी विज-
यजी चित्त में शरम अति पामी हो ॥ पुण्य० ॥ इम० ॥ २ ॥ तम गायदी जाना
गोत्र हो सज्ज सो थाइ हो ॥ पुण्य० ॥ तम० ॥ रा० ॥ पत्नी स्वसुर ने योग्य
वचन से समझाइ हो ॥ पुण्य० ॥ पत्नी० ॥ रा० ॥ ३ ॥ बैठ विमाने आसमाने
पन्थ में चाल्या हो ॥ पुण्य० ॥ बैठ० ॥ रा० ॥ गिरि वैताड़ रूपा का पहाड
निहाल्या हो ॥ पुण्य० ॥ गिरि० ॥ रा० ॥ दक्षिण श्रेणिये पचास नगर लाणी
शोभे हो ॥ पुण्य० ॥ द० ॥ रा० ॥ जगती वागीचा युगल खेचर देखी लोभे हो
॥ पुण्य० ॥ ज० ॥ रा० ॥ ४ ॥ जयन्तीपुरे जयन्त राज सभा आया हो ॥ पुण्य०

॥ ज० ॥ रा० ॥ उतर्यां विमान से माधव समान शोभाया हो ॥ पुण्य० ॥ उ० ॥ रा० ॥ ६ ॥ खेचर पति सपरिवारे उछरंगे वधाया हो ॥ पुण्य० ॥ खे० ॥ रा० ॥ घणेंही सन्मान से ऊँचे आसन बैठाया हो ॥ पुण्य० ॥ घणे० ॥ रा० ॥ ७ ॥ अति आडम्बर लग्नोत्सव को कराइ हो ॥ पुण्य० ॥ अति० ॥ रा० ॥ जयती नामे बाइ विजय ने परणाइ हो ॥ पुण्य० ॥ ज० ॥ रा० ॥ ८ ॥ कन्यादान सुप्रमान देवन की वारे हो ॥ पुण्य० ॥ कन्या० ॥ रा० ॥ प्रज्ञाप्ति महाविद्या दीवी सुखकार हो ॥ पुण्य० ॥ प्रज्ञा० रा० ॥ ९ ॥ और यथा विधी सुसरे जमाइ सन्मान्य हो ॥ पुण्य० ॥ और० ॥ रा० ॥ अपूर्व लाभ ले अनन्द विजय अति मान्या हो ॥ पुण्य० ॥ अपू० ॥ रा० ॥ १० ॥ सर्व सुख में लीन स्वल्पकाल तहां रह हो ॥ पुण्य० ॥ सर्व० ॥ रा० दूसरे विद्याधर युत नृप सम्मती लेइ हो ॥ पुण्य० ॥ दूस० ॥ रा० ॥ ११ ॥ बैठ विमान में पुनः असमान मे चाल्या हो ॥ पुण्य० ॥ बैठ० ॥ रा० ॥ उत्तर श्रेणि साठ नगर का ठाठ निहाल्या हो ॥ पुण्य० ॥ उत्त० ॥

रा० ॥ १२ ॥ विजयन्ति नगर ऋद्धि सिद्धि भर में पधार्या हो ॥ पुण्य० ॥ वि० ॥
रा० ॥ विजयन्त भूपत हर्षित विजयजी ने जोड़ हो ॥ पुण्य० ॥ विज० ॥ राजि०
॥ १३ ॥ पुण्यपाल उमाह ने लियसी वधाइ हो ॥ पुण्य० ॥ पुण्या० ॥ रा० ॥
अति आडम्बर विजयन्ति वाह परणाइ हो ॥ पुण्य० ॥ अति० ॥ रा० ॥ १४ ॥
महाविद्या तस रोहणी नाम सु दीनी हो ॥ पुण्य० ॥ महा० ॥ रा० ॥ अति आ-
नन्द विजयजी गृहस्थ तस कीनी हो ॥ पुण्य० ॥ अति० ॥ रा० ॥ १५ ॥ थोडे
काल तहां रह पुनः करी तैयारी हो ॥ पुण्य० ॥ थोडे० ॥ रा० ॥ निजपुर जाने
स्वसुरादि रजा ग्रही जहाजी हो ॥ पुण्य० ॥ निज० ॥ रा० ॥ १६ ॥ गजगाजी
दास दासी गगन चारी दीना हो ॥ पुण्य० ॥ गज० ॥ रा० ॥ सब ऋद्धि से परि-
वर्या तस मार्ग लीना हो ॥ पुण्य० ॥ सब० ॥ राज० ॥ १७ ॥ पुनः जयन्ति
आया सुख से रहा या हो ॥ पुण्य० ॥ पुनः० ॥ रा० ॥ तहां से भी ऋद्धि अ-
धिक ले आगे सिधाया हो ॥ पुण्य० ॥ तहां० ॥ रा० ॥ १८ ॥ जयन्ति विजन्ति

नारी आवरा समानी हो ॥ पुण्य० ॥ जय० ॥ रा० ॥ काम देव ने रति प्रीति
जाडा मो जानी हो ॥ पुण्य० ॥ काम० ॥ रा० ॥ १९ ॥ और सब
ऋद्धि तेज बल कर शोभे हो ॥ पुण्य ॥ और ॥ रा० ॥ ऐसे ठाठ से काम पुरे
नल आया हो ॥ पुण्य ॥ ऐसे ॥ रा० ॥ २० ॥ पुर बाहिर उतरीया खबर संचरी-
या हो ॥ पुण्य ॥ पुर० ॥ रा० ॥ लोक सब आश्चर्य भरीया देखन हरीया हो ॥
पुण्य ॥ २१ ॥ जाणी जयजी सेना मंगल ताम सजाइ हो ॥ पुण्य ॥ जाणी ॥
रा० ॥ सामे आया लीना लघु बन्धव वधाइ हो ॥ पुण्य ॥ सा० ॥ रा० ॥ २२ ॥
नगरी सिणगार गोरडी गीत उचारी हो ॥ पुण्य ॥ नग ॥ रा० ॥ दोनो गज
आरूढ पेख्या सब परिवारी हो ॥ पुण्य ॥ दोनों ॥ रा० ॥ २३ ॥ देखी खेचर भू-
चर अति विस्मावे हो ॥ पुण्य ॥ देखी ॥ रा० ॥ मोतीयों का मेह वर्षाइ राय वधा-
ये हो ॥ पुण्य ॥ मोती ॥ रा० ॥ २४ ॥ आया मेहल मेहल मांही सुखे सहू साथ
रहाइ हो ॥ पुण्य ॥ आ० ॥ रा० ॥ वीती वारता भ्राता ने वीजय सुनाइ हो ॥

लूंटना खोमता त्रामता ठाकरा । जायजों खबर तात आवे अहींया ॥ १ ॥ आ-
ताप प्रताप महा पुण्य बलीया तणा । अरि हरी जय श्री वेग पावे ॥ टेर ॥ शूर
ने धीर रणधीर राणा मिली । जोर को तोर अधिको जणावे ॥ आताप ॥ २ ॥
मार्गीया गर्जीया आया नरेन्द्रपे । दल बल छल रोशे जगावे ॥ सुणी धर्मराय
भराय कोप अति । है कोन दुष्ट मुझ सामे आवे ॥ आ० ॥३॥ सजी सब फोज रख
चोज लडवा तणी । खोज खोवा दुष्ट अरी नर नो ॥ गज रथ पालखी भेट शूरा
मर्जी । शृंग ज्यों गार्जीया मेघ भरनो ॥ आ० ॥४॥ मयंगल मद भर्या । सिणगारी
सज कर्या । श्याम घटा छाइ ज्यों माधव आवे ॥ गुल गुलाट गर्जारव विद्युत होदा
चमक । लम्ब घराटा घोर नाद थाये ॥ आ० ॥ ५ ॥ तुरंग कुरंग ज्यों चपल पग
स्थिर नहीं । रंमाल चोफाल हणणाइ रहीया ॥ पालाण मजबूत रजपूत बेठा
मर्जा । शस्त्र सम्बन्ध कर सज थइया ॥ आ० ॥ ६ ॥ रथ संग्रामी सजा । झण-
णाट अरि लजा । जरी खोल पचरंग नेजा फरके ॥ राणा बेठा मांय खेंची धनुष्य

जमाय । मारं अरी जग लारे न सरके ॥ आ० ॥ ७ ॥ वक्कर संगीन रंगीन नयन
गंग में । झल झले अम्मी न ली भाला कर में ॥ शूर रस में छके वके अरी
नो भवो । पर रम पुर गगनूर रम्में ॥ आ० ॥ ८ ॥ यों चतुरंगी वहूजंगी सेना
वर्ना । धर्म राजा नर्णा चोजे चाली ॥ आइया कटक जहां प्रतिष्ट कुमर का ।
रण में चौगान विशाल माली ॥ आ० ॥ ९ ॥ रणां गण झडावीया । सड चडा-
वीया । निशाण फरगवीया दोनों राजा ॥ शस्त्र अस्त्र सजी थइ २ नाचे शूरमा ।
वाजे जुझारु गगनर वाजा ॥ आ० ॥ १० ॥ दयाल जय विजय यों देख चित्त
चिन्तवे । विन काम घमशाण महा अभी थावे ॥ महा पाप संग्रही निश्चय जावे
मरी । नहीं करूं यह अकृत्य भावे ॥ आ० ॥ ११ ॥ आपणी सेना को ना कहीं
लडन की ॥ दोनों आइ आगे ऊभा जो रहीया ॥ प्रति पक्ष तेन छंछेडी कू वेण
कह । फक्र वाजू संग्राम चालूनी थइया ॥ आ० ॥ १२ ॥ धर्मराय सेन रोश कर
नाखे शस्त्र कुमर पर ॥ औषधी महीमा कर नहीं लागे ॥ मेघ धारा ज्यों वर्षे शस्त्र

सेना पर ॥ देख आश्चर्य सर्व मन जागे ॥ आ० ॥ १३ ॥ आये शस्त्र सव संग्रही ने टग कियो। नि शस्त्र हुइ पिता सेना जारे ॥ शूर मगदूर क्या करे शस्त्र विना। धर २ कमान इत उत सों निहारे ॥ आ० ॥ १४ ॥ लेइ गदा दोनों बंधव लगे मारने। सेना निराधार ने भागी त्यारे ॥ धर्म राज लगे भागने कुमर जो लागने। सन्मुख ऊभा अकर तारे ॥ आ० ॥ १५ ॥ अहो वृद्धि राजीया। वालसे भागीया लाजीया केमे देग जाने ॥ कौन गुने जय विजय अपमानीया। शीघ्र फरमावे। यहाज म्हाने ॥ आ० ॥ १६ ॥ सो वीज वाये सो फल अब आवीये। दोष जणावो कुमर कहे ॥ विन न्याय किये कयो रोपीय पुत्र से। जानवा चावे हमसोइ वेरो। ॥ आ० ॥ १७ ॥ यों वचन सुणी चमक्या तव धरा धणी। वेर लेवण येह कुमर आया ॥ उमंग्यो प्रेम प्रेत्ती पुत्र यण निज। अजान अपराध हुवा कहे क्षमाया ॥ आ० ॥ १८ ॥ संक्षेप में वात दर्शाइ वीमा तनी। देवी कुरापात ये घात थाती। तुम गया नन्तर जाणी खरी चरा सह। तव महारी घणा जली छाती ॥ आ० ॥

चौकस करावी पावी नहीं तुम खबर । आरत धर आज तक रहीया ॥ १९ ॥ तुम पुण्यात्म मिल्या चमत्कार कर । हर्ष हीय न समाय भइया ॥ आ० ॥ २० ॥ हृदय चर्चा दोनों गर्क भया सुख में । सपूत पेखी सब हर्ष लावे । तो खुशी मावित्र की कैसी वरणवी ॥ ढाल पच्चीस अमोल गावे ॥ आ० ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ प्रसन्नता पेखी तात की । हर्ष्या दोनों कुमार ॥ चरणे पडी अर्जी करे । हम गुनेगार अपार ॥ १ ॥ नाहक सताया आपने । कर अविनय भरपूर ॥ सब अपराध माफी करो । मावित्र मतिये भूर ॥ २ ॥ नृपति कहे संतोष ने । गुन्हो न हुवो लगार । उज्वाल्यो कुल मोहरो । गाल्यो अरि अहंकार ॥ ३ ॥ सहु पहचानी राज पत्र । हर्षित हुवा अपार ॥ मंगलतूर बजन लगे । परसरे सवी कुमार ॥ ४ ॥ खेचर भूचर पत भया । विद्या वलीया अपार ॥ ४ ॥ जीत्या प्रवल सेना ने । हिंसा न कीनी लगार ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल २६ मी ॥ जीवो हो जीवो वीरा ॥ यह० ॥ हर्ष्या हो हर्ष्या सज्जन सहू घणा जी । प्रेक्षी जय विजय की रिद्धजी ॥ जोयो हो जोयो

प्रत्यक्ष चमत्कारन जी । विद्या घणी छ सिद्ध जी ॥ हर्ष्या ॥ १ ॥ अरी जन हो अरी जन सुणीने लाजीया जी । सज्जन पाया आणंद जी ॥ वाँटी हो वांटी वधाइ प्रेम की जी । आज मिल्या सुख सम्बन्ध जी ॥ हर्ष्या ॥ २ ॥ मुहूर्त हो मुहूर्त शुभ तव आइयो जी । विबुद्ध कहे पुकार जी ॥ पेसण हो पेसण पुरमे अवी करोजी । मुहूर्त विजय श्रेयकार जी ॥ हर्ष्या ॥ ३ ॥ वेठा हो वैठा रायजी कुंजरे जी । दोइ पास कुमर वैठाइ हो ॥ मान हो माने सुख अति मन विषे जी । छत्र सिर चमर वीजाय हो ॥ हर्ष्या ॥ ४ ॥ सेना हो सेन सब हुइ एकठी जी । खेचर चाले खग माय हो ॥ भूचर हो भूचर चाले भूपरे जी । ठाठ अनोखो देखाय हो ॥ हर्ष्या ॥ ५ ॥ वाजे हो वाजे अम्बर गजावीयो जी । हर्ष निशाण कर राय हो ॥ वोले हो वोले विरुदावली घणाजी । वन्धीजन पुण्य सरसाय हो ॥ हर्ष्या ॥ ६ ॥ लीधा हो लीधा वधाइ गोरडीजी । शुद्ध द्रव्य गीत सिणगार हो ॥ चल्या हो चाल्या मध्य रथी जी । परवरी सहू परिवार हो ॥ हर्ष्या ॥ ७ ॥ निरखे हो नि-

रवे गौरव मे गोरडी जी । मर्ग थी प्रज सवे हो ॥ हर्ष्या हो हर्ष्या ...
विजय नीर्जो । गलीया शत्रु गर्व हो ॥ हर्ष्या ॥ ८ ॥ आवहो आव राज सभा
विप जी । बेठा मो यथा योग स्थान हो ॥ भाखे हो भाखे मचीव जग रावनो
जो । मुर्गो यो मब देह कान हो ॥ हर्ष्या ॥ ६ ॥ पुरायर्थी हो पुरायर्थी अद्रि पग-
पगे जो । पावे पुरयात्म प्राण हो ॥ जयजी ने जयजी विजयजी राजीया जी ।
इहार्थी किया प्रयाण हो ॥ हर्ष्या ॥ १० ॥ मागं हो माग यत्न संतुष्टीया जी ।
दीधा तीन रतन हो ॥ पाया हो पाया राज तिहूं गोटका जी । वली सोनयन
दामपन हो ॥ हर्ष्या ॥ ११ ॥ दाखी हो दाखी चर्या सब दोहनी जी । सुणी मन
आश्चर्य पायहो ॥ आयुहो आयु सुख गिर्गाला रहोहो । आर्शीवाद सुणाय हो ॥
ह० ॥ १२ ॥ पहोंता हो पहूंता सहू निज २ घरे हो । अठाइ महोत्व कराय हो ॥
दुःखीया हो दुःखीया सहू सुखीया कीया हो । दान धर्म फैलाय हो ॥ ह० ॥ १३ ॥
आया हो आया दोनां बन्धवा जी । निज २ माता ने पास हो ॥ प्रणम्या हो प-

सासू सासरा संग लहो । विरह दुःख कीधा नाश हो ॥ ह० ॥ १४ ॥ पूत्रज हो पुत्र सपूता देखतां हो । जननी अति सुख पाय हो ॥ आशीर हो आशीरवादे दीधा जी । हृदय सहू ने लगा यहां ॥ ह० ॥ १५ ॥ दीधा हो दीधा महेल श्रेय सरवाजी । सह सुख सामग्री सजाय हो ॥ परिचयां हो परिचयां सब परिवारथी हो । दोनों रहे सुख माय हो ॥ ह० ॥ १६ ॥ जोड़हो जोड़ रचना कुमर की हो । श्रीमति मन सुखदाय हो ॥ आखीर हो आखीर राज वीर्य ही हुवा हो । सुफल व्यर्थ गयो उपाय हो ॥ १७ ॥ होनव हो होनव कोण टाली सके हो । पुण्यातम सुख पाय हो ॥ यों जाणी हो यों जाणी सुस्ती रही हो । मनही मन समजाय हो ॥ ह० ॥ १८ ॥ कुमरजी हो कुमरजी मणिाढ्य भाव धी हो । साधे इष्ट सब काम हो ॥ तोपे हो तोपे सब सज्जन भणी हो । पूरी इच्छित हाम हो ॥ ह० ॥ १९ ॥ जावे हो जावे गगने उडी करीजी । करे सहू राज संभाल हो । रहवे हो रहवे पिता की छांह में हो । सदाचित उजमाल हो ॥ ह० ॥ २० ॥ विलसे हो विलसे सुख स्वर्गे सभा हो ॥

[illegible] पद्मोद्धव पद्माँ श्रीप पद्मप्रभ का हो । [illegible]
[illegible] ॥ पद्मोद्धव पद्माँ श्रीप [illegible] को हो । [illegible]
[illegible] ॥ दोहा ॥ निज अनन्त गुंणसें । [illegible]
[illegible] मनिवर मेंसे । करना परम उपकार ॥ १ ॥ [illegible]
[illegible] महाराज ॥ हर्या कुपादि कुर्गा । ज्यों मिनी [illegible]
[illegible] परिवार को । चालो सुगत व्याख्यान । [illegible]
[illegible] गजान ॥ ३ ॥ पुज्जन बहु उच्छाह घर । [illegible]
[illegible] किया ने वंदीय । उर दर्श धर्मा लाग ॥ ३ ॥ [illegible]
[illegible] प्रमाण ॥ सर्व जीवां हित कारणां । सुनी [illegible]
[illegible] ॥ वचन चैनांर दश बोल ॥ गद ॥ लाखो नेनो हो [illegible] ।
[illegible] ॥ लावो ॥ टेर ॥ निर्वाण [illegible] । [illegible]
[illegible] गाया हो ॥ लाबो ॥ [illegible] ॥ १ ॥
[illegible] गाया हो ॥ धर्माराधन सूत्र सुणया । श्री ने [illegible] हो ॥ ला० ॥ १ ॥
पढ़त स्वभाव पद्मागलणां । गणाडम्बर को जाणो हो ॥ [illegible]

धी पाइ । गुद्द गुरज्ञाणी हो ॥ ला० ॥ २ ॥ वर्णी चक्र जो चेत सुधारे । सामग्री लम्य लगाव हो ॥ तो जालम दुःख छीण में गमाइ । अक्षयानन्द पावे हो ॥ ला ॥ ३ ॥ इत्यादि उपदेश सुणी । सहु सभा अति हर्षाइ हो ॥ सम्यक्त्व व्रत यथा शक्ति आदरी । निज स्थान आइहो ॥ लावो ॥ ४ ॥ संवेगे भीना धर्म राजा । करे गाढी अरजी हो । राज पुत्र न देइ आसुं । संयम लेवा मरजी हो ॥ ला० ॥ ५ ॥ यथा सुख करो मुनि फरमावे । धर्म में ढील न कीजो हो । वंदी गुरु नृप राज में आया । धर्म मन भीजो हो ॥ ला० ॥ ६ ॥ जय विजय जय वीर तेड बोलाइ । राज ये तुम संभारो हो ॥ तुम सम सुपुत्र में पायो । करूं सुधारो हो ॥ ला० ॥ ७ ॥ दोनों कहे आप पुण्य पसाये । राज सम्पत हम पाया हो ॥ यो राज देवो जयधीर ने । होवे मा चढ़ाया हो ॥ ला० ॥ ८ ॥ तव नृप तीनो राणी बोलाइ । वैराग्य वात जणाइ हो । जन्म सुधारूं वर्णी चक्र । तुम इच्छा कांइ हो ॥ ला० ॥ ९ ॥ प्रश्नोत्तर चहुता हुवा नन्तर । तीनो राणया वैरागी

हो ॥ कहे हय किमधिक करां रही । आप जाणो त्यागी हो ॥ ला० ॥ १० ॥ तब नृपति कहे गणधार ने । राज संभला भाइ हो ॥ जय विजय तो पाया राज अन्य । ये नृप नांह हो ॥ ला० ॥ ११ ॥ जयधीर कहे जयवीर पिता सम । हूं तो राज न लेस्यूं हो ॥ विजय बराबर भ्रात भक्ति में । सदाही रहस्यूं हो ॥ ला० ॥ १२ ॥ सब की सम्मति से विजय कुमर ने । जवरी से गादी बैठाया हो ॥ तातमात का दीक्षा ओत्सव । जयजी मन्डाया हो ॥ ला० ॥ १३ ॥ सब परिवार बाग में आया । संसारी वेष नजाया हो ॥ धारी मुनि वेष लीनी दीक्षा । जग दुःख छिटकाया हो ॥ ला० ॥ १४ ॥ सब परिवार चित्त आरत धरतो । फिर कर निज गृह आया हो ॥ संसार गुण रहता सुख में । जगरूढ सहाया हो ॥ ला० ॥ १५ ॥ तीनों सती रही सतीयां मांह । मुनि आचार्य ढिग रहा हो ॥ प्रथम ज्ञान सीखे अति चूंप । जे सिद्ध दानाह हो ॥ ला० ॥ १६ ॥ नन्तर दुष्कर करणी करता । बाह्य अभ्यन्तर शुद्ध हो ॥ दृष्टि लगाइ निर्वाण पन्थे । जो दाखी बुद्ध हो ॥ ला० ॥

१७ ॥ धर्म ऋषि धर्म ध्यान से चढीया । शुक्ल वरी शुक्ल भैया हो ॥ कर्म हटाइ केवल पाइ । मुक्ति गैया हो ॥ ला० ॥ १८ ॥ गतीयों ऊंचे स्वर्ग सिधाइ । थोडे भव मुक्ति पाइ हो ॥ जन्म सफल जो आतमा तरे । अवसरे भाइ हो ॥ ला० ॥ १९ ॥ समकित उत्सव जय विजय रासे । पुण्य अधिकार खण्ड पहलो हो ॥ ढाल सत्ताइस नाना रसमय कीनो मेलो हो ॥ गुरु प्रसादे कहे अमोलक । पुण्य का संचय करीये हो ॥ तो जय विजय कुमर के जैसे । सुख शीघ्र वरीये हो ॥ ला० ॥ २१ ॥ ❀ ॥ हरी गीत छन्द ॥ श्रीसमकितोत्सव सर्व सुखकर पुण्य फल दर्शाइया ॥ जय विजय दोनो पुण्य प्रताप । अखूट ऋद्धि सुख पाइया ॥ ऐसा जाण सुखार्थि प्राण निर्वद्य पुण्य संग्रह करो । कहे अमोलक तस पसाये, धर्मकर शिव सुख वरो ॥ १ ॥ ❀ ॥

परम पूज्य श्रीकहानजी ऋषिजी महाराज के सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनिश्री अमोलक ऋषिजी महाराज रचित–समकितोत्सव–जय विजय चरित्र का पुण्य अधिकार नामक पूर्वार्ध खण्ड समाप्तम् ॥

श्री सद्गुरुभ्यो नमः "समकितोत्सव" जयसेण विजयसेण चरित्र का सम्यक्त्व अधिकार नामक द्वितीय उत्तरार्ध खण्ड प्रारंभ ॥ दोहा ॥ प्रणमुं सिद्ध साधु चरण । वर्धमान गुरु पाय ॥ विघन हरे मङ्गल करे । द्वितीय खण्ड वरणाय ॥ १ ॥ समकित मूल धर्म वृक्ष का । व्रत शाखा कीर्ती पान ॥ यश कुसुम फल मोक्ष दे । आगार सांत मान ॥ २ ॥ विजयसेण सम्यक्त्व दृढ । पाली संकट मांय ॥ गृहवासे कंचन रही । पाये सुख शाश्वताय ॥ ३ ॥ ऋद्धि वृद्धि हुइ बहू । यशः सुख विस्तार ॥ प्रमाद तजी चित्त चटक धर । कथा सुणो धर्म धार ॥ ४ ॥ जय नृपति कर राज वर । विजय अनुज्ञाये रेय ॥ प्रीति पयोदक सारखी । अन्तर छे फक्त देय ॥ ५ ॥ बीता बहुत काल वृत ते । ऐसी तरह सुख पाय ॥ एकदा विजय कुमार ने । पश्चात स्मरण आय ॥६॥ राज देइ सचीव को । मंलुव्या यहां आय ॥ अब शीघ्र जाकर तहां । संतोषु परजा तांय ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ढाल १ ली ॥ सैयां ये मांय हुवे लगो उस दिन को ॥ यह० ॥ सुणोजी भाइ विजय चरित्र सुखकारी ॥

टेर ॥ प्रात समय श्री विजय भूपति । करी शृंगार शोभारी ॥ सु० ॥ १ ॥ प्रेमोत्सुक विनययुत कहे जय से । कामपुरे रहवा हुइ इच्छारी ॥ सु० ॥ २ ॥ इच्छा होवे सो हुकम फरमावो । हूं इच्छुं आज्ञा तुमारी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जाण आतुर नय मधुर वदे जय । कीजे जो तुम सुखकारी ॥ सु० ॥ ४ ॥ सुणी हर्षाया लश्कर सजाया । खेचर भूचर तेही वारी ॥ सु० ॥ ५ ॥ बन्ध्वादि सब जन ने संतोष्या । साथ लीनी दोनों नारी ॥ सु० ॥ ६ ॥ शुभ मुहूर्त प्रयाण कीया सब । सुखे मुकाम करतारी ॥ सु० ॥ ७ ॥ आया कामपुर ढिग जाणी प्रजा । हर्षित हुइ अपारी ॥ सु० ॥ ८ ॥ पुर सिणगारा स्वर्गपुरी सम । आये सन्मुख सज धारी ॥ सु० ॥ ९ ॥ लेगये वधाइ विजय भूप तांइ । मोतीयन मेह वर्षारी ॥ सु० ॥ १० ॥ सपरिवारे सुखे रहे विजयजी । कामही पुर के मझारी ॥ सु० ॥ ११ ॥ बन्धु वियोग खटके जयजी चित्त । मिलण मन उमंगारी ॥ सु० ॥ १२ ॥ नयधीर को राज संभलाया । दीनी सब सुख्यारी ॥ सु० ॥ १३ ॥ निज परिवार सम्पति सर्व

[illegible] आण फिरारी ॥ सु० ॥ २८ ॥ नाना विधी ऋद्धि सिद्धी ले ।
[illegible] ॥ सु० ॥ २९ ॥ उत्सव आया कामपुरे सहू । महश्र सोले
[illegible] ॥ सु० ॥ ३० ॥ कामपुर का नाम बदल कर । विजयपुर नाम
[illegible] ॥ सु० ॥ ३१ ॥ सब नृपन करीया विदा तब । यथा योग रीति सतकारी
[illegible] में जाइ दोनो की । कीर्ती जग विस्तारी ॥ सु० ॥ ३३ ॥
[illegible] । अब कहूं धर्म कथारी ॥ सु० ॥ ३४ ॥ उत्तरार्ध
[illegible] अमोल उचारी ॥ सु० ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ते
[illegible] ऋषि सर्वज्ञ ॥ लाभ स्थानक सो विचरते । तार ते
[illegible] ॥ १ ॥ भव्य पुण्योदय आवीया । विजयपुरी के बहार ॥ उतेर
[illegible] । विजय उद्यान मझार ॥ २ ॥ माली हर्षी सज हुइ । नृपति
सभा मे आय । अंजिन युत वधाइ दे । आगे सर्वज्ञ महाराय ॥ ३ ॥ नृपादि सुण
आणन्दिया । सिंहासण से उतर ॥ तहां से वंदन करी मुनि भणी । प्रेमोत्सुक

हो उर ॥ ४ ॥ अर्थवारे कोड हीरण तणी । माली को वक्साय ॥ वस्त्रा भूषणे
तोष नम । कीधो नाम वीदाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल २ री ॥ वन्धव बोल मानो
हो ॥ यह ॥ सर्वज्ञ मुनि आगम लखी । दोनों भूप हर्षाया हो ॥ धन्य दिन है
आज को । राम २ विकसाया हो ॥ भविक समकित आराधो हो ॥ आराधे सुर
नर शिर्मा । आत्म कार्य साधो हो ॥ भविक ॥ १ ॥ सेना सजन सहू सज किया ।
विधी वंदन चाल्या हो ॥ पुरजन जनी वहू तंघहुवा । जतना मे हाल्या हो ॥ भ० ॥
२ ॥ देखी मुनि वाहण तज्या । मुख यत्ना कीनी हो । तिखुत्ता विधी वंदन कियो ।
मति गुण रंग भीनी हो ॥ भ० ॥ ३ ॥ यथा योग्य वेठा सहू । ज्ञान सुणन को
रसीया हो ॥ परोपकारी मुनिवरा । बोधन तब चसीया हो ॥ भ० ॥ ४ ॥ अहो
भव्यो इन आत्म ने । भव भ्रमण के मांही हो ॥ अनन्त पुद्गल परावृतीया । दुर्लभ
देही पाइ हो ॥ भ० ॥ ५ ॥ उपना क्षेत्र आर्य विषे । उत्तम कुल अवतारो हो ॥
आयु दीर्घ पूरण इन्द्रिय । देही निर्विकारो हो ॥ भ० ॥ ६ ॥ मिल्या निर्ग्रन्थ

गुरु गिरवा । जिन वाणी सुणीज्यो हो ॥ श्रद्धो परतीतो रोचवो । करणी शक्ति
थुणी जो हो ॥ भ० ॥ ७ ॥ धर्म मूल सम्यक्त्व हे । शुद्ध श्रद्धा धारो हो ॥
परम दुर्लभ जिनवर कही । पाया भवो दधि पारो हो ॥ भ० ॥ ८ ॥ स्वल्प
क्रिया श्रद्धा महिता होवे महाफल दाता हो । अभव्य तपी श्रधा वीना । अनन्त
संसारी रहाता हो ॥ भ० ॥ ९ ॥ नक्ष विना चन्द्राननी । चन्द्र विन जिम
रजनी हो ॥ रस वती सब रस विना । विन प्रीति ए सजनी हो ॥ भ० ॥ १० ॥
जिम एना फीका लगे । तिम धर्म की करणी हो ॥ श्रधा विना निसार हे ।
नहीं पार उतरनी हो ॥ भ० ॥ ११ ॥ इण कारण धर्म इच्छु थ्रों । प्रथम
खेत सुधारो हो ॥ शुद्ध होइ समकित लइ । धर्म बीज फिर डारो हो ॥
भ० ॥ १ ॥ व्यवहारी समकिती पहिले बनो । सत सठ गुणवन्ता हो ॥ परमार्थिक
परिचय करो । परमार्थ वरन्ता हो ॥ भ० ॥ १३ ॥ वमनी पाखण्डि संग तजो ।
यह चउ श्रद्धा धारो हो ॥ क्षुधित भक्त कामी कामीनी । मेवे ज्ञानी ज्ञान वारो

नीम करंडीयो । हाट भाजन जैसी हो । धर्म की समकित गिणे । छे स्थानक पर्मा हो ॥ भ० ॥ २३ ॥ आत्मा है सदा शाश्वती । कम करती मुक्ति हो ॥ भावना निश्चय ये ग्रंथ । त्रिरत्ने मुक्ति हो ॥ भ० ॥ २४ ॥ यह व्यवहार सम्यक्त्व के । मन मठ गुण पावे हो ॥ भावे अनन्तानुवन्धि चौकडी । त्रिमोह चपावे हो ॥ भ० ॥ २५ ॥ अर्हंत देव निग्रन्थ गुरु । दया धर्म व्यवहारे हो ॥ देवात्म गुरु ज्ञान ने । धर्म शुद्ध भाव धारे हो ॥ भ० ॥ २६ ॥ सम्यक्त्व धर्म दृढावषा । देशना ये फरमाइ हो ॥ खण्ड दूजे ढाल दूसरी । ऋषी अमोलक गाइ हो ॥ भ० ॥ २७ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ श्रोता त्रप्त्या सम्यक्त्व सुधा । अत्यन्त आनन्द्या मन ॥ अपूर्व भाव श्रवण हुवा । आज दीहाडो धन ॥ १ ॥ राजेश्वर जय विजय युग । पाया हीये प्रकाश ॥ उत्सुक हो लुली २ नमी । प्रणम्या करे अरदास ॥ २ ॥ स्वामीजी कृपा करी । कहो भवन्तर विध ॥ संजोग वियोग हम किम लीयो । कैसे मिली यह रिढ ॥ ३ ॥ उपकार कारण जाणके । श्री सर्वज्ञ भगवन्त ॥ पूर्व भव जय

विजय को । देखा जैसा कथन्त ॥ ४ ॥ करणी भरणी विश्वम । ए ५ ...
नाथ ॥ प्रत्यक्ष दर्खाये पारखा । नृपादि सर्व सभाय ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल ३ री ॥
जय जिनराया २ ॥ यह० ॥ सुणो सुणो भाइ २ । पूर्व भवों की सुकृत्य कमाइ ॥
सुणो ॥ श्रां ॥ भूतिलकपुर नगर भलेरो । धन धान्य ऋद्धि सुख घणेरो ॥ सुणो
॥ १ ॥ श्री जय भूप रुधारणी राणी । बुद्धि विजय प्रधान गुण खाणी ॥ सु० ॥
२ ॥ तहां गृह ऋद्धिवन्त व्यापारी । भानु भमर नाम भाग्य धारी ॥ सु० ॥ ३ ॥
श्राद्ध पक्ष पर्व एकदा आया । जीन व्यवहार भुक्त निपाया ॥ सु० ॥ ४ ॥ तात
निर्था दोनो न दीहाडे । मित्र स्वजन भिक्षुक जीमाडे ॥ सु० ॥ ५ ॥ चीर पुरी
ग्मवान जीमावे । तव श्वानी एक तहां चल आवे ॥ सु० ॥ ६ ॥ परमानन्दो भाज-
न मुख डाला । देखा दोनों भाइ रोशे हुवा काला ॥ सु० ॥ ७ ॥ जेष्टिक सजोर
कम्मर मारी । धरणी पडी मूर्छित तेवारी ॥ सु० ॥ ८ ॥ तव एक भेंसा दोड तहां
आया । दुर्बल थाक भूखे घबरायो ॥ सु० ॥ ९ ॥ पाडो कुत्ती दोनों रोने लागा ।

पूर्व भव का नेह तस जागा ॥ सु० ॥ १० ॥ नरवाणी से म्हेसो उचारे । देखे ताके सब आश्चर्य धारे ॥ सु० ॥ ११ ॥ सुणे पण पूरी समझ न पावे । भेद जाणन सबी के मन चावे ॥ सु० ॥ १२ ॥ भव्य भाग्ये श्रुत केवली आया । देखी सर्व अति हर्षाया ॥ सु० ॥ १३ ॥ भानु समर लली वंदना कीनी । शुद्ध भिक्षा उत्कट भाव से दीनी ॥ सु० ॥ १४ ॥ फिर कहे कृपा करी प्रकाशो । अपूर्व आज यह देखो तमाशो ॥ सु० ॥ १५ ॥ पूर्व ज्ञाने उपयोग लगाइ । कहे मुनि सुनो कर्म कथाइ ॥ सु० ॥ १६ ॥ पाडो पिता कुत्ति तुम माजी । जिसका आज यह श्राद्ध कियाजी ॥ सु० ॥ १७ ॥ मात मरी से प्रीति इनसे जाणो । भवोभव पाइ ऐसी हाणो ॥ सु० ॥ १८ ॥ महा मिथ्यात्व पाया विखवादो । हुवा दुर्बल चोज तुम खादो ॥ सु० ॥ १९ ॥ निजके काम निज पीडाणो । सुणी नाम इहांणो लगाणो ॥ सु० ॥ २० ॥ अकाम कर्म नहूंथेया । जाति स्मरण ज्ञान दोनों लेया ॥ सु० ॥ २१ ॥ कहे सभी कुत्ति नारी तांइ । धिक्कार पडो से पुत्र कमाइ ॥ सु० ॥ २२ ॥

आपणे नाम भोजन निपजाया । लादी लाय मुफ जरा न चखाया ॥ सु० ॥
२३ ॥ ये चोर ल्याइ कम्मर तोडाइ । दोष ने किनका स्वकर्म कमाइ ॥ सु० ॥
२४ ॥ ये दाना गर्मा कर रखा वातां । रखे संशय तुम जरा मन लाता ॥ सु० ॥
२५ ॥ निधान बनावे पाडो तुम तांइ । तो सत्य ये समफ जो भाइ ॥ सु० ॥
२६ ॥ पाडे गोशाला पग थी कुचरे । खोदी देखे भानु द्रव्य निसरे ॥ सु० ॥ २७ ॥
प तोन आट सत्य वात जणाइ । भानु संतोष्या दोनों के तांइ ॥ सु० ॥ २८ ॥
दोना निश्च मिथ्यात्वाक्षिटकाइ । मुनि वोधे सम्यक्त्व पायाइ ॥ सु० ॥ २९ ॥
आर पणा जन धर्म ने धार्या । मुनि उपकार करीने पधार्या ॥ सु० ॥ ३० ॥ ढाल
तीसरी अमोलक गाइ । सत्संगति महालाभ दाताइ ॥ सु० ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥
ससर भानु दोनों मिली । कर तिर्यंच की सेव ॥ खान पान वस्त्र भूम से । पोषे
तस अहमेव ॥ १ ॥ तीर्यंच दोनों ज्ञानवन्त । पाले सम्यक्त्व शुद्ध । यथा उचित
करणी करे । धर्म में प्रेमी बुद्ध ॥ २ ॥ आयु अन्ते अणसण करी । प्रथम स्वर्ग

मझार ॥ देव देवी पण ऊपना । जाणी ज्ञान मझार ॥ ३ ॥ तत्त्विणे आइ पुत्र प । दमाइ निज रिद्ध ॥ सम्यक्त्व धर्म पमाये मे । हूव्या तिरे यह विध ॥ ४ ॥ प्रत्यक्ष फल देखा धर्म का । धर्मी हुवा घणा लोक । सुरसुरी स्वर्ग गया । भोगवे पुण्य का थाक ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ४ चौथी ॥ मानव जन्म २ रत्न तेने पायोरे ॥ यह० ॥ समकित रत्न २ सदा सुखदाइजी । धारो भव्य हुलसाइ ॥ स० ॥ टेर ॥ अमर भानु धर्म पाप फल देख्या । प्रत्यक्ष परिचय लेख्याजी ॥ अति चित्त हर्षाया । भव्य २ मनगाया । सुख पन्थे लगाया ॥ सम ॥ १ ॥ अति दुर्लभ येह अवसर पायो । लेवो लावो चित्त चायोजी ॥ यों धरी उत्साहो । शुद्ध सम्यक्त्व गाहो । ले व्रतादि लाहो ॥ स० ॥ २ ॥ दान देवे पर्वे शील पाले । तप करे धर्म उजमालेजी । पण कर्म गति भारी । वक्र फिरे आडी आरी । देवे बुद्धि बिगाड़ी ॥ स० ॥ ३ ॥ मन मांहे धर्म जाणे साची । प्रमाद वच्यो पड्या कानाजी । भोग सुखे ललचाइ । रह्या मोह मझाइ । करणी करी ढीलाइ ॥ स० ॥ ४ ॥ मुनि

है समकित सेठा रहा
[illegible] करचा न जवाइ । तो धर्म अवण कैसे थाइजी ॥ दोनों भाइ के दो दो लुगाइ ।
[illegible] बेटा । करे अन्य में खेटा ॥ स० ॥ ५ ॥ धर्म ज्ञान सिखाडी । करी सम-
[illegible] समझाइ ॥ सुसंगति मे लगाडी । तास ते धर्म
[illegible] ॥ स० ॥ ६ ॥ उन २ दोनों बाइ के दो दो सहेली । धर्म आत्म
[illegible] ॥ ते पण होगइ शाणी । सत्य जिन मार्ग को जाणी । भानु संग विवाद मचा-
[illegible] ॥ स० ॥ ७ ॥ एकदा कोइ पाखण्डी आयो । करी चरचा कूरो ॥ स० ॥
[illegible] ॥ जैसो महंत को कुरो । पण किसी को नहीं जणाइजी ॥ नहीं
[illegible] ॥ [illegible] वचन शंका भानु ने आइ । मन में रख्यो सन्दे ॥ स० ॥ ९ ॥ केताक
[illegible] । नहीं वन्द निकन्द । फिर शंका भराइ ॥ यों तीन
[illegible] । फिर जोग बण्यो तैसो आइजी । एकदा जेष्ट भानुनी नारी । ऊभी
[illegible] । गया कर्म बन्धाइ ॥ स० ॥ १० ॥ बोलावे सेठाणी । कोइ कार्य प्रेराणी
[illegible] ॥ तहां आइ मतराणी ।

॥ स० ॥ सुण शेठाणी गुमराइ भराणी । बोले जेहसे ताणीजी ॥ तूं छे नीच जात नारी । हम संग नहीं करां थारी । बोलत आवे लजारी ॥ स० ॥ १२ ॥ नित्य लेजावे तूं अशुचि बुहारी । क्या करे बरोबरी म्हारीरी । इम बहु धिकारी । मन मत्सर भरारी । नीच गोत्र बन्ध्यारी ॥ स० ॥ १३ ॥ पाली समकित निर्मल सवही । आयु अन्त लयो जवहीजी ॥ प्रथम स्वर्ग मझारी । देव देवी ऊपनारी । ऋद्धि पुण्यानुसारी ॥ स० ॥ १४ ॥ आयुपल्योपम पूर्ण कराइ । यहां आइ सहू मिल्याइजी ॥ भानु जय नृप थइया । भमर विजय लघु भैया । पूर्व प्रेम लुब्धैया ॥ स० ॥ १५ ॥ तीनों तत्व तुम शुद्ध आराधा । ता पुण्य त्रिखण्ड साध्याजी । तीनों रत्न पायाइ ॥ मणी औषधी मंत्र तांइ । ए कुल धर्म पल्याई ॥ स० ॥ १६ ॥ भानु जिन वचने शंक लाया । जयजी तीन चक्र दुःख पाया जी । भमर की शुद्ध श्रधा । तो नहीं पाइ बाधा । संच्या सम सुख लाधा ॥ स० ॥ १७ ॥ कुल मद कीनों स्वरूपां वाइ । तेहसे वेश्या घर जाइ जी । कामलता कहाइ ॥ पूर्व प्रेम

आकर्षाइ । मिल्या जयजी आइ । हुइ पक्की सगाइ ॥ स० ॥ १८ ॥ आर सज्जन मिल्या सब भाइ । न्यारा २ दीना वताइ जी । सुणीयों जिन वाणी । हर्षायो करे सब प्राणी । वात सेन्दी लगाणी ॥ स० ॥ १९ ॥ मति ज्ञाना वरण कम थया । जाति स्मरण ज्ञान लिया जी ॥ सुणी जेसी जणाणी । अति हीये हर्षाणी । दृढ सम्यक्त्व ग्रहाणी ॥ स० ॥ २० ॥ श्रावक का व्रत सब आदरीया । शमा सोगन बहु करीया जी ॥ ढाल चतुर्थी थाइ । ऋषि अमोलक गाइ । धर्म सदा सुखदाइ ॥ सम ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ श्री जिनजी रहे तहां लगे । सेवी विजय राजान ॥ तत्वार्थ धारण किया । निसंशय मतिमान ॥ १ ॥ जिनजी विचरे जिन पदे । नन्तर विजय राजान ॥ अमरी पडह बजावीयो । तीनों खण्ड के म्यान ॥ २ ॥ नवकार आवे जेहने ताम माफ कीयो दाण ॥ ज्ञान शाळा सहू स्यात कर । धर्मा न्नति मंडाण ॥ ३ ॥ धर्म अर्थ काम सेवता ऊपना नन्दन तीन ॥ नन्द आनन्द सुन्दर श्री । कीया धर्मार्थ प्रवीन ॥ ४ ॥ धर्म जग मंडण करो । रहे सहू सुख

पाय ॥ अब परिचा सम्यक्त्व की । जिनेन्द्र सुरेन्द्र कथाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ५ मी ॥ अजनाजी के रास की देशी में ॥ तोजी महा विदेह क्षेत्र के विषे । चोथो आरो सदा रह्यो वरतायतो ॥ विजय पुष्कलावति शोभती । तहां विचरे सिमन्धर जिनराय तो ॥ सर्वज्ञी सर्व दर्शनी । सुरेन्द्र नरेन्द मुनिन्द्रे पूजाय तो ॥ देशना सुणन को आवीया । सुधर्मा स्वर्ग पति एकदाय तो ॥ समकित की महिमा सुणो ॥ १ ॥ शक्रेन्द्र दाहिण दिगपति । भरत क्षेत्र पर अति अनुराग तो ॥ प्रश्न पूछे नमन करी । मुझ को फरमावो अहो वीतराग यतो ॥ इस काले को भरत में । है धर्मात्मा ऐसो महा भाग्य तो । पाले सम्यक्त्व निर्मली । प्राणान्त न लगावे जरा दाग तो ॥ सम ॥ २ ॥ वागरे जिन विजय पुरपति । विजयराय शुद्ध सम्यक्त्वी जाणनो । देव दानव चला न सके । न लगावे दोष जावे कदा प्राणनो ॥ कुदेव गुरु इच्छे नहीं । शंका कंखा कोइ न शके आण तो । यों सुणी हर्ष्या देविन्द्रजी । वन्दी स्वर्ग गया बैठ विमाण तो ॥ सम ॥ ३ ॥ सुधर्मी सभा

तोही सुर मुक्त नाम कहात तो ॥ यों अभिमान निश्चय करी । तत् चीण चल कर भरत में आत तो ॥सम॥ ७॥ समण भूत प्रतिमा धारी। चुलक श्रावक का रूप बनाय हो। निर्ममत्व अल्प परिग्रही। सर्व शास्त्र को जाण कहाय तो॥ जाणे दुक्कर क्रिया तप करी। हाड पिंजर कियो तन सुकायतो ॥ आडम्बर अधिको करी। "जैन पण्डित" नाम प्रसिद्धी पाय तो ॥ सम ॥ ८ ॥ ग्रामादि में विचरता। बहू मराडाणे विजयपुर आय तो ॥ सुणी श्रावक घणा हर्षाया। वन्दे नमें धर्म स्थानक लाय तो ॥ इर्या सोधत चालता। आया नृप पोषध शाल माय तो ॥ लेइ रजा तिहां उतरीया। दया चमा शील शुद्ध जणाय तो ॥ सम ॥ ९ ॥ लोलपी नहीं रसना तणा। भिक्षावृति से लेवे लुख सुख आहार तो ॥ उद्देशीक नित्य पिण्ड वर्जता। ऐषणा अधिक कठिण आचार तो ॥ सद्बोध करे विविध परे। गहन शास्त्रार्थ करे विस्तार तो ॥ हेतु कथा में रुचाविइ। गावे रास रागे ललकार तो ॥ सम ॥ १० ॥ परिषद् घणी अकर्षावइ। त्याग प्रभावना होवे उपकार तो।

विजयराय नृप हर्षाया । मिलण आया पोषध शाल मझार तो ॥ सुखशाता पूछे
विराजाया । ते भी सुख पूछे मधुर उचार तो ॥ लोक प्रसंस्या करे घणी । ते
निज आत्मन देव विचार तो ॥ सम ॥ ११ ॥ ज्ञान क्रिया व्यवहार शुद्ध । उपकारी
गुणी नृप तस जाण तो ॥ राख्या तहां अग्रह करी । वृद्धि करण सुकृत्य धर्म ज्ञान
तो ॥ आप भी आवे का अवसरे । धर्म चरचा करे कर पेछान तो ॥ चुगला
[illegible] तनयणा । मोहाया कर सेवा सन्मान तो ॥ सम ॥ १२ ॥ माया वीछले
[illegible] का । तो अन्य की क्या कथा कहाय तो ॥ गुणानुरागी रीजे गुण लखी ।
[illegible] जनो जगाय तो ॥ पंचमी ढाल अमोलक कथी । श्रोता सुणो आगे
चित्त लगाय तो । अद्भुत रचना रचे असुर ते । विजय निकन्द मिथ्याकन्द तांय
तो ॥ सम ॥ १३ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ विजयराय निजवस्य करण । देवत रचे उपाय ॥
[illegible] श्रुत केवली डिग । रही ज्ञान धार आय ॥ १ ॥ गहन देश शास्त्रज
तणी । एकान्त नृपने वताय ॥ प्रश्नोत्तर करे रायजी । ते भी नेमी पूछ आय ॥२॥

अपूर्व लाभ ज्ञान को लही । आनन्दे राजान ॥ अहोनिश तस सेवा करे । सुर नहीं दे पहचान ॥ ३ ॥ काल वहुयों वीतीयो । प्रतीत्या भूपाल ॥ विनीत शिष्य परे देवना । वचन करे अंगीकार ॥ ४ ॥ निज वस्य भयो जाणी रायने । साधन इष्ट तेवार ॥ विरुधा चरण करे देवता । ते सुणो सुज्ञ नरनार ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ६ ठी ॥ आठ कूवा नव वावडी ॥ यह० ॥ श्रावक कहे सुणो चित्त दे ॥ राजेश्वरजी ॥ जैनधर्म श्रेयकार ॥ अहो धरणी धरजी ॥ पण अनमिलती कथनी घणी ॥ राजेश्वरजी ॥ अव ते में करुं उचार ॥ अहो धरणी धरजी ॥ १ ॥ सिद्ध अनन्ता होगया ॥ राजे० ॥ हुवे हे होसी अनन्त ॥ अहो ध० ॥ जीवरासी संसारी जी ॥ राजे० ॥ कदापि नहीं घटन्त ॥ अहो ध० ॥ २ ॥ राय कहे तुम साभलो ॥ ये श्रावकजी ॥ श्रीमत तहामेव सत्य ॥ अहो सुणो श्रावक जी ॥ व्यवहार अव्यवहार रासजी ॥ सुणो श्रा० ॥ दोयरुपी जिन गत ॥ अहो सुणो ॥ ३ ॥ अव्यवहार रासी मे नीकली ॥ सुणो ॥ व्यवहार रासी

जो आय ॥ अहो ॥ तास संख्या ए जिन कही ॥ सुणो ॥ ते कमी नहीं थाय ॥
अहो ॥ ४ ॥ जितने जीव शिव पद लहे ॥ सुणो ॥ तितने व्यवहारी होय ॥
अहो ॥ अव्यवहार अनन्त सदा रहे ॥ सुणो ॥ सर्वज्ञ रहे सब जोय ॥ अहो ॥
५ ॥ भवधारी देवता कहे ॥ राजे ॥ माधु महाव्रत के धार ॥ अहो ॥ तीन करण
तीन जोग में ॥ राजे ॥ जीव हिंसा परिहार ॥ अहो ॥ ६ ॥ करे गमनागमन
नदी ऊतरे ॥ राजे ॥ तहां निश्चय जीव हणाय ॥ अहो ॥ आज्ञा दी जिन एह-
वी ॥ राजे ॥ विरुद्ध परत्यक्ष यह देखाये ॥ अहो ॥ ७ ॥ भूप कहे नहीं संकीये ॥
सुणो ॥ प्रभु मत दोय प्रकार ॥ अहो ॥ उत्सर्गरु अपवाद के ॥ सुणो ॥ उत्सर्ग
में यह निवार ॥ अहो ॥ ८ ॥ अपवाद को प्रायश्चित लहे ॥ सुणो ॥ कारण रु
करण उपकार ॥ अहो ॥ अटका काम चालण कह्यो ॥ सुणो ॥ पण हिंसक आज्ञा
मधार ॥ अहो ॥ ९ ॥ जैसे पिता कहे पुत्र ने ॥ सुणो ॥ मत कर ख्याल कि
नाल ॥ अहो ॥ जो न रह्यो जावे तुमथी ॥ सुणो ॥ तो एक घडी पर मत बोल

॥ अहो ॥ १० ॥ यह हेतु जिन पिता परे ॥ सुणो ॥ समण पूत्र सम जाण ॥
अहो ॥ नहीं निभे तो सो निभावना ॥ सुणो ॥ अपवाद भाख्यो भगवान ॥ अहो
॥ ११ ॥ भेषधारी सुर किर कहे ॥ राजे ॥ लोटा घडा कूवा मांय ॥ अहो ॥ पाणी
के जीव असंख्य हे ॥ राज ॥ सब बरोबर केसे थाय ॥ १२ ॥ तर्क करी भूधव
कहे ॥ सुणो ॥ ज्यों लाख औषधी का तेल ॥ अहो ॥ मासा तोला शेर मण
विषे ॥ सु० ॥ लाखही औषधी मेल ॥ अहो ॥ १३ ॥ अन्य हेतु वली यह हे ॥
सु० ॥ एक दश सत सहश्र लाख ॥ अहो ॥ सब ही संख्याता सब कहे ॥ सु० ॥
तेमे असंख्याता भाख ॥ अहो ॥ १४ ॥ सुर यह श्रद्धि सचे ॥ रा० ॥ पण पंचा-
स्ति काय ॥ अहो ॥ तास आधार सब जीव ने ॥ रा० ॥ चल स्थिर विकाश
क्षय जाय ॥ अहो ॥ १५ ॥ तेतो दृष्टी आवे नहीं ॥ सु० ॥ ते कैसी तरह से म-
नाय ॥ अहो ॥ नरेन्द्र कहे जिन वचन में ॥ सु० ॥ फरक पाव रति नाय ॥ अहो
॥ १६ ॥ अरूपी सो कहे सूत्रमें ॥ सुणो ॥ सो निजरे कैसे आय ॥ अहो ॥ पण

परखीन ॥ शंकित कांक्षित न हुवे । लियो शुद्ध मत चीन ॥ ३ ॥ परन्तु प्रत्यक्ष दाखवो । जैन की विपरीत रीत ॥ चलावूं जो इण भणी । तोही महारी होवे जीत ॥ ४ ॥ मिथ्या वचन सुरेन्द्र को । किया विना न जवाय ॥ यों द्रढता फिर चित्त धरी ॥ बोले मो सुणो वाय ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल ७ वी ॥ सखी पणीया भरन के माजाण ॥ विणजारा के राग में ॥ तुम सुणीयो जी राय हमारी । कौन जैन धर्म शुद्ध धारी ॥ टेर ॥ भेष धारी सुर कहे मधु वाणी । धन्य तुमने जैनागम रहस्य जाणीजी । जावूं तुम बुद्धि की बलीहारी ॥ कौन ॥ १ ॥ जिन वचन सत्त में थप्या । मुझ संशय आप सब मरचाजी ॥ अपूर्व युक्ति जमारी ॥ कौ० ॥ २ ॥ जैन मत सत्य जग मांही । अन्य नहीं इण सहीजी ॥ पण कौन सामर्थ्य पालवारी ॥ कौ० ॥ ३ ॥ राय कहे चौसंघ अराधे । यथा शक्ति क्रिया सब साधे जी ॥ देखो साधुजी शुद्ध आचारी ॥ कौ० ॥ ४ ॥ महा व्रतादि क्रिया महा पाले । जिनाज्ञा प्रमाणे चालेजी । अन्यमत में न कोइ इसारी ॥ कौन ॥ ५ ॥ तव सुर

में मुनिवर लोलेजी छत्ती त्यागी क्या करे इच्छारी ॥ कौ० ॥ १५ ॥ संयम निर्वाह का [illegible] पोषे । केइ तपस्या कर तन शोषेजी । ज्ञानी ध्यानी वैयावची उपकारी ॥ कौ० ॥ १६ ॥ खोटी दृष्टि कर नहीं देखे । नारी मात्र मा वेनकर लेखेजी । हे साधुमति सच्चा ब्रह्मचारी ॥ कौ० ॥ १७ ॥ महासतीयों केई गुणवन्ती । सूत्रार्थ गुरु मुख सीखंतीजी । तासो आप तिरे पर तारी ॥ कौ० ॥ १९ ॥ जे श्राविका ज्ञान गुणवन्ती । ते केइक संयम आचरन्ती जी । केइ देवे सती सन्त ने सातारी ॥ कौ० ॥ २० ॥ ज्ञान से गुण वृद्धि पावे । यों जाण सुनि पढावे सुणावे जी ॥ पापी पाप धरे चित्त मझारी ॥ कौ० ॥ २१ ॥ देव कहे में भी संयम पाल्यो । बाह्याभ्यान्तर भिन्न निहल्यो जी ॥ तहसे श्रावक भेष लीयो धारी ॥ कौ० ॥ २२ ॥ मे कदापि न बोलूं झूठो । नहीं साधु पर में रुठो जी । जैसी देखी तैसी उच्चारी ॥ कौ० ॥ २३ ॥ जो भेला रहे सो जाणे । भोला भेदन सके पेछाणे जी । जो गामे शुद्ध व्यवहारी ॥ कौ० ॥ २४ ॥ प्रथम परिक्षा कीजे । फिर ओलंभो मुजने

[illegible] ॥ श्रावकजी भी संग धाइ । आवे सब चान मझारे । पंन [illegible] ॥ जरा ॥ १ ॥ सब मुनिवरो के नांइ । तृगादि सरे वंचाइ । [illegible] रहाइ । वैठा सब गए योग्य स्थाने । उमंग मुनि वाणी सुणवाने
आचार्य सद्बोध फरमावे । तत्वार्थ गहन दर्शावे । ते सुगम करी
[illegible] तज्ञान होवे सुणे के । आत्म हित लेवे नामे लुण के ॥ जरा
[illegible] सूत्र ब्रडडाइ । उत्सर्ग एकान्त स्थपाइ । न अपवाद जरा
[illegible] आश्चर्य पाया । कहे धन्य जग मुनिराया ॥ जरा ॥ ४ ॥
[illegible] चाले । सूक्ष्म ऐसा दोष टाले । सो टोटो क्यों करणी में घाले ।
[illegible] फरमाया । दान महात्म सूत्र ब्रडाया ॥ जरा ॥ ५ ॥ श्रावक
[illegible] वताइ । जो भेष धारी पालताइ । ये उत्कृष्ट श्रावक कहाइ ॥ गुणी
भमी देखी रचना ॥ जरा ॥ ६ ॥ [illegible]

[illegible] मग जोघाइ ॥ श्रावकजी भी संग धाइ । आये सब बाग मझारे । पंच [illegible] पाये पारे ॥ जरा ॥ १ ॥ सब मुनिवरों के तांइ । नृपादि सर्व वंद्याइ । [illegible] रहा रहाइ । बैठा सब गण योग्य स्थाने । उमंग मुनि वाणी सुणवाने [illegible] ॥ २ ॥ आचार्य सद्बोध फरमावे । तत्वार्थ गहन दर्शावे । ते सुगम करी [illegible] । श्रोता तल्लीन होवे सुण के । आत्म हित लेवें तामे लुण के ॥ जरा [illegible] ॥ साधु [illegible] सूत्र द्रढाइ । उत्सर्ग एकान्त स्थपाइ । न अपवाद जरा [illegible] । श्रोता सुण आश्चर्य पाया । कहे धन्य जग मुनिराया ॥ जरा ॥ ४ ॥ जो [illegible] पर चाले । सूक्ष्म ऐसा दोष टाले । सो टोटो क्यों करणी में घाले । [illegible] फल श्रांत ही फरमाया । दान महात्म सूत्र द्रढाया ॥ जरा ॥ ५ ॥ श्रावक [illegible] बताइ । जो भेष धारी पालताइ । ये उत्कृष्ट श्रावक कहाइ ॥ सुणी सब धन्य २ तब कहता । भेषधारी भूमी देखी रहता ॥ जरा ॥ ६ ॥ फिर सम्यक्त्व को समझाइ । जो नृपन चित्त में पाइ । केइ रागणीयों भी सुणाइ ॥ इत्यादि

मुज तो भरम भूत दरशाइ ॥ जरा ॥ १३ ॥ तुप मांने परिक्षा करस्यूं। जो शुद्ध दस्मा अन्दरस्युं। तो चरण में माथो धरस्युं। दिखते हैं सरीखे मणी और कांच। माणम हार लगे जब आंच ॥ जरा ॥ १४ ॥ राय कहे इतनो मत तानों। जो नर हैं रतन गुण ज्ञानो। दीया है तैसा ही व्याख्यानो। बोली से भेद सर्व लीजे। विशेष परिक्षा क्या कीजे ॥ जरा ॥ १५ ॥ श्रावक कहे अभी मंगाओ। गुप्त राते इहां चल आओ। फिर आचार गोचार बताओ। तो मालुम सही पड़ जासी। मानो इति बात मेरी खासी ॥ जरा ॥ १६ ॥ ऐसी बातों सुर बनाइ। आयो सो उपाश्रय मांही। नृप निज मन्दिर यहां तांई। आगे परिक्षा दिखावे गाइ। ढाल बसु अमोल ऋषि गाइ ॥ जरा ॥ १७ ॥ दोहा ॥ जामिनी जाम जदा गाइ। सुर भूपत ढिग आय। कहे चालो अब बाग में। देखण किरिया मुनिराय ॥ १ ॥ राय कहे क्या देखिये। देखे व्याख्यान मांय। छिद्र पे मले माछ के। पातक आतम भराय ॥ २ ॥ देव कहे ये ही जाल

[illegible] तो ॥ सुणो ॥ ४ ॥ कहां सुरेन्द्र को आवास । कहां विष्टा
[illegible] मगम ने ए कर्म विमास । क्यों करो उत्तम करणी को नास।
[illegible] दम्यते हो ज्ञानी गुणी भणीयां ॥ कर्म ज्ञानी हो गुण ने
[illegible] आर कांने कणीयां । धांके हाथ लगी संयम मणीयां ॥ सु०
[illegible] स्वरपर बैठे । गादी तज ऊकरडे लेटे । सिंहासण तज बैठे
[illegible] कम से रहो छेटे ॥ सुणो ॥ ७ ॥ अमृत ढोली विष क्यों
[illegible] मखमल तज कम्बल सींवो । इन कर्म भोगवसो घणी रीवो । जो
[illegible] जाओ ॥ सुणो ॥ ८ ॥ अनन्त संसार भ्रमण करसो । नरक
निगोद में पचमरसो । फिर सम्यक्त्व दीपक नहीं करसो । जो ऐसा कर्म से नहीं
डरसो ॥ सुणो ॥ ९ ॥ अति मुशकिल नरकुल पावो । अति दुकर जैन कुल
[illegible] । तो श्रावक पणो ले नावो । अति २ दुर्लभ साधु थावो ॥ सुणो ॥ १० ॥
ज्यों कगान ने चिन्तामणी पाइ । तिण कंकर जाणी गमाइ । तैसे तुम तणी यह

को तुम पालभो । गुम देख यो पोल ॥ १ ॥ १ ॥ शरल स्वभाव हे म्हारो । करण न जाण् कपट ॥ वाह्याभन्तर एक सो । न रखुं पाय दपट ॥ २ ॥ परभव को डर मुझ अति मखं न माया लगार ॥ पेखो जरा आगे वढी । वृद्ध मुनि आचार ॥ ३ ॥ सुण चित चमक्या महीपति । श्रावक कर धार्यो ताम । चलो देखें थगे वलो । कैसे मुनि गुण धाम ॥ ४ ॥ वृक्ष छांय में छिपत सो । देखे थागे जाय ॥ अघटित एखो कृत्य को । आश्चर्य अति चित पाय ॥ ५ ॥ ॥ ढाल ॥ १० वी ॥ चेतनजी, वारणे मत जावोजी ॥ यह० ॥ राजेश्वर द्रढ सम्यक्त्व के धारीजी । देखो देवमाया नडिग्यारी ॥ टेर ॥ एक साधुजी जूवा खेलेरे । चौक नखी दुखी डाव में लेरे । हार जीत में धन घणो देले ॥ राजे० ॥ १ ॥ एक मुनि आमिस रांधेरे । घणा मशाला युक्त सवांदेरे । करे परसंस्या कर्म वान्धे ॥ राजे० ॥ २ ॥ एक मदिरा सीसी ले आयारे । सा आरोगी तवही मुर-झायारे । नाचे गावे चंग वजाया ॥ राजे० ॥ २ ॥ एक जति रख्या वेश्या रमाइरे ।

तब नगर में चाल्या रायार। मन माहे अति मुरझायारे ॥ राजे० ॥ १३ ॥ तब श्रावक कहे फरमावोरे। में कह्यो सो देख्यो उपावोरे। मुझ वचने परतीत जरा लावो ॥ रा० ॥ १४ ॥ राय कहे आचार्य जो मोटारे। सो तो कधी न करे कर्म खोटारे। ये तो मिल्या कुमति घाल्या गोटा ॥ रा० ॥ १५ ॥ यों बोलता महेल पास आयारे। तिहां आचार्य निकलता देखायारे। पैछाणया प्रकाश के मांया ॥ राजे० ॥ १६ ॥ सो तो अन्तेवर में से आवेरे। एक राणी ने साथ लेजावेरे। देखी राय अति शरमावे ॥ रा० ॥ १७ ॥ पण मोन नृपति तब राखेरे। कौन विश्व में फत्थर न्हाख्येरे ॥ विस पापी कृत कर्म पाखे ॥ राजे० ॥ १८ ॥ अब किन कों जाय पूकारूंरे। थलायु हुवा लूंटारूरे। सब खोटा मिल्या कैसे वारू ॥ राजे० ॥ १९ ॥ यह तो ठग की टोली देखाइरे। नहीं जैन मुनि निश्चय थाइरे ॥ करूं उपावजों कुमत विरलाइ ॥ रा० ॥ २० ॥ ढाल दशमी अमोलक गावेरे। देवराजा को चित्त चलावेरे। धन्य विजय चक्रे दृढ रहावे ॥ राजे० ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥

श्रद्धे परतीत चित रुचे । आराधू में निज सत्व ॥ सत्य ॥ ४ ॥ कदा एक हीरो खोटो दिखे । सब खोटा जाणो नाय ॥ खोटा सो तो खोटा ही है । खरा खोटा नहीं थाय ॥ सत्य ॥ ५ ॥ एक वक्र लूंटावे मार्गे । दूजी वक नहीं जाय । तो रस्ता सब बन्ध हुवे । जगरुडी नाश पाय ॥ सत्य ॥ ६ ॥ परम मार्ग वीतराग को । घणा पालणहार ॥ यह टोली मिली पाखंडी की । दूजा नहीं इणसार ॥ सत्य ॥ ७ ॥ महामुनि घणा भरत में । शुद्ध पाले आचार ॥ तैसेही सतीयां घणा । उनको म्हारो नमस्कार ॥ सत्य ॥ ८ ॥ अवधि ज्ञान देखे देवता । नृपति स्थिर परिणाम ॥ पाखण्ड पंथी दृढ घणा हुवा । देव विस्मय रयो पामे ॥ सत्य ॥ ९ ॥ प्रकट कहे गुणी गायजो । गुणी अवगुण न जोय । थे तो फस्या हो दृष्टि राग में । शुद्ध मति कैसी होय ॥ सत्य ॥ १० ॥ जैसे कामी कामान्ध हो । न देखे नारी अवगुण । तिम जिन मत रागिया । विणगी मति जो निपुण ॥ सत्य ॥ ११ ॥ कुपन्थी धर्म न गृही सके । गुणन्ती सो ग्रह झट । अन्तर नेण खोली जोवो ।

२० ॥ रायजी आया निज महल में । धरता चित्त चमत्कार (धूर्त साधु ने श्रावक नों । खटके चित्त मझार ॥ सत्य ॥ २१ ॥ खेदाश्चर्य यह अति । ऊंच आत्म या आय । श्रद्धा विना रूले चउगते । सत्य श्री जिनवाय ॥ सत्य २२ ॥ यों भावे निर्मल भावना । धन्य विजय नृपाल । प्रत्यक्ष विपरीति जो दृढ रह्या । अमोल एक दश ढाल ॥ सत्य ॥ २३ ॥ दोहा ॥ चित में चिन्ते असुर ते । निष्फल हुवा मो उपाय । परपर कर सहू दाखव्या । तेह से स्थिर रह्या भाव ॥ १ ॥ अब चंनातु घर परे । न्हाखी शंकट पूर ॥ जोवुं फिर अढ किम रहा कुमति ये चिन्ती यो पुर ॥ २ ॥ सब मुगे सुता निशी विषे ॥ तव देव स्वप्न मझार । राय सचीव सामन्त को । कहे दिव रूप निजधार ॥ ३ ॥ शीघ्र सावध होवो सहू तुमे । जो इच्छो हो सुख ॥ तो वयण सत्य मानजो । तुम पुर पर आवे महा दुःख ॥ ४ ॥ नाग कुमार कोपित हुवा । करेगा विघन अपार ॥ प्राते पूजो नाग मूरती । तो वरतसी चेनचार ॥ ५ ॥ ॥ ढाल १२ वी ॥ श्रावक श्रीवीरना चम्पाना

नहीं जी । स्वप्न निमन्तिक वात ॥ होणहार मो होवसी । जो जिनजी देख्यो साक्षात ॥ धन्य ॥ ८ ॥ शुभा शुभ कर्म उपार्जिया । ते भोग्या ही छुटको होय । क्षीणक सुख ने कारणे । कोन मूर्ख सम्यक्त्व विगोय ॥ धन्य ॥ ९ ॥ देव फस्या कर्म फाम में ते । मानव ने कैमे छोडाय ॥ इम निश्चय अवलम्बिने । निश्चिन्त रह्या विजयराय ॥ धन्य ॥ १० ॥ सचीव सामान्त शाहजन मिली । करे नृप से नमी अरदास ॥ पधारो नाग पूजवा । ज्यों उपद्रव होवे नाश ॥ ध० ॥ ११ ॥ राय कहे कर्मोदय । नहीं देव टालण सामर्थ ॥ सम्यक्त्व रत्न गमाववो । न करूं मे यह अनर्थ ॥ ध० ॥ १२ ॥ दुःख सुख देव न दे सकेजी । कर्म संचित फल पाय ॥ यह अनुज्ञ शास्त्र की ते । येहीज वक्त काम आय ॥ धन्य ॥ १३ ॥ तत्वज्ञ धर्मी हुइ तुम । कैसी देवो मुझ यह सीख ॥ माल संभालो आपणो । ज्यों आगे न पावे तीख ॥ धन्य ॥ १५ ॥ इत्यादि सुन सहु चुप हुवाजी । निज २ स्थाने जाय ॥ तत्क्षीण राय भवन में । बहूत फणी घर प्रकट थाय ॥ धन्य ॥ १५ ॥

सामन्त मिल । समजावे बहू भांत ॥ सुज्ञ नृप अवसर लखी । स्वीकारो अवदात ॥ १ ॥ पूजा करो फणिन्द्र की । ज्यों होवे उपसर्ग दूर ॥ कारणे को दोषण नहीं । मानो कैण हजूर ॥ २ ॥ कान न धरे नृप विनंती । तब सहू अति अकुलाय ॥ रीसा कहे धिक हट यह । अवसर ओलखो नाय ॥ ३ ॥ समज्या समजावा किसो । कीजो ऊंडो विमास । निजात्म सज्जन तणो । हाथे मत करो नाश ॥ ४ ॥ महा अनर्थ होवे जह से । ते तजो समभी मन ॥ संसारार्थ साधने । करो नाग पूजन ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १३ वी ॥ जिनेश्वर मोहणी जीत्याजी ॥ यह ॥ राजेश्वर समकित धारी हो । के धन्य जीत्या उपसर्ग भारी हो ॥ टेर ॥ सचीव सज्जन आदि सहू मिली हो । समझाया बहू भांत ॥ नहीं मानी राजिन्द्रजी हो । होणहार सो थात ॥ राजे ॥ १ ॥ राज का रायन स्वप्न में जी । कहे सुर कोपित होय ॥ हंभी हटीला भूपति । क्यों अभिमान ने घर खोय ॥ राजे ॥ भूल्यो सम्यक्त्व भ्रम मे । मुझसे मिथ्यात्वी देव बणाय ॥ सच माने तूं माने नहीं । छक्यो ऋद्धि गर्व के

[illegible] दुर्लभ अत्यन्त ॥ राजे ॥ ११ ॥ अनन्त पुण्ये समकित मिली ।
[illegible] सुख काज ॥ इम निश्चय कर स्थिर रह्या । नहीं पूजा फणीन्द्र
[illegible] ॥ १२ ॥ दिनमोदय राय भवन में । एक दीर्घ सर्प प्रगटाय ॥ श्याम
[illegible] ॥ सर्व जनने भय उपजाय ॥ रा० ॥ १३ ॥ जेष्ट पुत्र को डंकीयो
[illegible] काल ॥ सज्जन परिजन मिल करी । कर रुदन आक्रन्द अम-
[illegible] ॥ कर धर्म कहे राय को । अब शीघ्र चलो महाराय ॥ पूजा
[illegible] नो अनर्थ मोटो थाय ॥ रा० ॥ १५ ॥ राय न माने कोइ
[illegible] डिंगो डक ॥ ते भी पड़ी मुरछाय के । रायजी तो बैठा नि-
[illegible] । आनि समझावे सहू मिली । भूप कान धरे नहीं बात ॥ तब
[illegible] नजी । तेही पड्यो मुरछान ॥ रा० ॥ १७ ॥ तीनों राणी
[illegible] डस्यो नाग क्रूर ॥ देउं पड्या मुरछाय ने । कुटुम्ब कोपित
[illegible] ॥१८॥ धिक्कारण लग्या रायने । राय कहे ममता रखो मन ॥

मोती माल कंठ में । बोले विश्वासु बोल ॥ २ ॥ कावड खन्ध है नाग की । पुंगी मधुरी बजाय ॥ भुजंग रमे तस तन परे । प्रत्यक्ष परिचय देखाय ॥ ३ ॥ दर्श देख गारुडी को । संतोषाणा सब मन ॥ यह तो निश्चय टाल से । आपणा सर्व विघन ॥ ४ ॥ * ॥ ढाल १४ वी ॥ विणजारारे ॥ यह० ॥ सुणो श्रोता हो ॥ सर्वजन खुशी अति होय । सत्कार कियो गारुडी तणो ॥ सुणो श्रोता हो ॥ सुणो श्रोता हो ॥ आवो ऊग महा भाग्य । तुम दीठा हमने आनन्द घणो ॥ सुणो ॥ १ ॥ सुणो ॥ कृपा करी इणवार । करामात दिखावीये ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ उतारो छेऊं को जेहर । हमारी चिन्ता गमावीय ॥ सुणो ॥ २ ॥ सुणो ॥ करस्यां खुशी तुम तांय । मांग सो सो देस्यां सही ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ उपकार होसी अपार । जीवित लगे भूलस्यां नहीं ॥ सुणो ॥ ३ ॥ सुणो भाइ हो । गारूडी छेऊं ने देख । कहे यह विप विषम अति ॥ सुणो भाइ हो । सुणो भाइ हो । असाध्य सो दिखे यह । तो भी यतांउ मुझ शक्ति ॥ सुणो ४ ॥ सुणो ॥ मैं जाणूं अनेक उपचार । निर्विप निश्चय करस्यूं सही ॥ सुणो ॥

गारुडी करी नमस्कार । अत्यन्त नरमी अरजी करे ॥ सुणो ॥ नाग रायाहो ॥
तुम छो सामर्थ देव । मोटा मोही क्षमा धरे ॥ नाग० ॥ ११ ॥ नाग ॥ जो नमे
गनहगार आय । तो अपराध भूले सवी ॥ नाग० ॥ जेष्ट तणी यह हे रीत । तेही
आप माग अबे ॥ ना० ॥ १२ ॥ नाग० ॥ फरमावो आप हुकम । सोही करावुं
सो मन ॥ नाग० ॥ हिवे तजो सब रोस । वारम्वार सो इम भने ॥ सुणो ॥ १३ ॥
गारु० ॥ भुवन नम्या सब जगत् । यह शुष्क काष्ट ज्यों नमे नहीं ॥ गारु० ॥
गारु० ॥ जिनदेव ने करुं नमस्कार । तो सब दुःख हरुं सही ॥ गारु० ॥ १४ ॥
स्वामी सार ॥ गारुडी कहे खुश होय । नमन करो नाग रायने ॥ सुणो रायारे
॥ सुणो० ॥ वाद हुइ सब खेर । अबी दुःख जावे विरलायने ॥ सुणो रा० ॥
१५ ॥ गारुडी हो ॥ नृप कहे सुण मुझ वात । उठ जा तूं थारे घरे ॥ गारु० ॥
गारु० ॥ जो एसा अभीमानी देव । विना काम अनर्थ करे ॥ गारु० ॥ १६ ॥
गारु० ॥ येही कुदेव लक्षण । तास वंदन में नहीं करुं ॥ नहीं इण लोक की आस ।

प्रभाइ में रेलो ॥ अहो सुणो श्रोताजी । मुर पाम्यो
नहीं अनुमें द्रढ नाइ में रेलो ॥ १६ ॥ अहो ॥ द्रढ
मर्हो सम्यक्त्व धर्म आराधणेलो ॥ अहो ॥ यह हुइ
अमोलक मुर वनो मंत्र नाधवारे लो ॥ २० ॥ ❀ ॥
सुणो विनय ना वचन ॥ चीडायो अति चित में ।
नृपति भोलीया । कदाग्रही दयाहीन ॥ निज हिता
प्रवीन ॥ २ ॥ मोटो मध्य नव्य ताहारे । होतो दीसे
बाजे चाल पंपाल ॥ ३ ॥ रांगी रेल वचनने । जो
बुद्धि हुवा । महा पीडा पावंत ॥ ४ ॥ तेमही तुम्हे
इम वड वडनो गाल । छोड चल्यो
री ॥ मुम्ह विलनडो अवधारो ॥ यह ॥
राणी अवनइ प्राणान्त ॥ ८२ ॥ नारकी जाणी

मम ध्यानो नशो बन्धी जकडी । कीनो सर्व अंग डंस ॥ और अनेक लघु सर्प
आट । चोटचो नृप अवगंश ॥ देखो ॥ ९ ॥ चूंट २ नृप तन ने तोडी । करे रक्त
मांस अहार ॥ मेरु ज्यों द्रढ ध्यानस्थ नृप हो । स्मरण करे नवकार ॥ १० ॥ महा
विष पसरा सब ही तन में । दवाग्नि सा करूर ॥ जाने वज्र प्रहार करे है । को-
ध्या मचाय के असुर ॥ देखो ॥ ११ ॥ तीक्षण शस्त्र अरी तन काटे । त्यों फटने
लगा तन ॥ महा भयानक भोगे जो जाने । के जाने भगवन ॥ देखो ॥ १२ ॥
थर २ थर तन सब कम्पे । तरर २ छूटे रक्त ॥ तड २ सब नाडी टूटे । जेहर चढा
अति शक्त ॥ देखो ॥ १३ ॥ मस्तक को चाले जए नागणो । देखो दुष्ट के हवाल ॥
स्वजन परजन आदि जो रचना । दिग मुढ हुवे अमराल ॥ देखो ॥ १४ ॥ अति
वदन में मुखाट पडे । पाडे भयानक चीस ॥ देखे सो अति त्रासित होवे । देव
कांप रया जगीस ॥ देखो ॥ १५ ॥ हरीत वदन दशन कृष्ण भये । तडफे जल
बिन मीन ॥ साक्षात नरकसी वेदन । अनुभवे जाणी ते दिन ॥ देखो ॥ १६ ॥

[illegible] समर्यां । अहो सत्य कथन भगवन्त । इससे अनन्त गुणी
[illegible] चार अनन्त ॥ देखो ॥ १७ ॥ इन विचार में मन रमावे ।
[illegible] ॥ गर्भी पूत्रों कहीं मृत्यू पाये । करो ले जा संस्कार
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] अंग पर चार के जैसे । वीता नृप मन परीताप ॥
[illegible] वर्नी मे । करे नवकार को जाप ॥ देखो ॥ १९॥ ज्यों २
[illegible] भाव निर्मल ॥ अधिक २ अस्तिक जिनजी के । वचन
[illegible] ॥ देखो ॥ २०॥ महा संकट में महा स्थिर रहे । धन्य विजय नृपाल ॥
[illegible] आत्म । यह षोडशमी ढाल ॥ देखो ॥ २१ ॥ ❀ ॥
[illegible] गारुडी । धुणावतो निज सीश ॥ विजयराय ढिग
[illegible] जगीस त्रासित मुद्रा से कहे । अरे अब तो जरा
[illegible] नाग देव ने । क्यों गमावे प्रान ॥ २ ॥ अति दुर्लभ
[illegible] । अपूर्व वक्त यह पाय ॥ ले लावो दीर्घ आयु वर ।

... जाणूं ॥ इसमें भी कभी होय अनन्त गुणी । तो
... ॥ १३ ॥ दे माम तो काल चीतमी । म्हारे मने
... दुःख भोगवूं । तो ही ने छूटे धर्म को नातो ॥
... दुःख वृद्धि पावे । त्यों ज्यादा सुखकारक जाणूं ॥
... किंचित वेदन आणूं ॥ देखो ॥ १५ ॥ ज्यों
... हीं सुख अधिको पास्यूं । योंहि जो सर्व कर्म
... जास्यूं ॥ देखो ॥ १६ ॥ इनमें अनन्त गुण ॥
... नरक मांही ॥ नर्क में दुःख अनन्त गुण अधिका ।
... ॥ देखो ॥ १७ ॥ सम्यक्त्व भेड़ । नरक निगोद के भव
... निर्मले किंचित दुःख सही । महा दुःख मेटी
... ॥ देखो ॥ १८ ॥ परवश अनन्त दुःख सहे जहां निर्जरा हुई
... अवसर यह सुभ्भारोप कोई ने जरा मत देशो॥ देखो

[illegible] नाद करे जिनराय को । दुंदवी रवो बजाइजी ॥ धन्य ॥ १ ॥
[illegible] शरद कर्या । सुगंधी जल वर्षाइ ॥ रत्नाभूषण वस्त्र अत्युत्तम ।
[illegible] आइजी ॥ धन्य ॥ २ ॥ अनेक रूपकर विचित्र देव का । गगन
[illegible] प्रकार जिनय गुण गावे । वाजित्र विविध बजाइजी ॥
[illegible] मत्र अहो २ इडना । जे जिनराय में पाइ ॥ ते नहीं पावे
[illegible] जिनय तान भाइजी ॥ धन्य ॥ ४ ॥ कोडोंरूप कर कोडों
[illegible] गुण न कहाही ॥ आज पवित्र होवुं चरण भेटी । यों कही
[illegible] ॥ धन्य ॥ ५ ॥ महा दिव्य रूप वस्त्र भूषणधर । मुक्त मुगट पद
[illegible] चमो देव मुझ । महा अपराध कीधाइजी ॥ धन्य ॥ ६ ॥
[illegible] सन्मुख ऊभो । सत्य विरतन्त दर्शाइ ॥ मैं परमंस्या किसी कर
[illegible] जिन सराइहो ॥ धन्य ॥ ७ ॥ प्रथम स्वर्गपति जिन वन्दन गये
[illegible] मांड ॥ सीमन्धर से इन्द्र प्रश्न किया । को सम्यक्ती भरत

[illegible] नृप प्रत्यक्ष देखाइ ॥ प्रभाण जन्म जैन कुल धर्मने । जे जगे तुम
[illegible] ॥ धन्य ॥ १६ ॥ में महादुष्ट कुदेव दयाहीन । जुलम अति कीयाइ ॥
[illegible] धर्मात्म ने । संताप्या कुटुम्ब महाइजी ॥ धन्य ॥ १७ ॥ पण तुम
[illegible] मे । द्वेष जरा न लायाइ ॥ ऐसी द्रढता किंचित मुनि में । तो
[illegible] हो ॥ धन्य ॥ १८ ॥ अहो नरेन्द्र धर्मेन्द्र कृपालु । मुझ रंक
[illegible] खमो २ यह सर्व गुन्हाने । अब फिर करूंगा नाहीं हो ॥ धन्य ॥
[illegible] क्षमा किंकर पर । दो माफी दान महाही ॥ एह उपकार न
[illegible] करो महाराइहो ॥ धन्य ॥ २० ॥ मुझ लायक चाकरी फर-
[illegible] मुझ तांइ ॥ ढाल अष्टदश माहीं अमोलक । सानन्दाश्चर्य वर
[illegible] ॥ धन्य ॥ २१ ॥ ॐ ॥ दोहा ॥ संतुष्टी नृप कहे देव को । तुम अपराध
न [illegible] ॥ [illegible] भोगव्या । न करो कोइ विचार ॥ १ ॥ सुर तरु चि-
न्तामणी [illegible] । अधिक जिनेश्वर धर्म ॥ सो फल्यों मुझ हृदय विषे । इसमे न

[illegible] र प्रति मोह घटाने। देइ पुत्र को राज । सर्व प्रपंच को छोडी करी

[illegible] अगाज ॥ श्रावक का व्रत धार्ह्यां धाम्ह । त्यों सुधरे कुछ काज

[illegible] प्रात नया पोपा पारी ने । चारो अहार निपजवाय । भाइ पुत्रना

[illegible] परिवार जिमाय । अति पडम्बर नन्दकुमर ने राज तख्त

[illegible] ॥ ४ ॥ फिर लेइ सबै की सो आज्ञा । धर्म उपकरण लेये ।

[illegible] धर्म करना रेय । नर जर न्यार शास्त्र प्रमाणे । करे नित्य

[illegible] ॥ ५ ॥ जे निपजे निज कुटुम्ब के घर में । उनके निमित्त में

[illegible] नहीं जाइ । मांगे थोडे जे वार । ज्ञान ध्यान में म-

[illegible] न करे लगाग्हो ॥ सुणो ॥ ६ ॥ एकदा सन्ध्या समय त्रि-

[illegible] पातकन कर । तीनों मनोर्थ चिन्तवना ने दीना स्थिर ध्यान

[illegible] चरचा ने वारे एहा ग्रह नरजी ॥ सुणो ॥ ७ ॥ अहो प्रभु

[illegible] आप मरा भव सागर । प्रकाम्यो जैन पंथ । विना कष्ट शुद्ध भाव आराधे ।

अपे शिव सुख पर्म । तप जप किरिया की न जरूरत धरे द्रढ एकात्मा हो ॥
तुम ॥ अष्टादश दोषण रहित सो । अरिहंत देव कहाय। शुद्धाचारी निर्ममत्व धरी
निग्रन्थ गुरु गिनाय । सर्व जीवों को एकान्त सुखदाई । धर्म जिनाज्ञा मांय हो ।
॥ सुणो ॥ ९ ॥ यह व्यवहारी धर्म तिहुं । तत्व को भव्य जीवो आराधे त्रिशल्य
त्रिकरण से त्यागे । जाव जैन मत लाधे । यथा शक्ति बास किरिया निपाइ ।
आत्मार्थ को साधे हो ॥ तुम ॥ १० ॥ निजात्म निज गुण में तल्ली न हो । सो
ही निश्चय देव जानो । आत्मा ज्ञानानन्दे रमण करे । गुरु तेही पहछानो । पर
परिणति तज निज परिति से । रमे सोही धर्म मानो जी ॥ तुम ॥११॥ यह निश्च-
यिक नीनो तत्व श्रद्धि । यथा शक्ति में पाल्या । परन्तु ममत्व शरीर की न घटी
नासे संयम न धार्या । धिकार होवो मेरे प्रमाद को । भव भ्रमण नहीं टाल्या हो
॥ तुम ॥ १२ अनित्य पदार्थ तन अशुचि । कुटम्ब स्वार्थी सारा । शरणदाता
कोइ होवे नाहीं । दुःख निवारण हारा ॥ पुद्गलानन्दी होकर आत्मा अपना भान

[illegible] ॥ तुम ॥ १३ ॥ इत्यादि चिन्तवन करत अप्रमत स्थान पाई ॥ आगे [illegible] श्रेणि पाइजी । कषाय लाय बुझाई ॥ क्षीण मोह को कियो विजय जी । [illegible] ध्यान में समाईयाजी ॥ तुम ॥ १४ ॥ घोर अन्धारी रात्री मांइ । अनन्त भानु [illegible] मांइ ॥ केवलज्ञान और केवल दर्शन । विजय आत्मे प्रकटाइ । जो वस्तु महा [illegible] में पावे । सो सहजे हाथ आइजी ॥ तुम ॥ १५ ॥ पिता से पुत्र यों अधिक [illegible] । सो संयम ले केवल पाय । इनने तो गृहस्थाश्रम माही । ध्यान में केवल कमाया । यों पुण्य की उत्कृष्टता देखो । ध्यान चली कमा भाया हो ॥ तुम ॥ १६ साधुलिंग सामणपति देवता तत्क्षीण लाइ दीना । गृही वेस परिहर विजयजी । ताहि धारन कीना । ढाल उन्नीसवी कही अमोलक विजयजी चिन्तन लीनाजी ॥ तुम ॥ १७ ॐ दोहा ॥ केवल महीमा करन को । सुरगण अति उमगाय । गगने बाजे देव दुंदुभी । जय २ शब्द गजाय ॥ १ ॥ पुरजन कौतुक देखके । अति आश्चर्य मन लाय । कौन पाये केवल इहां । दर्शने

॥ आये पोषध शाल में । दिजय आदि वर देख । जाने यही
न्न गम घाय ॥ २ ॥ आये पोषध शाल में । दिजय आदि वर देख । जाने यही
[illegible] । पायें हर्ष विशेष ॥ ३ ॥ दिन कर भी तब प्रगटा । मिले सज्जन स-
[illegible] याय । पुरजन आदि परिषदा । बहुत ही तहां भराय ॥ ४ ॥ जग तारन जिन
[illegible] । धर्म देशना फरमाय । सो सुणियो श्रोता सवी । लेजो आतमे रमाय ॥
[illegible] ॥ ❋ गान २० मी ॥ मे मुख देख्यो गोडी पारस को ॥ यह ॥ चेतो चतुर
[illegible] धारो । धर्म मे खेवा पारजी ॥ टेर ॥ चार अंग अति दुर्लभ जगमें
[illegible] नर यवनारजी ॥ चे० ॥ १ ॥ नव घाटी में अनन्त परावर्तन । किया जन्म
[illegible] धारजी ॥ चेतो ॥ २ ॥ अनन्त पुण्ये नर हुवा । पिन सूत्र सुणवो दुष्कर
[illegible] जी ॥ चेतो ॥ ३ ॥ मिथ्या वाणी खोटी कहानी । सुण अनंतवारजी ॥ चेतो
॥ ८ ॥ श्रीजिनवाणी सुणके श्रद्धे । सोही सम्यक्त्व उचारजी ॥ चेतो ॥ ५ ॥ कुश्रद्धा और
[illegible] मिथ्या शल्य सो भमा अनन्त संसार जी ॥ चेतो ॥ ६ ॥ चौथा बोल श्रद्ध
[illegible] । यथा शक्त्यानुसार जी ॥ चेतो ॥ ७ ॥ ज्ञान सहित चारित्र पाले

तो । हो जावे खेवा पार जी ॥ चेतो ॥ ८ ॥ क्षमा मुक्ति अर्ज्जु ने मार्दव । लाघव सत्य संयम भार जी ॥ चे० ॥ ९ ॥ तप ज्ञान ब्रह्मचर्य धारे तो । निश्चय खेवा पार जी ॥ चे० ॥ १० ॥ ज्ञान दर्शन चरन त्रय रत्न यह । करे आत्म निस्तार जी ॥ चे० ॥ ११ ॥ आत्मिक गुण तज प्रणति रमणता । सोही रुलावनहार जी ॥ चे० ॥ १२ ॥ ममत्व बन्धे जो बन्धे जकडी । वो कैसे छुटकार जी ॥ चे० ॥ १३ ॥ जो छेद अरोहीत मच्छ पर । तस खुल्ला शिव द्वार जी ॥ चेतो० ॥ १४ ॥ यह तन प्रत्यक्ष अशुचि का कूंडा । धर्म करे तो होवे उद्धार जी ॥ चेतो ॥ १५ ॥ असार मे सार निकले सो निकालो । जो तुम हो हुशार जी ॥ चे० ॥ १६ ॥ यही तन है मोक्ष का कारण । कार्य हेतु सो लेवो धार जी ॥ चे० ॥ १७ ॥ अपूर्व और महा लाभ दाता । येह अवसर श्रेयकार जी ॥ चेतो ॥ १८ ॥ अलभ्य लाभ लभ्य हुवो लूंटो । मरणो अभी ही विचार जी ॥ चेतो ॥ १९ ॥ गइ वक्त पुन आवे न किमपि, खोया सोच अपार जी ॥ [illegible]

जी । एक लक्ष वर्ष आयु पार ॥ अनसनी हो द्रढासनी । किया अघातिक कर्म क्षार जी ॥ पधारे मोक्ष मझार जी । हुवे अजरामर अविकार जी ॥ अनन्त अक्षय सुख लीन सार जी । कृत कृतार्थता यहीं धार जी ॥ श्री ॥ ८ ॥ जय पुण्य वृद्धि हुवा जी । पहोंता सर्वार्थसिद्ध मांय ॥ एकावतारी उत्कृष्ट सुखी । महा विदेह में मोक्ष सिधाय जो ॥ और सबी स्वर्ग जाय जी । अतुल्य महा सुख भुक्ताय जी ॥ थोडा ही भवन्तर मांय जी । पामसी शिव सुख सदाय जी ॥ श्री ॥ ९ ॥ आत्म मेदनी विशुद्ध करी । तामे विनय बीज बोवाय ॥ शील कोट से घेर कर । विविध ज्ञान बगीचा बनाय जी ॥ महाव्रत वाडी फूलाय जी । समता रूप होइ सुखदाय जी ॥ क्षमा रूप नीर भराय जी । वैराग्य रंग दे घोलाय जी ॥ श्री ॥ १० ॥ सद्‌बोध पिचकारी भर करी । सुमति गुप्ति सहेली संग ॥ सझाय वाजित्र झणकार में । हुवे अनहद नाद में चंगजी । खेले उत्सव विजय सुरंगजी पाये मो सुख अभंगजी । वनो यही आत्म प्रसंगजी ॥ श्री ॥ ११ ॥ ज्यों विजय जी

जी। होवे सर्व लाभ दातारजी। येही मास पदार्थ सारजी ॥ श्री ॥ १५ ॥ श्रीवीर निर्वाण संवत्सरा वीते चौवीस से सत्तवीस। विक्रम उन्नीससो अठावने देश दक्षिण सुपुर्नाश जी ॥ घोड नदी ग्राम धर्मांधीश जी ॥ रहे चतुर मांस सु जगीम जी। शुभ विजय दशमी के दीस जी। यह पूर्ण हुइ मुझ जगीस जी ॥ श्री ॥ १६ ॥ सती शिरोमणी महासती जी। श्री रामकवर जी जान। तस अनुज्ञ एरच्यो। यह सम्यक्त्वोत्सव मण्ड जी ॥ सम्यक्त्व सब गुणों की खान जी। चिन्तामणी काम कुंभ समान जी ॥ पूरे इच्छा देइ इष्ट दान जी। जय जय सदा अमोल धर्मवान जी ॥ श्री समकित उत्सव सुखदा सदा ॥ १७ ॥ ❀ ॥

॥ कळश ॥ हरीगीत छन्द ॥

ॐ नमो अर्हं सिध सद्गू। सर्वज्ञ प्रणित जैन धर्म जी ॥
चारों शरण येह सदा मुझने। वांछित सुख देवे परम जी ॥